समर्पण.

"[illegible]
[illegible]" १

श्रीमान् छतां निरभिमान, विद्वान् छतां विनयसंपन्न, युरोपादि दूर देशोमां प्रवास कर्या छतां [illegible] देशाभिमानी, [illegible] छतां सादा अने [illegible], परोपकारी छतां निःस्वार्थ, अने भाग्यवान छतां निर्दंभ,—एवा अनेक गुणरत्नाकर [illegible]

शेठ दामोदरदास गोवर्धनदास सुखडवाळा—

जे उदार [illegible] छु. ज्यारे मारा मनमां, [illegible] हर्ष अने संतोष माटे तेमनो उपकार [illegible] छु. कारण के उपला दोहामां दर्शावेला अनेक देवोनी सुभोगी ते कुलदीपक, देवदीपक, अथवा [illegible] निवडला छे. एमना [illegible] कारणनुं [illegible] केटलुं छे, के एक [illegible] कविना शब्दोमां कहुं तो—

(कवित)

दिया है [illegible],
[illegible] है;
[illegible],
[illegible] है;
[illegible],
[illegible] है;
[illegible],
[illegible] है. १

एवां अनेक उपयुक्त वचनो जेमना सद्वर्तनसूचक सुप्रसिद्ध छे. तेमने ज आ "अध्यात्म—भजनमाला" नामे उत्तम पुस्तक, म्हारा पोताना ज हर्ष अने संतोषना उद्गार [illegible] प्रेमपूर्वक समर्पण करुं छुं.

कहानजी धर्मसिंह.

प्रस्तावना.

[illegible]

[illegible]

[illegible] परंतु [illegible]

[illegible] ?

[illegible]

संसारमय तुच्छ शृंगारवाळां, अधोगति करनारां तथा मन-इंद्रियोने व्याकुळ बनावनारां महामायानां भजनोमांथी कांइक निवृत्ति थई, सन्मार्गतरफ चित्तादिकनी शांतिपूर्वक प्रवृत्ति थाय, ए हेतुथी तेवा संत पुरुषोनां वचनो, के जे विविध प्रकारना राग-तालमां गोठवायलां छे, तेनो आ सूक्ष्म संग्रह बनते प्रयत्ने एकत्र करवामां आव्यो छे. अधिकारीजनो आ ग्रन्थ वांची-विचारी, अंतःकरणमां रहेला कामादिक षड्रिपुओना सहाने दूर करवा प्रयत्न करशे, एवी आशा छे.

आ ग्रन्थमांह केटलांक भजनो मोकलवामां काशीवासी परम पूज्य भगवद्भजनानंद श्रीमन्त महाराजाथी हरिशंकरवारीए, विद्वद्रत्न महाशय ब्रह्मचारीश्री नृसिंह शर्माए, तथा वढाना मुख्य कार्यभारी साहेब श्रीयुत सुज्ञ लीलाधरदास हरखचंद वगेरे अमूल्य मदद आपी. तेमाटे हुं तेमनो अति उपकृत छुं; तेमज पोरबंदरनिवासी रा. जूठा पुंजा हीराणी वगेरेए लीधेला श्रममाटे तेमनी अत्र नोंध करवी उचित समजुं छुं.

मुंबई, मारवाडी, चैत्र सुदि १ शनी, शाके १८१९.

कहानजी धर्मसिंह.

अनुक्रमणिका.

॥ ॐ ॥

अध्यात्म-भजनमाला.

ब्रह्मदेव?

पद १.

साधु मिल आये है, हिलमिल आज हैः करिये दोसी. दोसी. (टेक.)
मने मारीके मदंग करिये, लहिर आत्मा धारिये,
तार बतीस धारण करी, बोलोका रागोमा गाइये. साधु० १
...पुष कांयी न पड़े बाजना. मर्यादा मर्यादा धारिये,
...ल मायां में दनको धरी, अपनापु में धरिये. साधु० २
...मोसमां में मदपा, वैराग्यपो करिये,
...पारे सद्गुरु मले, मेरा धोका न धरिये. साधु० ३
...रमां कमाव बहारकीके, मिला अमोल करिये,
...धरिये नाम बोरिये, मोहताके मारीने मरिये. साधु० ४
...सा धरा धरि पर धरिये, पारजनता न हरिये,
...तंब कहाने पका करी, छूटे पेड फरिये. साधु० ५
...वर्णेकी सांभयो भाषियो, ज्योनो भाता न करिये,
...मूलमायापाछे अंग अबंधपो, हिजमो भेज मिलावीये. साधु० ६

अर्जुनदास.

पद १.

...पंचनाटक रस पिया. योगीश्वर पंचनाटक रस पिया। (टेक.)
...पिया अमीरस अमर भया, त्रिकुटी नाकिया किया योगीश्वर० १
...सूधा तनमें आता पायमर्दा, है हमरतिर किया,
...भ्रम मगन भया वडी गुमानी, ज्यारे राम रोमरम रमा. योगीश्वर० २
...काशि कामनकी उल्टा पवना. हेरा हिरदपर दिया,
...सट चक्र भेदीने बहिया, अब घर गगनमें किया. योगीश्वर० ३

अधर तख्तपर सद्गुरु मेरा, सुरत सुरतने लिया;
नूर निरंजन नजरे निरख्या, न्यारे दरस देदार भया. योगेश्वर०७
मणी अगरपर आसन कीने, भजन करे भय गया;
दास अरजण मत जीवणचरणे, रामरस भरी पिया. योगेश्वर०८

११ १.

ज्ञानघटा झुक आई, अनुभव प्रमोरस झारा;
पीयत नींद उडाई, अवधूत ज्ञानघटा झुक आई. (टेक.)
ध्यानरूपी धनुष्यबाण मार्गी, रवि ग्रह सुरूये देखाई;
प्रेमधारकी बरखन लागी, तो प्रेमनदी पूर चलाई.

अवधूत० १

उमीकी अरणा करी, धरमका धोरी, दया देगाळ जोडाई;
अनंत नामकेरी ओरणी कीनी, सत्य शब्द बीज बोवाई.

अवधूत० २

गेनर पायतु त्रिवणीके तीरे सुरता [illegible] न आई;
कुबुद्धि [illegible] सब [illegible] [illegible] गुरगम तोड बताई.

अवधूत० ३

भजन [illegible] [illegible] [illegible] पुरानी [illegible] [illegible] [illegible];
मूल [illegible] [illegible] अनंत जनमना [illegible] भावी मांहे लाई.

अवधूत० ४

अनुभवकी [illegible] बिना सुखमपनम सब पाई.
दास [illegible] गुरु [illegible] [illegible] [illegible] ना पुरणारे गोवाई.

अवधूत० ५

भदपुन

११ ([illegible])

[illegible] (टेक.)
[illegible] १
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible] ३

ये मजोई करके अफसर, ये आपसेंत ये केसे ;
हातसें अपने ये अपनों, गम हमारे कर गये.-ये कहां० ४
रेह गया ओ शाफेर, अतियत आखर दोनों गये ;
जो भलाई कर गये, और जो बुराई कर गये.-ये कहां० ५

पद ५. (गजल.)

मफदुर नहि मुसकों तजलीके बयोंका ; (टेक.)
जोयुं ममये शराणा हो अगर तारफ जुबांका.-मफदुर० १
परदेकुं ताह सुनके, दरे दिलें उठा दिये ;
खुलता है अबी, पलमें तलेदामात जेहांका.-मफदुर० २
इस गुलशने हस्तीमें, अजब दीद है लेकीन ;
जब खदाम खुली गुलकी, तो मोदाम है गेजांका.-मफदुर० ३
शोदा जो कभु गोदामें, हौमलको सुनें नू ;
मजनुन यहां हय जरदा, दिलके फेगांका.-मफदुर० ४
हस्तोसे आदम तक नफसें, चंदकी यह राह ;
दुनियासें गुजरनां सफर, ऐसा है फांहांका.-मफदुर० ५

पद ६. (गजल.)

शादकेमें तेरे जुल्फोंके हर तार तारके, (टेक.)
दस तारे गुले अनार कथा बुट्टेदारके. शादके० १
बुल बुलने यकते केदके, रो रोके येतुं कहा,
शायाद धामते मेरे, परवर दिगारके. शादके० २
बेन्तोमे तो सही पर, इतनाभी फांशीओ,
दीजोये हानोहान, फोशीनो बाहारके. शादके० ३
दरीआ तुं चल दोनायी, मैं मंनजल कराग हुं,
हम आने हारे दूरके, फंई आरपारके. शादके० ४
ए वतन हय हमारा, तुम पुछतेओ केया,
हम रहेने वाले हय वसु, वागो बाहारके. शादके० ५
अफशुन तुं शाद रहीयो, जमांनां करेगा क्या,
हम हैं गुलाम उस दा, ऐदुल दुल सवारके. शादके० ६

सुनने ह शाकीप मय कहाथा दिवाला नीकला;
चांनली हवा वसमने ग्वाली कबु पेसी मो न थी. येकली० ५
कीम परी आसने सिमेंम उतारा हय परी;
यार तेरी प निराली, कबु पेसी तो न थी. येकली० ६
खून कौमका कीया तुने दोनम प जाम पना;
आशोमां मेंपे ये लाली कबु पेसी तो न थी. येकली० ७
खुब मुदाकुं दिया काथे दुनियान करेप;
छोडके चाहानेवाली कबु पेसी मो न थी. येकली० ८

पद १० (गजल.)

गुजरते नजमें हर येक दम गया सो फिर ना फिरा;
य तनकुं छोडके हाकम गया सो फिर ना फिरा. गुजरते० १
(साखी)–आवन जावन कर गये, और लग गये बरस पचास;
तनका हुवा पिंजरा, और अबतक गई न आश.
अमल घटानेकुं नाजम गया सो फिर नां फिरा. (ध्रु.)
हुवा हय नाम नीशां जगमें इनसानका;
जहांनसें आदम गया सो फिर नां फिरा. गुजरते० २
(साखी)–झरी लगी बरसातसें, और घोमाभा दिन आय;
बादल गरजे धुंममें, और बीजली चमक बनाय.
हमारे दोलतका आलम गया सो फिर नां फिरा. (ध्रु.)
हुई हय हवाके तरफ जिसके तेह तलब यारो;
हमारे पेटलुमें हमदम, गया सो फिर नां फिरा. गुजरते० ३
(साखी)–पंछी पहोंचा देसकुं, और हमें दिया परदेश,
गाव लगाउं सिर पांउकुं, और लेउं जोगनका वेश.
बराये जंगके मोहकंम गया सो फिर नां फिरा. (ध्रु.)
सफरमें आने लगे सब मुसाफर अपने घेर;
हमारे रे आशका मेहरम गया सो फिर नां फिरा. गुज० ४
(साखी)–दुनिया हय दो रोजकी, इसपर न कर गुमान;
सो बरस या साथकी, आवे मोत निदान.
फत्ताके किल्लेपर हासम गयासो फिर नां फिरा. (ध्रु.)
रहाई नाम सिकंदरके बादशा नां रहे;
जहांन फानीमें दारा जम गया सो फिर नां फिरा. गुज० ५

कमाल.

पद १७.

है कोई ऐसा मुरशद मौला, रगमें खुदा बतावेगा.
लख चौराशी फेरा चुकाके, जनम मरनकुं तोरेगा.
है कोई० (टेक.)
पंच तनूके दरगा भीतर, दिल तकियेकुं बिछावेगा;
मन मकांमें मुजे बिठाके, बिसमिल्ला कलमा पढावेगा. है कोई. १
आरशा कुरशा दिदार खोरा, महेरम मेरा खुलावेगा,
उसके अंदर मुजे लिजाके, नमाजके स्थान दिखावेगा० है कोई० २
जोबनका जुरुता घोटके, ऐसा प्याला पिलावेगा;
मेरा चेरा मुजे बताके, नूर नयोंमें भुलावेगा. है कोई० ३
मिहे मगमद रसुलिल्ला, अल्लक नाम निशा चडावेगा;
चौदा तख्तके अंदर सुलाके भेरे न झुल्ला झुलावेगा. है कोई० ४
बेचुनकुं बेल गुनकु, बेनुभाकु दिखावेगा.
बेनमनकुं बेभागीकु, आपन आलोम मिलावेगा. है कोई० ५
कहे कमाल कबीरका बालका, तनडी किताब सुनावेगा;
बाबन हरफका मायना बताके, भेद भरमकु मिटावेगा. है कोई० ६

कबीर.

पद १८.

नाम हमेरा अमर तारा, सुरता हमेरी दोरी. गुरुजी सुरता०
माल मजीला अपरं पारा, काम क्रोधनी चोरी,
उममें नहीं हरंगारं गुरुका भजन करंगाजी. (टेक.)
सब दुनिआं नरुथोंके चाकर, मैं सरकारी काजी;
काल क्रोधने गरदन मारी, मारा माहे याने रावुं राजी. उममें० १.
पांच पचीशकुं चाकर राखी, गढपर फौज चडाउंगा;
ज्ञानतो चोगासें राखुं, जमकुं मार धरुंगा. उममें० २
जम जनममें आरसी पावे, जम हमेरा चेला;
कहत कबीर सुनो भाई साधु, सब घट हंसा मेरा. उममें० ३

पद ९.

[illegible]
[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible] सांवरे० १
[illegible]
[illegible] सांवरे० २
[illegible]
[illegible] सांवरे० ३
[illegible]
[illegible] सांवरे० ४
[illegible] सांवरे० ५
[illegible]
[illegible] सांवरे० ६
[illegible]
[illegible] सांवरे० ७
[illegible]
[illegible] सांवरे० ८
[illegible]
[illegible] सांवरे० ९

पद १०.

[illegible]
[illegible] (टेक)
[illegible]
[illegible] १
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible] ३

पद ११

[illegible]
[illegible] १

घायल घूम रहा मरनेकी, लागी चोट मन प्रेम सोहागी.—
प्रेम०

प्रेमकेरा बाण शब्द केरा भलका, मनमें घासीकु मारी किया
—कटका.— प्रेम०

कहत कबीरा तन मुवा मन मांहे, फेर जनमका संशय नांही.
प्रेम०

पद १२.

लगी लगी चोट भजन केरी मनमें, घायल थईने पोकारुं; (टेक)
जमी आसमानसें दूर हे डेरा, यापर हरिका महेरा.
लगी०

देव जाउं तो पथ्थर केरी पूजा, तीरथ जाउं तो जल पानी;
जल बिच कमल कमल बिच कलियां, यापर भमर लोभाना.
लगी०

घाट अगाध हुकमपर चलनां, संग कोई नहि तेरा;
कहत कबीरा सुनो मेरा साधु, एक दिन जंगल होयगा डेरा.
लगी०

पद. १३.

लाय घरो घर लागी, संतो क्यों उगरिये भागी; (टेक)
पाप हतुं ते पृथ्वीमां परवर्युं, धरनी धंधो जागी,
हिंदु मुसलमान थया हालक डालक, ने द्या घर मेलो त्यागी
संतो०

ईंद्र डोल्या ईंद्रासन डोल्यां, लाय गेबनी लागी;
ब्रह्मानंद नव माता डोल्या, रहेर हवानी लागी. संतो०
गुरु थी जलिया चेला थी जलिया, जलिया महा त्यागी;
चार पंथ षट दर्शन जलिया, रागी ने वेरागी. संतो०
त्रणे भुवनमां ज्वाला पडियो, संतन डोल रसागी;
कहत कबीरा सुनो भाई साधु, आतमदर्शन अनुरागी.
संतो०

पद १४.

साधोरे मांहेलो मन मोती, हुंतो हालुं मंदर दिवडो जोती.
साधोरे० (टेक)

[illegible]
[illegible] [illegible] १
[illegible]
[illegible] [illegible] २
[illegible]
[illegible] [illegible] ३
[illegible]
[illegible] [illegible] ४

पद १०.

निर्गुण [illegible]
[illegible] निर्गुण० (टेक)
प्रथम सतगुरु [illegible]
[illegible] निर्गुण० १
[illegible]
[illegible] निर्गुण० २
[illegible]
[illegible] निर्गुण० ३
[illegible]
साहेब कबीर [illegible] निर्गुण० ४

पद ११.

अवधूत [illegible] अवधूत [illegible] (टेक)
[illegible]
[illegible] अवधूत० १
[illegible]
[illegible] अवधूत० २
[illegible]
[illegible]
अवधूत० ३
[illegible]
[illegible]
अवधूत० ४

पद १७.

गुरुसें लगन कठिन मेरे भाई। सतगुरुसें लगन कठिन
मेरे भाई. (टेक.)

मत्तामात् शब्दका वेधु, शब्द सुणे चित लाई।
गोरे शब्दकुं प्राणदान दिजे, ना कोई मनमें डराई. गुरुसें०
बोले पपीया स्वातिका प्यासी, पीउ पीउ रट लाई।
पिउ बिना प्राण जाय मेरा अबही, और नीर नहि पाई. गु०
तजी घरबार सती जब निकसी, सत्त धरमकुं जाय।
पावक देख डरत नहि मनमें, कूद पडी छिनमांहे. गुरुसें० ३
छोड भगवा तनकी आशा, निर्भय होके गुन गाय।
कहत कबीर देही के लागे, तब तन मिले गुरु भाय. गुरुसें० ४

पद १८.

रामरस पीजे रे नर भाव, हरिरस पीजे रे भरमाय. (टेक.)
[illegible] देहोने सुंदर पाई रे भी,
करी करा नीचा करम. और मन कहीं गुमाई.
[illegible] इच्छु [illegible] मन, [illegible];
काम [illegible] करमही, हीरलो खोयो गमार. रामरस० १
[illegible] देवकु [illegible]. [illegible] पावे,
न करे संतकी सेव. जिनकी कुटुंब [illegible].
[illegible] देख [illegible]
[illegible] पाई. [illegible] २
[illegible],
[illegible]
[illegible] मन.
[illegible]. [illegible] ३
[illegible],
[illegible].
[illegible].
[illegible], [illegible]. [illegible] ४

पद १९.

गुरु देवके [illegible],
[illegible] (टेक.)

कहोईन करत लगावें झांझी, बाजत बड़ी बारारबी,
है कोई संत सतगुरुका बेटा, गुरुगमसे जिन लाखीरो. गुरु० १
इस औसर मन दुर्लभ पाई, गफलतमें दिनो गमाई,
काम क्रोध मदमें भाई, सो गफलत देखनेमें आई. गुरु० २
पाँच बिना तूकासो रहते, तुं मद औसो आई,
अेहेर गुरु अगम ध्यानसे, सो अंगम निशान चोराई. गुरु० ३
मेरे तन मन सौंप कर अपनी, गुरु शब्द औसी भाई,
कहत कबीर सुनो मेरे साधु, गुरुके चरण चित लावो. गुरु० ४

पद १०.

रे गगनमंडलमें धुन लागी, झीनी झीना गगन
मंडलमें धुन लागी. (टेक.)
अनहद शब्दकी गगनमें गाजे, बाजे अनहद तूरा,
तजो कहां झलकार शब्द सुनावे, ज्यों निर्मल चन्द्र सूरा, झीं० १
ज्ञान प्रकाश हुवा अंधकार, दिया सतगुरु डेरा,
जल बिना कुवा कमल फूलो, उस कमलपर भवरी करे बेरा. झीं० २
कीनो अनुभव आनन्द पाया, छुटा शब्द समानो,
सकोई धरकर आपा निरंजन, जिसका दीसत बाना. झीं० ३
गुरुसे न्यारा हरिया अविगत, अधर मगन निशाना,
कहे कबीर सुन साधु गगनमें, सो मगन हुवा गुलताना. झीं० ४

पद ११

संतो आदि अन्तकी कोई खबर न पावे,
कहाँ शब्द कहाँसे आया. (टेक.)
संतो आदि ब्रह्मा विष्णु महेश न होता, आद न होती माया,
अलख पुरुष शिखा न होती कहो जीव कहाँसे आया. संतो० १
सुरतो लागी मेरे तनमन हीरासे, तो उलटा गुरुज्ञान पाया,
मैं तेरी समझाऊं, भारी धरमें पेर देखाया संतो० २
सुरतो लागी मेरी मन और मनसे, तब मेरा गुरु भेद पाया,
कोटानकोट करि चरणपर लोटी, तब मेरा प्रीतम पाया. संतो० ३
कोइक पूजे शिव-शक्तिकुं, कोइक पीर मनाया,
कोइक खेलत गगनमंडलमें, नाम निरंजन पाया. संतो० ४
सुर धर शशि भव ज्योतिपर पेर मूरा, उहां मेरा मठ बसाया,
कहत कबीर शब्द धुन लागी, तेजमें तेज मिलाया. संतो० ५

[illegible]

[illegible]

[illegible] (टेक.)

[illegible] अंतरा १

[illegible]

[illegible] अंतरा २

[illegible]

[illegible] अंतरा ३

[illegible]

[illegible] अंतरा ४

[illegible]

[illegible] (टेक.)

[illegible] अंतरा १

[illegible]

[illegible] अंतरा २

[illegible] अंतरा ३

[illegible] अंतरा ४

[illegible]

[illegible] (टेक.)

[illegible] अंतरा १

[illegible]

मारे और दौलतमें न तीरी, प्यारे सुगनाकी दूंदी
हरिनामी. समझे० २
कुबुधि कमाईमें भीलतन कमेती, सूर्ते नागीभरी भानी,
दोस घोलीरान बंदामें गेरंनी, तन होर जाईगी म्यान
हन्नानी. समझे० ३
कामुनके लाल अमीरस बाली, हाथमें सूरना मिलानी।
कहत कबीरा सुन मुन माया, मेरे ननदी सपन सुगनी.
समझे० ४

पद ४५.

मोरे लागी लटक गुरुचरननकी। (टेक.)
चरन बिना मोहे और न भावत, झूठी माया सही
सपननकी. मोहे० १
भवसागर अब सूख गयो है, फिकर नहीं मोहे तरननकी.
मोहे० २
कहत कबीरा सुन भाई साधु, उलटी विधि भइ नैननकी.
मोहे० ३

पद ४६.

सांईंने भेखधारी बांस, गगनमें आई घटा, सद्गुरु
सबदो बांस. (टेक.)
ऐसा दृता मय घोलना, पता घोलना नांहीं।
घट दर्शनमें गोरखा पडिया, गोरखपुर गय भाई. गगनमें० १
आगेमें तो आप अलखिया, पीछे घरा भाई।
श्याम धूमसे बाबा जन्म्या, पीछे जन्मी माई. गगनमें० २
आगेसे तो दूध जमाया, पीछे दोहे गाई।
बछडे गायके पेटों, बाबो धूम हाटोहाट बेचाई. गगनमें० ३
कोडी धाई खाले मारेट, नव मण काजळ खाई।
हम्नी लिया हाथमें, ऊंट झुलट ले आई. गगनमें० ४
कहत कबीर फकिर मस्ताना, यही पद है निरधाई।
ए पद तो को बिरला बूझे, ऐसा उलट गया भाई. गगनमें० ५

पद ४७.

अवधू मेरा मन मतवाला, उनमुनी चढ्या गगन रस पीवे
त्रिभुवन भया उजीयारा. (टेक.)

गुरु कर्री ज्ञान ध्यान करी मुआ, औ भाठी करि मारा,
सुखमन नारी सहज समानी, पीये पीवनहारा. अवधु० १
दोई सूर जोडी जगाई गमचाती, तो महारस भरिपल भारी,
काम क्रोध दोउ किया पलीता, छूटी गई संसारी. अवधु० २
शून्य मंडलमें मृदंग बाजे, तहां मेरा मन नाचे,
गुरुप्रसादी अमर फल पाया, सहज सुखमना काछे. अवधु० ३
पुरा मिल्या तबे सुख उपज्या, तनकी तपनी बुझानी,
कहे कबीर भवबंधन छूटे, जोतिहीं जोति समानी. अवधु० ४

पद ४८.

मैं दौरे दौरे जाउंगा, तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. (टेक.)
पूत बहुत कतु थोरा, ताथें लाइले कथा डोरा.
कथा डोरा लागा जरा मरन भौ भागा मैं दौरे दौरे. १
जहां सूल कमलासन पुनी, तहां बैठे एक मुनी.
उस मुनीसुं चित्त लाउंगा तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. २
मेरु दंड एक छाजा, तहां बसे एक राजा
तीस राजासु चित्त लाउंगा, तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. ३
जहां बहु हीरा धन मोती तहां तत लाइले जोती
तीस जोतीही जोती मिलाउंगा तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. ४
जहां ऊगे सूर न चंदा तहां देख्या एक आनंदा
उस आनंद सो चित्त लाउंगा तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. ५
मूलबंध एक पाया तहां सिद्ध गणेश राया
तीस मूलही मूल मिलाउंगा तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. ६
कबीरा तालीब तोरा, तहां गगन हरि गुरु मोरा
तहां हेत हरि चित्त लाउंगा तो मैं बहुरी न भवजल आउंगा. ७

पद ४९.

बहुरि हम काहेकु आवहिंगे बिछुरे पंचतत्वकी रचना
तब हम रामहीं पावेंगे. (टेक.)
पृथ्वीका गुन पानी सोख्या, पानी तेज मिलावेंगे,
तेज पवन मिले पवन शब्द मिले, सहज समाधि लगावेंगे. ब० १

पूरे धनु [illegible] सुधन, [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]. अवधू० २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], अवधू० ३

पद ५०.

अवधू सो जोगी गुरु मेरा, जो या पदका करे निबेरा. (टेक.)
तरवर एक पेड बिन ठाडा, बिन फूलाँ फल लागा,
साखा पत्र कछु नहिं वाके, अष्ट गगन मुख गाजा. अवधू० १
साज बिन नाचे, करताल बिन बाजे, जिह्वा बिन गावे,
गावनहारेको रूप न रेखा, सतगुरु होय लखावे, अवधू० २
पंछीका खोज मीनका मारग, कहे कबीर बिचारी,
अपरंपार पार पुरुषोत्तम, वा मूरतकी बलिहारी. अवधू० ३

पद ५१.

गगनमंडलमें [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] न [illegible].
(टेक.)

मन बिन [illegible] [illegible], गुरुमुखमें [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. १
[illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] के [illegible],
[illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] के [illegible] [illegible]. २
[illegible] के [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ३
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] कछु न [illegible],
कहे कबीर बिचार, [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] ४

पद ५२.

ऐसी विधि [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. (टेक.)
जहाँ नहिं जहाँ नहिं तहाँ कछु जानी, जहाँ तहाँ [illegible] [illegible] १
[illegible] [illegible] न [illegible] [illegible], जहाँ नहिं तहाँ [illegible] [illegible]. २
मन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ३
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ४
[illegible] [illegible] [illegible] नहिं [illegible], [illegible] न [illegible] [illegible] नहिं [illegible]. ५
[illegible] [illegible] [illegible] निर्गुण [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. ६

सखी आगे खारो कडवो घणो, कोई अमलीरे कोई अमली,
तेने पेटे समाय. साहेली. ४
सखी सुंघतहीं गुंगा भया, चाख्या भेळा रे चाख्या भेळा,
छिनमें मरी जाय. साहेली० ५
सखी रती एक घटमें संचरे, तेना दिलमां रे तेना दिलमां,
आपणो साहेबो दर्शाय. साहेली. ६
सखी कहे कबीर धर्मदासकुं, एसो ओखोरे एसो ओखो,
तुमकुं दीनो बताय. साहेली. ७

पद ५९.

अबमें मारुंगा निशान बान,
चोट असमानकी चोट असमानकी गोळी ब्रह्मज्ञानकी. अब में०
दया धरमको दारु मंगाउं, गोली गुरुज्ञानकी;
प्रेमने पलीते दागुं, चाकर राजा रामके. अबमें० १
नीची नीची नौरत राखुं, सुरत असमानकी;
भणकतो भमरलो पाडुं, सूरज रथ भाणकी. अबमें० २
पांच चोरकुं पकड मगाउं, सुरत सुरतकी साणसी;
आपमें खोजोरे साधु, निगम बोले पारसी. अबमें० ३
जगमग जगमग जोत जलतहे, आरसीमें आरसी;
कहत कबीरजी संतो भाई, कासी वासी धामकी. अबमें० ४

पद. ६०.

अवधु कोई पीवेरे रस रामनामको, जो पीवेसो जोगीरे;
संतो सेवा करो रामकी, ओरने दुजा भोगीरे; (टेक.)
यहु रसतो सब फीका भया, ब्रह्म अग्निपर भरी;
ईश्वर गौरी पीवन लागे, रामनणी मतवारीरे. अवधु० १
चंद सूर दोउ भट्टी कीन्हीं, सुखमन चींगीला लागी;
अमृतकुंपी साचा पुरिया, मेरी तृष्णा भागीरे. अवधु० २
यही रस पीवे गुंगा गहीला, ताको कोई न बुझे सार;
कहे कबीर महा रस मोंघा, पीवे गा पीवणहाररे. अवधु० ३

पद. ६१ (गझल.)

गलक, सब रैनका सुपना, समज मन कोइ नहि अपनां (टेक.)
एक लोभकी धारा, बही जाय सकल संसारा;

पद ११.

आली देशमें रे कोई अगम ख्याल. (टेक.)
मेरे देशमें निन उठ पूनम, कबु नहि होत अमास;
टंड धूप व्यापे नहि मोकुं, नहि भूख नहि प्यास. आली० १
मेरे देशमें अमृत कुवा, जाकुं [illegible] जकोरी;
सुरत सुहागन हे पनिहारी, बिन गागर बिन डोरी. आली० २
गर्ज घूम और नांव घदूला, रमझुम बरखत मेहा;
पडे रहो चागान चौतरा, भीजत नहि मो देहा. आली० ३
मेरे देशमें पाजा बाजत नौबी होत अपाजा;
कहे कबीर मन मग्न भया हंसा चर्ढा गगनपर गाजा. आली० ४

पद १२.

नारायण बोले घटोघट नारायण बोले
बगाल्या खूब बन्या महाराज नाम नारायण बोले. (टेक.)
पांच तत्वको इट बनाई, तीन गुनका गारा
पच्चीस प्रकृतिकी पुरणी पुराई सबजनताको न्यारा. बंगाला० १
इस नगरका दश दरवाजा बीच पवनका खंभा
आवत जावत कोइ न देखे [illegible] बंगाला० २
इगला पिंगला सुखमन लागे [illegible] नाग मिलाय
कुम्भ सुरत [illegible] बंगाला० ३
मांहि पुरुषोत्तम पूरण राय। सतगुरु [illegible] बनाया
कहत कबीरा सुन भाइ [illegible] पाया बंगाला० ४

पद १३.

मेरो [illegible] (टेक.)
पांच तत्वकी [illegible]
[illegible] माला० १
उस डोलीकों [illegible]
उस डोलीमें [illegible] माला० २
पुरी फकीरी [illegible]
[illegible] माला० ३
कहत कबीरा सुनो भाई साधु [illegible]
गुरु रामानंदजीके चरण आया गुरुका [illegible] न्यारा माला० ४

पद ६५.

कर नेनुं देदार, मेहेल विच प्यारा है. (टेक.)
नेती न धोती बस्ती न पावन, आसन जुकिसें सेहेज लगावन,
ज्ञान घोडे अस्वार, भरमसे न्यारा है. कर नेनुं० १
उलटी नागनकुं ले सुधारे, मद चक्रकी सुरत विचारे,
मेरु दंड कर सुधा पवन दुधारा है. कर नेनुं० २
गगनमंडलमें उर्द्धमुख कुवा, संतो सोही जीनने भरभर पीया,
नगुरा पीछा जाय हीये अंधियारा है. कर नेनुं० ३
शब्द विहंग है चाल हमारी, कहत कबीरा सतगुरु देहि तारी,
खुल गया भरम कपाट, शब्द झनकारा है. कर नेनुं० ४

पद ६६.

दोमें कोन पुरुष कोन नारी, अवधूत एसो ज्ञान विचारी.
(टेक.)

ब्राह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चली;
कलमा पडके भई मैं तरकडी, आपेआप एकेली. अवधूत० १
नहीं मैं परणी नहीं कुंवारी, पुत्र जणी जणी हारी;
काळो मुंडीको में कोई न छोड्यो, तोय मैं बाळकुंवारी. अवधूत० २
ससरा हमारा बाळा भोळा, सासु हमारी कुंवारी;
पीयु हमारो पारणे झूले, मैं तो झुलावनहारी. अवधूत० ३
म्हासरीए न जातो, पीहरीए न रहेतो, पीयुजीकी सेज बिछानी;
कहत कबीरा सुनो भाई साधु, जोतमें जोत मिलानी. अवधूत० ४

पद ६७.

मोरे सैयां निकस गये, मैं ना लरीथी मोरे सैयां. (टेक.)
सुनियोरे मोरे पार परोसन, इनहुंके आगे मैंतो कछु नां कहीं थी.
मोरे सैयां० १
इस नगरीके नव दरवाजे, कौया जानुं जे कोई खरकी खुलीथी.
मोरे सैयां० २
सुघर परोसन सब जुड बेठी, सैंचो दुपट्टा मैं तो पास खडी थी.
मोरे सैयां० ३
कहत कबीरा सुनो भाई साधु, इस परदेस मैंतो कुंवारी भली थी.
मोरे सैयां० ४

पद १८.

जाकी सुरती भजनसें लागी, जाकी वृत्ति नामसें लागी,
गुरुजी सोही सत्य वैरागी. (टेक.)
जोगी होयके भ्रमसें रमो हमेशा, शून्य करो धर्मशाळा,
सत्य पवनका जाप जपीज्यो, तमे जपो अजपी माळा. गुरुजी० १
त्रिकुटी घट गगनपर देखो, करो बंकनाळपर मोरो,
सद्गुरु माथे पधरावी थैने, तमे काळकी फासीकु तोरो. गुरु० २
जाथी छे गंगा जमणी जमना, सरस्वति वहत्र सर्धार,
गुरुगम कुंजिथी ध्यान करो तमे, सुणो ज्योने अनहद सुरा. गुरु० ३
पांचो मनमका पाग मिटाईके, छटे सुरता लगाये,
कहत कबीरा सुन भाई साधु, ताकु कोर कछु न भावे. गुरु० ४

पद १९.

उड मन पंछी गगन घर मेरा, जमीं असमानसें दूर है डेरा. (टेक.)
मारनहारा सद्गुरु शूरा, तीरसुं जोवे घायल पूरा. उड मन. १
सोई सरोवर अमी रस भरिया, पीके सुं पांखीने मुरिया.
उड मन० २
कोई रस स्वाद जोगीजन जाणे, पीधा विना दुजा क्या रे
वखाणे. उड मन० ३
कहत कबीरा ध्यानसें पाईया, खोला कपट देदार दरसाया
उड मन० ४

पद २०.

रमते राम फकीर, कोई दिन यार करोगे. (टेक.)
अगरचंदनकी धूणी लगाई, वसो देखो है वजीर. रमते० १
इडा पिंगला अवर सुषुम्णा, बीचमां आवे बीर. रमते० २
कहत कबीरा सुन भाई साधु, कर साहेबकी फिकीर. रमते० ३

पद ७१

वैसो मैना दरशन जाको जोगी मैना. (टेक.)
पेवकतरकी बन्यो है पिंजरी, जामें बोले मधुर मैना. वैसो० १

पद ६८.

जागी सुरती सतगुरुकी न्यारी, जागी सुरति सतनामकी न्यारी,
सुरतकी डोरी सत्य लेवारी. (टेक.)
झीनी झीनी उलटि चढी नाभी कमलमें, सुरत चढी अंतरमां,
सत्य शब्दका ज्ञान सुनीजो, मेरे मनमें सतगुरु भाया. सुरती० १
त्रिकुटी बिच सासनमें हेरी, चढे बंकनालमें बैठी,
सतगुरु साथे हरदम रीझे, रमे कालकी फासीसुं दोरी. सु० २
जाकी ये रीत अगमकी अगम, सतगुरुने महल बतायो,
सुरतको मुक्तिकी ध्यान करी सोई, सुरति लागी अमरापुर. सु० ३
मांगो अगमका नाम मिलाईये, छूटे सुरता समाये,
कहत कबीरा सुन भाई साधु, साहेब ओर कछु न भावे. सुर० ४

पद ६९.

उड मन पंछी गगन घर मेरा, जहाँ अगमपुरमें गुरु है डेरा. (टेक.)
मानसरोवर सतगुरु पूरा, मोतियाँ चोंचे चातक पूरा. उड मन. १
ओहं सरोवर धर्मी मन भरिया, पीले मु मुक्ताफल चुनिया.
उड मन० २
थोरी बन स्वाद जोगीजन जावे, पीया पिया सुख पाया है
पावणे. उड मन० ३
कहत कबीरा ध्यानमें पाईया, गोरा पगट हेरत हरसाया
उड मन० ४

पद ७०.

रमते राम फकीर, कोई दिल याद करोगे. (टेक.)
अगमचंदनकी धूनी लगाई. चलो देखो है कबीर. रमते० १
इडा पिंगला मध्य सुषुम्ना, पीलवा आवे नीर. रमते० २
कहत कबीरा सुन भाई साधु, कर साहेबकी फिकीर. रमते० ३

पद ७१

नैनां नैनां दरसाव पायो लोभी नैनां. (टेक.)
पंचतत्वको बन्यो है पिंजरो. जामें बोले मधुर मैना. नैनां० १

पद १५.

कर नैनूं दीदार, महेल बिच प्यारा है. (टेक.)
धोती न नेती बस्ती न पावन, आसन जुगतिमें रहेत लगायन,
ज्ञान घोडे असवार, भरमसे न्यारा है. कर नैनूं० १
उलटी नागनकूं ले सुधारे, सट चक्रकी सुरत बिचारे,
मेरु दंड कर सुषमा पवन सुधारा है. कर नैनूं० २
गगनमंडलमें उर्धमुख कुवा, संतो सोही जीनने भरभर पीया,
नगुरा पीया जाय हीये अंधियारा है. कर नैनूं० ३
शब्द विदेह है चाल हमारी, कहत कबीरा सतगुरु देहि तारी,
खुल गया भरम कपाट, शब्द झनकारा है. कर नैनूं० ४

पद १६.

हीमें कोन पुरुष कोन नारी, अवधूत एसा ज्ञान विचारी। (टेक.)

ब्राह्मनके घर जन्मी बाला, जोगीके घर चेली,
कलमा पढके भई मैं तुरकनी, अजहुं फिरत अकेली. अवधूत० १
नहीं मैं परनी नहीं कुवारी, पुत्र जन्या जनी हारी।
काली मुंडीको मैं कोई न छोडा, तायमें बाल कुंवारी. अवधूत० २
मयका हमारा थाडा छोडा, सासु हमारी कुंवारी।
पीयु हमारा ... ... अवधूत० ३
... न ... ... साधुओंको ... ...।
कहत कबीरा सुनो भाई साधु, ज्ञानमें ... ... अवधूत० ४

पद १७.

मेरे सैंयां निकस गये मैं ना लरी था ... ... (टेक.)
... मेरे पास ... ... थी,
मेरे सैंयां० १
... ...,
मेरे सैंयां० २
... ...
मेरे सैंयां० ३
कहत कबीरा सुनो भाई साधु ... ... थी,
मेरे सैंयां० ४

पद १८.

जाकी सुरती भजनमें लागी, जाकी वृत्ति नाममें लागी,
गुरुजी सोही सत्य वैरागी. (टेक.)
जोगी होयके भ्रमसे रयो झगडा, शून्य करो धर्मशाळा;
सत्य वचनका जाप जपाल्यो, तमे जपो अजपी माळा. गुरुजी० १
त्रिकुटी बेठ तखतपर देखो, करो बंकनाळपर मोरो;
सद्गुरु माथे एकाग्र थैने, तमे काळकी फासीकुं तोरो. गुरु० २
जायां छे गंगा जमणी जमना, सरस्वति वहत सधीरा;
गुरुगम जुक्तिथी ध्यान करो तमे सुणो त्यांने अनहद तूरा. गुरु० ३
पांचो मनमका पार मिटाईके, छठे सुरता लगावे.
कहत कबीर सुन भाई साधु, ताकु और कष्ट न आवे. गुरु० ४

पद १ .

उड मन पंखी गगन घर तेरा, जमी असमानमें दूर है डेरा (टेक.)
मारनहारा सतगुरु सारा, तोकयु जावे पायल पूरा. उड मन. १
सोहं सरोवर अमी रस भरिया, पीले तु पांचोंने तुरिया.
उड मन० २
ओही रस स्वाद जोगीजन जाणे, [illegible] बिना दुजा क्या है
[illegible]. उड मन० ३
कहत कबीर ध्यानसे [illegible] [illegible] [illegible] देदार [illegible]
उड मन० ४

पद १८.

रमते राम फकीर कोई दिन याद करोगे (टेक.)
अगरचंदनकी धुनी लगाई चला देखो है [illegible] रमते० १
इडा पिंगला अधर सुषुम्णा वंगला जाके [illegible] रमते० २
कहत कबीर सुन भाई साधु का मोहरथी [illegible] रमते० ३

पद ४

नेनां नेना दरदास [illegible] लोची नेनां (टेक
पंचतत्वको पन्यां है पिंजरो, जामें [illegible] [illegible]

त्यों है मूल कूलके जीवन, कौन प्रेमता कही प्रमाना,
[illegible] बरनत कबीर, [illegible] पीया जीत [illegible]. समझ० १
[illegible] मगन मन, मन [illegible], [illegible] दूरसों है न्यारी,
[illegible] न [illegible] [illegible] नहिं [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. समझ० २
[illegible] [illegible] [illegible] करिके, है [illegible] [illegible] [illegible].
कहे कबीर गुरु [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. समझ० ३

पद ७५.

यही बिधि राम कहो है प्यारी, सुनो [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. (टेक.)
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. यही० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. यही० २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
कहे कबीर [illegible] गुरु [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. यही० ३

पद ७६.

बोलना आई राम बालमकी दुहाई,
बहु दिन बिन [illegible] वाले, दौलत अजहूं न आयी. (टेक.)
इका [illegible] आई [illegible], [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] गुरु [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. बोलो० १
मन [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible],
उलटी गगन भीर चढि आया, अमृत धार चुवाई. बोलो० २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] लागी,
प्रेम पियाले पीयत लागे, [illegible] [illegible] जागी. बोलो० ३
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], सतगुरु [illegible] पाई,
दास कबीर [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न जाई. बोलो० ४

पद ७७.

यही बिधि [illegible] [illegible] [illegible]। यही० (टेक.)
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुन गाई. यही० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. यही० २

कहै कबीर सुनो भाई साधु, हेतसों हेतं मरतींजी,
वेद किताबके बिहुद, दोऊ, प्रभु रहत सो न्यारेजी. देखत ४

पद ४१.

मन लीन है मगन रहूं, मोहे लगनलगावजी. (टेक.)
है चरणाम सुन्दरश्याम, श्याम, मगन घोरीजी,
प्रभ सकल करिकर्ता अनंता, सर्वव्यापक जोगीजी. सुमर १
है सुंदर श्यामी सिवारी चरन है, धारना धारन खोलीजी,
प्रभ सकल नर सुरेत किन्ही, मुंदर नाम न छोडीजी. सुमर २
सब श्यामं सार स्नान है, जोग जपोहि भीजोजी,
प्रभ सकल धारनमें दीठे, जगत साथ सें खीजोजी. सुमर ३
है सुमर को आपुन वरियो, जागि धातु मिलावनाजी,
प्रभ सकल नरदेवनारायण, हर्षोल्लास समावनाजी. सुमर॰ ४
है कबीर गोविंद सुमर, नाम अजन अधिकारी जी,
प्रभ सकल सर्वस्थल बामा, देखो नैन बिचारीजी. सुमर॰५

पद ४२

भोरे हरि बिन कोउ मेरा है बिनेह करम मुं मेरा मेरा है. (टेक.
इ कुला करम अभिमाना, छुटे धाम बचाई भूलाना. मोपे॰ १
है नर्कर बचारे बटाई, सोधे मिलित मोहे जर जाई. मोपे॰ २
कला मनही देह बिकारा, मकरन बहि छुटे संसारा. मोपे॰ ३
व मन निर्मल कर आना, नव निरमलमाहि समाना. मोपे. ४
प पाप पुण्य धाम जारी, नव भयो है प्रकाश मुरारी. मोपे. ५
है कबीर एक है ऐसा, जहां जैसा नहीं तैसा. मोपे. ६
है प्रभ प्रभ पदे जिन कोई, राजा राम करे सो होई. मोपे. ७

पद ४३

हरिको नाम न लिया गमारा. मन लोचन धार धारा. (टेक)
जब जगमां नव मरमां, जम आगे देना है,
ज्याके जम मरहिंव घेरी, धाई घेरी आवे निंद गहेरी. हरि॰१
पांच चोर गढ अंदरा, गढ लूटे दिवस आधर संजा,
जाके गढपति नहीं होई, गढ लूटे ताके न कोई. हरिको॰ २
कांजगरमें डंका बजाया, माया लालच समावांहि आपा,
काडगरमें डंका बकेला, नव गढ गया आप अकेला. हरिको॰ ३

पद [illegible]

[illegible] (टेक)

[illegible]

[illegible] सामान १

[illegible]

[illegible] सामान २

[illegible]

[illegible] सामान ३

[illegible]

[illegible] सामान ४

पद [illegible]

[illegible] हुआ. (टेक)

[illegible] हुआ,

[illegible] हुआ. मैं फिरि० १

[illegible]

[illegible] हुआ मैं फिरि० २

[illegible]

[illegible] हुआ. मैं फिरि० ३

[illegible]

[illegible] मैं फिरि० ४

पद [illegible]

अंजन आंजिये निज सोय (टेक)

आय अंजन तिमिर नाशे, दृढ निर्मल होय — अंजन० १

गुरुपद पोथी परख पावन, मदन डारे धोय — अंजन० २

[illegible] होय — अंजन० ३

[illegible] — अंजन० ४

[illegible] होय. — अंजन० ५

[illegible] धोय — अंजन० ६

[illegible] होय. — अंजन० ७

[illegible]

[illegible] , [illegible] दीसे [illegible] है,
[illegible] , [illegible] दिवस [illegible] ।
[illegible] ०३

[illegible]

[illegible] , [illegible] (टेक)
[illegible] , [illegible]
[illegible] , [illegible] ।
[illegible] , [illegible] , [illegible]
[illegible] , [illegible] ।
[illegible] , [illegible] , [illegible]

[illegible] १००.

[illegible] , [illegible] (टेक.)
[illegible] , [illegible] ।
[illegible] , [illegible] , [illegible]
[illegible] , [illegible] ।
[illegible] , [illegible] , [illegible]
[illegible] , [illegible] ।
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible] दरसे० १
[illegible]
[illegible] दरसे० २
[illegible]
[illegible] दरसे० ३
[illegible] ।
[illegible] देखी० ४

आवागमनकी भीति मिट गई, मिट गइ हेराफेरी;
कानपरी रूखड पम बोल्या, जेणे निर्गुण माळा फेरी. देखो०५

किसोर.

—:o:—

पद १०२. (भैरवी–होरी.)

मन मेरो ओंकार भजो रे. (टेक.)
प्रातःकाल उठि शुद्ध वदन व्है, चित एकाग्र करो रे;
ईश्वर सत्‌चिदानंद स्वरूपमें, नितहुं ध्यान धरो रे. मन मेरो० १
करि संध्या-जप महामंत्रको, बुद्धि विमल करो रे;
यथाशक्ति उपकार नित्य कर, जीवन सुफल करो रे. मन मेरो०२
सब जीवनपर कृपा दृष्टि कर, हिंसा त्याग करो रे;
मांस-मीन-मद-मुद्रा-मैथुन, पंच मकार तजो रे. मन मेरो० ४
किसोरा बहुत खोय वितायो, अब कछु चेत करो रे;
काल कराल निकट आ पहोंच्यो, अब लौं नाहिक डरो रे. मन मे०५

पद १०३. (पीलु–लावणी.)

मोरे मन बसे सत्य नाम ओंकार. (टेक.)
जाके गुन अरु कर्म अनंत है, जो प्रभु है निराकार. मोरे० १
जो सबका पालक पोषक है, शुद्ध बुद्ध निर्धार. मोरे० २
अजर अमर जो अनंत अनादी जाको है वार न पार. मोरे० ३
किसोर मगन देखो नामकी व्याख्या, सत्यार्थप्रकाशद्वार रे. मोरे० ४

पद १०४. (भैरवी–ठुमरी.)

ओंकार भजो, ओंकार भजो; जो अपनो कल्यान चहो. (टेक.)
हर गुन गान करो निसवासर, अक्षय सुख आनंद लहो; ओंकार०१
सब इंद्रियनको बस अपने करो, सतपथमें आरूढ रहो; ओंकार०२
त्यागहु हरि विमुखनके संगत, विषयनमें तुम न्यारे रहो; ओंकार०३
किसोर तेरो प्रभु सब सुखदायक, तजी वाको नहि मूर्ख बनो; ओं०४

केवल.

—.o.—

पद १०५.

अगम अगोचर अरथे आणी, शब्द कहो संत छाणी हो-
अद्भूत प्रश्न पूछुं शुद्ध प्राणी रे होजी. (टेक.)

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पद १०६

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] सब जागो, [illegible]
[illegible] कोई [illegible] मोती.
[illegible]
[illegible] सुन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] कोटिकाची करी रे, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हुवे है, [illegible] १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ३
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ४

हरिदास.

पद १६०.

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], (टेक)
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible];
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] ३

सुरदास.

पद १६१

[illegible] अमर अखंड [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (टेक.)
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अविन० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] परिवार,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अविन० २
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]. अविन० ३
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आतम राम।

लम मरघारी पवनका डालो, ध्यान कमान चढाई।
गुरु सुगमता करले मलथा, अनंधकू मार हटाई. अब मैं० ४
गड फोड थाँर दूरा दरवाजा, येरी मतकी भाई;
तिनमें क्षार धरे गड भीतर, टनमें कडार धराई. अब मैं० ५
सद्गुरु साहेब मरजूग देवे, मैनर मीनमेंक भाई।
गुरु अमृत गोरख बोल्या, मैं फेर धाड फराई. अब मैं० ६

पद ११४.

उनमें धरती अंजाधे अवमाना,
नवखंडी धार्णीना गुरुजी पूरा परधाना. (टेक.)
गगना करणाचर मेरु टेराता, अधर आसन पर शिवजी धपाना.
धरती० १
राम नामला माला फरियाणा, चोरी ज्यों चतुर पचरी त्यों माणां.
नया वेपारी हे जूनो हे रे नाणां, कोडीफेरे मुगमें हस्ति समाणा.
धरती० २
सोहं मांहे गुरुए बजार बनाई, लाल नवादरणां एक बुंदमें समाई,
मच्छेंद्र प्रतापे जती गोरख बोल्या, सुनो गुरुजी सौस
जोग कमाणा. धरती० ३

पद ११५.

बोलनेकी खोज करनी, मनसा सुरती आकाश चलनी;
कायाकुं उनमें दृढ भरनी, उतर चलनां पार;
अमृत काया मध्ये सार रहे, बंदा देहीमें देदार है. (टेक.)
शिखर भीतर नाद बाजे, जरा मरण उपाधि भागे;
शब्द सुण सुण दोरी लागी, आतमा धुन रमण लागी.
अन्य शब्द झणकार. अमृत० १
मेलकी अब खबर पाई, खीन लिया प्राण भाई;
इष्ट रूपी देव दरस्या, अलख अगम अपार. अमृत० २
ज्ञान जोगी ध्यान वासा, तोड दे सब पंड पासा;
सुवर्ण गढ सुण आसवासा, भणे गोरख नफर उदासा;
चेत ले गुणकार. अमृत० ३

पद ११६.

रमता जोगी आया नगरमें, रमता जोगी आया होजी. (टेक)

गा सतसें एक चमण अमाया, उलटाने पवन चलाया. जिवे गुरु०
गमपूरीमें एक धाम अंगीठी, इंगला ध्यान लगाया. जिवे० १
त्रिकालमें दोग चलिया, ते सुकमन मसाला पिलाया, जिवे.
और कसाराने दो दो मापक नीपजे, याका मूल न पाया. जिवे० २
सुखमागरमें एक हीरला हूता, हीरलाकुं परखे मढाया, जिवे.
सुरत साणसी हैया हथोडी, हीरलाकुं मारा फराया. जिवेगुरु०३
अठेणीमें टंकसाल मंडाणी, हीरलामें हीरला मिलाया. जिवे.
भणे गोरखनाथ सुणरे मछंदरी, मारे सतगुरु पार लगाया. जि० ४

पद ११९.

आतमदेव अलख करि जानो, इन संग ध्यान लगावो. (टेक.)
काची माटीका एक कुंभ बनायाजी, मांह पवनका यंत्र लगाया;
धंधाकारमें सब रंग भूल्या, ते भूल्या सकल संसारा. जिवे गुरु०
आतम० १
पांचकुं मारी पचीसा हटावो, सुरताकुं पकडी मगावो; जीवे गुरु.
सुरत सुगनसें पाणी भर ले, याका रंग लगावो. जीवे गुरु०
आतम० २
तल भर नाला ने रस भर कुंची जी, ने मोरे सतगुरुए खोल बतायारे;
काल मोरचा कर डारो पटकाजी; सोहं जाप जपाया. जीवे गुरु.
आतम० ३
शीश उतारी सतगुरुकुं दीया, तो अजर अमर घर पाया;
भणे गोरखनाथ सुण रे मछंदरी, मोरे सतगुरु पार लगाया
——— जीवे गुरु आतम० ४

गंगदास.

—:०:—

पद १२०.

ते नर भटके, दूर नहि तेरा सांईया. (टेक.)
पूरा संत मिले गुरु भाग सो. दिलथी दुरमत मिटाइया. ते० १
मन चंचल कछु ज्ञान न पावे, तज दे मान बडाइया. ते नर० २
आसन थिर नासिक पर नयना, लख ले सुरत लगाइया. ते० ३
गंगदास तेरा पियु तुझमें, मुगडा सकल भरमकाइया. ते० ४

चिदानंद.

पद १४१ (वेलावल.)

और सुगति जाण्या विना, कहा भाग धरावे। (टेक.)
रमारमित कहे केतनुं, मन हाथ न आवे — और सुगति०
जप धरी माला करी, अपणुं भरमावे।
गुरुगम परमानंदरूपी, सुधि रंच न पावे। — और सुगति०
मन मुंडा विन मुंडणुं, अति मोह मुंडावे।
जटा जूट शिर धारके, कोउ कान फरावे। — और सुगति०
ऊर्ध्व बाहु अधो मुख, तन ताप तपावे।
चिदानंद समझ्या विना, गिनती नहि आवे। — और सुगति०

पद १४२ (धनाश्री.)

भूल्या अमन करतां न जात भूल्या (टेक.)
[illegible] अनुभव रस पान, भूल्यां० [illegible]
[illegible] तेम अज्ञान;
[illegible] पान, भूल्यां० [illegible]
[illegible] निदान
[illegible] जाय कान, भूल्यां० [illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible]
[illegible]

...रुचि घर ... ... कुराव ४
...सी ... ...

... कुराव ५

...राग कुम ... ... कुराव ५

पद १५८

...रद हुए ... ... कुराव ६
...राग पंथ ... ...
... ...धु (टेक)
... ...
... ... हो छेदी० १
... ...
... ...व हो. छेदी० २
... ...

पद १५९

... ...धु हो छेदी० ३
... ...
... ... (टेक.)
... ...रा।
प्यारे० १
... ...
... ...रा प्यारे० २
... ...
... ...र. प्यारे० ३

पद १६०

... ...
... ...
... ...
... ... मन ... (टेक.)
... ... मन०१
... ...

निंदा स्तुति श्रवण सुणीने, हर्ष शोक नवि आणे;
ते जगमें जोगीसर पूरा, नित्य चढते गुण ठाणे. अवधू०
चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा;
अप्रमत्त भारंड परे नित्य, सुरगिरि सम शुचि धीरा. अवधू०
पंकज नाम धराय पंकसुं, रहत कमल जिम न्यारा;
चिदानंद ईस्या जन उत्तम, सो साहेबका प्यारा. अवधू०

पद १२८. (आसावरी.)

अवधू पीयो अनुभव रस प्याला, कहत प्रेम मतवाला,
अवधू० (टेक.)
अंतर सात धात रस भेदी, परम प्रेम उपजावै;
पूरव भाव अवस्था पलटी, अजब रूप दरसावै. अवधू०
नख शिख रहत खुमारी जाकी, सजल सघन घन जैसी;
[illegible] निजघर, और कहा कहीये ऐसी. अवधू०
[illegible] आट [illegible] नहि व्यापै;
[illegible] निवारै, [illegible]. अवधू०
[illegible] आतम काज सुधारै;
[illegible], [illegible]. अवधू०
[illegible], [illegible] मुद सारी.
चिदानंद [illegible] पाये. अवधू०

[illegible]

[illegible] ही, [illegible]
[illegible] पारखा पान,
[illegible] है, [illegible]
[illegible],
[illegible], [illegible]
[illegible] प्रमाण,
चिदानंद [illegible] है, [illegible]

पद १३०

[illegible] (टेक)
[illegible]
[illegible]. [illegible]

कै चिन्मय ध्यान हिये धरीने, साधो सब विधान।
देखत पुरुष पुंगव तारीफ, कर सुगमता घर ध्यान. जग० २
प्राण समाज प्रयाण अन्तरगई, मनवश पाई अयान।
सहज सुभाव हुंसि रमावें, अनुभव अनहद तान. जग० ३
कर आसन धर मुद्रा सम मुद्रा, मदि सुभाव ए ज्ञान;
अजपा जाप जोरे सु समाज, कर अनुभव रस पान. जग० ४
आतम ध्यान सकल सुधारे लागे, अवम अंगीया ज्ञान;
चिदानंद शुभ ध्यान जोग जन, पावत पद निरवान. जग० ५

पद १११. (काफी.)

अलख अलखा किम जावे हो, ऐसी कोई जुगति बतावे. (टेक.)
तन मन वचनातीत ध्यान धर, अजपा जाप जगावे,
होय अडोल लोलता त्यागी, ज्ञान सरोवर न्हावे हो. ऐसी० १
शुद्ध स्वरूपमें शक्ति संभारत, ममता दूर बहावे,
कनक उपल मल भिन्नता पाके, ज्ञानानल उपजावे हो. ऐसी० २
एक समय सम श्रेणी रोपी, चिदानंद इम गावे,
अलखरूप होय अलख समावे, अलख भेद इम पावे हो. ऐसी० ३

पद ११२.

क्या तेरा क्या मेरा, प्यारे सहु पडा ई रहेगा. (टेक.)
पंछी आय बिरछ बहु दिशाथी, तरुवर रैन बसेरा,
सहु आपणे आपणे मारगसें, होत भोरकी वेरा. प्यारे० १
इंद्रजाल गंधर्वनगर सम, हाट दिखावा घेरा,
सुपन पदारथ नयन खुल्या जिम, जग तन बहुविध हेरा. प्यारे० २
रविसुत करत शिर पर फेरे, निशदिन छाना फेरा;
चेत शके तो चेत चिदानंद, समझ शब्द ए मेरा. प्यारे० ३

सोरठ.

—:०:—

पद ११३.

अलख नाम धुन लागी गगनमें, मगन भया मन मेराजी, (टेक.)
आसन मारी सुरत दृढ धारी, दिया अगम घर डेराजी. अलख० १

कहि मात्र चित्तनुरुको दीन प्यारी।
जाहि पीतम निहारी, वारी देहेरी उतारी.   जिया० २.
अब भूले है, गुमानी मन, न्यों भारी।
प्रभु छोटमके प्रभु बिना करखी भयारी.   जिया० ३

पद ११६.

सुन मनवा तुं भोला भेरा रे,
भोला जागके भाई क्यों गुमाई उदास कमाई रे।
ना मुल थानों नाई भाई मनमानी.   सुन० (टेक.)
पीतमसें नहीं प्यारा दुख पावे. आपे पशुं न गावे तुं किशोर,
अब पाय उभारन दुःख निवारन, तुं जाने दे आपण
मेरा मेरा मेरा रे.   सुन० १.
छोटमदासके नाथ दयाळा, पावे वार तुं अपनों पेगाम;
कछु मान कहीं भाईले अब ए सब, उड जा मेंडी माहि तो
डेरा डेरा डेरा रे.   सुन० २

पद ११७.

तुं क्यों न मगनमें रहेता रे, मन मूरख क्यों दुःख सहेता. (टेक.)
एक दिन एसो आन पडेगो. झपट काळ शिर चाड धरेगो.
अलहरे गाफीर न आया माया पलेगा तेरा माल मजीना रहेगा रे.
तेरे दीलका डेरा ले डेरा करेगा गुफलमें घेरेगा रे.   तुं० १
नावर जिसका मन धनकी ममते. आखर माग वनेगी घनमें;
रसद कछु यहि रहे माय न पिवागो. तेरा जिया मानीले मेरा मेरा रे
प्रभु छोटमके प्यारे गारे तुं गारे, जिया मेना कछु कहेतारे   तुं० २,

पद ११८.

रसना तुं धेना याई, जश कर ले हरिगुन गाई. रसना० (टेक.)
हरिगुन धेरो पान सुधाको, पावन क्यों न रूपाई।
कथा मन मानी, पनत गुलानी, आनी ना सतगुरुताई.   रसना० १
बेठ यही मुख मंडल भीतर, रंग मगवा वांतसाई.
स्वायत भायो, मदरस पायो, गायो ना सुगदाई.   रसना० २
जब न रटे हटे तुं तब तो संहारी, ऐसी धर्म जडताई,
तो फिर कोन है काम सेहारी, नाहक भार उठाई.   रसना० ३

धाक रहा अब धक्कन लागी, काया बुढापनमें;
ताकात न रही तन अपनेकी, सुद्धि नाहि कछु मनमें. अम० २
हें हलभारी तोहु न लागी, प्रीत हरिकीर्तनमें;
अब मुं कहा पस्तात गुमानी, मोत खडी है अंगनमें. अम० ३
मान कही इतु एक घडी पन, तुं मन गों कछु फंदमें;
छोटमदासको प्रभु चित धारी, ध्यान लगा सुमरनमें. अम० ४

पद १४२.

आ अंग आपों स्नेने जीवलडा, तुं पूर पाणी परपोटो. (टेक.)
धार न लागे एने फूटी जतां तें,
जोने माथे भमे छे भय मोटो रे. पूर० १
कोण घेलाए तुंने झालीने आदो,
अल्या काळ फरे छे मही मोटो रे. पूर० २
लाभ गुमावी मन मानी करे छे पण,
आवशे पस्तां तुंने तोटो रे. पूर० ३
डापण तारुं हरिज्ञान विनानुं,
अल्या जेथी रंध्यो जोने खोटो रे. पूर० ४
लहाण कमायो अल्या मोटुं शुं पमी,
तुं तो गागर साटे मही लोटो रे. पूर० ५
आवे भजी ले प्रभु छोटमनो,
जेना नामतणो ने नथी जोटो रे. पूर० ६

पद. १४३.

जुठी जुठी आ जोने जगजाळ,
शीदने फसाय छे तुं प्राणीआ;
अल्या शाने भरे छे तुं तो फाळ, शीदने० (टेक.)
मायामां मोही भणी खोयो मुग्धमति,
आ शुं करे छे अभिमान, प्राणीआ.
रंगमां राच्यो खुब नाच्यो,
भूली गयो तुं भगवान. शीदने० जुठी० १
मारुं ने तारुं करी फोकट फूले अल्या,
आ शी नशामां भरे बाथ, प्राणीआ.
तारुं ते क्यांथी थयुं जोने विचारी जरा,
शुं रे लाव्यों तो तारी साथ. शीदने० जुठी० २

जेने तुं मारां कदी माने अभागी,
ते तो मारां नथी तलभार, प्राणीआ.
अंतना भेगी नथी संगी छे रंगी,
जुदी लेशे हरी जो एक तार. दीदने॰ जुटी॰ ३
माटे तुं मानी अभिमानी गुमानी,
भजी लेने भावे तुं भगवान, प्राणीआ.
दीनदयाळ छे कृपाळ छोटमनो प्रभु,
रीझीने देशे दयादान. दीदने॰ जुटी॰ ४

पद १४४.

जुठडी मायानो रंग देडो, नाथजी पार उतारजो बेडो. (टेक.)
ज्यां जाउं त्यां नजरे पडे छे, आ मायानो मोटो यखेडो;
आ मारुं आ तारुं सारुं नठारुं, एके शे कराये छे वरेडो. जुठडी॰१
मोहनीरूपे मनडुं हरे छे, ने नारे अंधारपछेडो;
एवी फसाई हुं फांदे पड्यो, नथी आवतो एनो निवेडो. जुठडी॰२
एमांथी अळगो हुं थावा करूं पण, मूके ना मारो ए केडो;
कोण जाणे एने कया जनमनो, मारी संगाथे सनेडो. जुठडी॰ ३
आदि ने अंतनो पार न पामुं, जणातो नथी कांई छेडो;
भूल्यो भमुं हुं पुकारो करुं छुं, ओ बापजी दुःखडां फेडो. जुठडी॰४
श्रीहरि नामनुं नाणु गुमावीने, कांकराथी करे नेडो;
मूकीने मीठुं अजीठुं जमुं जेम, ठीकरीमां खाय छे देडो. जुठडी॰५
दु खना डुंगर नजरे पडे छे, तथापि मूकाय न हेडो;
दीवो लईने कुवामां पडे तेने शाणो कहिये के गधेडो. जुठडी॰ ६
नाथजी हाथ हुं जोडी कहुं कांई, हावां कृपाजळ रेडो;
छोटमदासनी आश विचारी, कर धारि निकटमां तेडो. जुठडी॰७

पद १४५.

जुठडी मायानी मोहनी मीठी, स्वादमां एवी नथी कोई दीठी. (टेक.)
उपर जोतामां मीठी लागे ने, भीतरमांहे अजिठी;
पलटी जतां एने वार न लागे, जेवो छे रंग मजीठी. जुठडी॰ १
ज्ञानी ने ध्यानी गुमानी करावे छे, पोताना पासमां अजीठी;
हेते हुलावे फुलावे लगावे छे, लज्ञ चडावीने पीठी. जुठडी॰ २

म्होंमें पासे पेल्याई रही, मध्यमांहिं लीधुं जग धीटी।
मोहनी रूपनी धाडी नौनी पण, मांहीं छे आपनी अर्जीटी. जुठ० ३
अंदरि पापनी दाम्म समारो, हुं छोटम माया ना फीटी।
दरो हिसाप निहाळुं सौ भासे छे, मायानी पळनी अंगीटी. जुठ० ४

पद १४९.

भज मन राम तुं गुमानी;
न करत फिकर गिरिधारि गारां सारी जाने दे छेलाई. भज० (टेक)
लाज धरम मांहिं बोलत डोलत,
मद अभिमानी जिंदगानी धुळधानी जगमें गुमाई. भज० १
काज करत कछु अर्थ न पावे,
गर्थ गुमावे करे टाली ठकुराई. जाने दे ढिटाई. भज मन० २
क्युं ना हरत मनमोहन भाई,
छोटम गाई हरिगुण सुखकारी, कर ले सचाई. भज मन० ३

छोटम शास्त्री.*

—:०:—

पद १५०. (गरबी.)

सदा प्रभु प्रेमनो छे संगी रे,
नवधा भक्तितणो ए रंगी. सदा प्रभु० (टेक.)
आकाशनो ईश्वर स्वामी रे
रह्यो अगणित थंड प्रकाशी रे;
प्रेमे भक्तने आव्यो भासी. सदा प्रभु० १
रवि किरणथी कमळ विकासे रे,
एम प्रेमे रहे प्रभु पासे रे;
भवरोग समूळो नासे. सदा प्रभु० २
लोह चुंबकनो गुण पामी रे,
एनो सुरती रे उत्तर स्वामी रे;
जियने जणवे छे अंतरजामी. सदा प्रभु० ३

---

* आ वेदांती कवि गोरा वखत अमदावादमां थई गया छे.

[illegible] है,
[illegible] है,
[illegible] मेरा प्रभु ४
[illegible] है,
[illegible] है,
[illegible] मेरा प्रभु ५
[illegible] है
[illegible] है,
[illegible] मेरा प्रभु ६
[illegible] है
[illegible] है
[illegible] मेरा प्रभु ७

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] १
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ४
[illegible]
[illegible]

कै करें गोपीजनकी सब संस्थी जो,
सौंदर्ये चलाइयो है रूपनि मोरली, ५
कै अंतर्गत करवैनु सब गौर्यु जो,
मधुरा नाथिकामा शुरपाल फिरता फेंकयु जो,
आर्तिदर्शन सव दिवस दूरत फोंचयु जो,
कमुनीनी पाली है प्रभु देहि मली. ६
गगन मंडळमां वाजे अनहद नाद जो,
आनंदीनो बानी गुर्मी भाजात जो,
गर्जना गाजे घोगो रमती साद जो.
स्वाभाविका होरी है प्रभु मेरो मली. ७
सदा प्रेम पगोधारमां रहे मगन जो,
ज्यां जई घोषी शुभाजीत गगन जो,
प्रेम प्रगटया कीधे मूर्ति प्रगटता जो,
अब छोड़ना गोपी मे गोविंदके मारी. ८

पद ११९. (गरबी.)

मारवाडी वाणी है महा सुरवीशमां,
समजो तेजो मर्मनुं सिद्धांत जो,
सब्दमर्मि न मला धारण छे सेवमां,
महा गंभीरे सत्तांन भाखो शांत जो. मारवाडी० १
व ममता औरी है बांधवा अनुभवी,
सीसा गई सेवादेवी गाय जो,
शब्द विना गुरु स्नानमा दीसे होकमां,
मेघ धोता जननुं काम न थाय जो. मारवाडी० २
पंच तत्वो ते बानी थइ गरजे घणा,
ज्ञान विना नहि आपलणी उद्योत जो,
मनगुणनो तो निश्चय नहि थायाळके,
प्रकाश न करे चित्रामणनी ज्योत जो मारवाडी० ३
माणीनी दाता ते रहे छे थेगळो,
नाने प्रभु ते गहो परानी पार जो,
वस्तुने जाणी न शके ते दिवसी,
समजो तेजो सद्गुरु शब्द विचार जो मारवाडी० ४

पद १५१. (दावी.)

समजण साधन रे सार छे, अणसमजण्याथी बहु अपडाय;
जळ ज्यम भाम्ये रे डोहळ्यां, पशु अजाण्यां पीया जाय. समज० १
वचन विचारी रे बोलिये, परथम उत्तम साधन एह;
वचने भ्रांति रे थाय छे, वचने मटे सर्व संदेह. समजण० २
सुवचन सुखनुं रे मूळ छे, कुवचन क्लेशतणो भंडार;
पांडव पीडा रे पामिया, निपज्यो जादवनो संहार. समजण० ३
वचने ज्वाळा रे उपजे, वचने शीतळ थाय अंग;
वचने वाला रे थाय छे, वचने भांगे वस्तु अभंग. समजण० ४
वचने वैरी रे वीसरे, वचने सज्जन शत्रु थाय;
वचने बंधन रे पामशो, वचने जीव मोक्षमां जाय. समजण० ५
छोटम साधन रे ए खरुं, बीजां सर्वे एनी हेठ;
शब्द निसरणी रे सरगनी, चढनां ठरी बेसशो ठेठ. समजण० ६

पद १५२. (गरबी.)

भेद जाण्याविना भ्रमे शुं भूलमां जो;
व्हालुं वेणवनुं धरीने तुं फूलमां जो. भेद० १
कंठी बांधी तने मंत्र कह्यो कानमां जो;
पण समज्यो नहि सद्गुरुनी सानमां जो. भेद० २
गुंजा भरि ज्यम मानो रह्यां मांकडां जो;
मन बांधी रह्यां जीव एम रांकडां जो. भेद० ३
तुं तो कोण छे ने देह ते कोणे कर्यो जो;
एवा करणी करनारने शुं विसर्यो जो. भेद० ४
मन्यमानि कहीं चंद्रमां तुं नेहनो जो;
अखिल लोकमां प्रकाश रहे जेहनो जो. भेद० ५
ने हुं ने हुं कर्या बोले हरि तुज कने जो;
तेने समर शुद्ध भावथी साचे मने जो. भेद० ६
एम जाणी मजा तजी अन्य आशरो जो;
प्रभु प्रकट थशे पासथी खरेखरो जो. भेद० ७
महा मस्तकेरुं ज्ञान जे को जाणशे जो;
छोटम सद्गुरु कृपाए सुख माणशे जो. भेद० ८

गीत १०९. (गारी.)

मंदिर मग आवे ते मंदिर अजवालीने,
[illegible] (टेक)
[illegible],
[illegible]. मंदिर मग० १
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible]. मंदिर मग० २
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible]. मंदिर मग० ३
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible]. मंदिर मग० ४
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible] मंदिर मग० ५
[illegible]
[illegible].
[illegible].
[illegible] मंदिर मग० ६
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible]. मंदिर मग० ७
[illegible],
[illegible].
[illegible],
[illegible] मंदिर मग० ८

पद ४५१. (राग.)

[illegible] बिना [illegible] हैं [illegible] जी। (टेक.)
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० १
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० २
[illegible] बिचारुं [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० ३
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० ४
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० ५
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी. प्रभु० ६
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी प्रभु० ७
[illegible] [illegible] जी।
[illegible] [illegible] जी प्रभु० ८

पद ४५२. (राग.)

[illegible] [illegible] करे,
[illegible] [illegible] विचार करे। (टेक.)
[illegible] [illegible] धन है,
[illegible] [illegible]. कहुं मैं० १
[illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible]. कहुं मैं० २
[illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] नहि होय. कहुं मैं० ३
[illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] कहुं मैं० ४
[illegible] [illegible] है
[illegible] [illegible]. कहुं मैं० ५
[illegible] [illegible] है,
[illegible] [illegible] नहि [illegible]. कहुं मैं० ६

देह कारज पामंकी मकरों, है साधुको देह है;
कारण कोकिला सरको हीं, सकल न मंड मिटा. ओं सतगुरु० ११
प्रथम परीक्षा कीजे धारिये, झकरो कारिये मेल है;
कोई छोरम मराननमे मौड़े, अन्तर माली मेल. ओं सतगुरु० १२

उमर्सिंग.

--:०:--

पद १५७.

मेरी एक फलकको बाद, मुरख जनम गमायो. (टेक.)
टाकन मांथे माहि रे, मांधे विचारी बाद,
दुख हांके भेंमकुं, भेंम विचारी बाद. मेरी० १
कायरा सो घोलो धंधे, धांवी किया मयेल :
पानी मो फारु मया न आवे, नया विचारा मेल. मेरी० २
सम्या सो उमीर्ण वरसा, हारो पारे आकाश;
रिद पाप दाखा नहि दीमे, नहि ज्ञात नहि मास. मेरी० ३
पानीको दुनिया जो मारी, विना पानि न समाय,
आयाज मो मव कोई गुलमा, जहां पर्छा मा जो दिखाय. मेरी० ४
विना मोपके मोती निपजे, पाी मयनमें न्यार;
कहे उमर्सिग सुनो भाई साधू, विना सुरज उजियार. मेरी० ५

जगकृष्ण.

—:०:—

पद १५८. (होरी.)

खेलो मन श्यामकी होरी, टरे जम फांसकी डोरी. (टेक.)
सद्-चिद्-आनंद रूप तिहारो, गुन चिघकारो छोरी।
सन्मुख हो कर ले अपने पर, ईस गुलाल मरोरी,
नजो नाम रूपकी जोरी, खेलो मन० १
अग्नि-भांति प्रियरूप तिहारो, नाहिमे चित्तकुं डोरी;
वरणाश्रम अभिमान गारि दे, पांडपकुं दूर सजोरी,
करो गुरुपावकी चोरी, खेलो मन० २

जोवकुं आतम ज्ञान देत है, फगुआ यह सुखोरी।
ज्ञान हु पंडित काए जगत सब, ब्रह्म अग्निप्र दहोरी,
तजो अभिमानको होरी, ऐसो मन० ३
विषसम जानि छोड विषयकुं, मनरंगत करोरी।
ऐसी होरी नरनारी जो खेलत, ताहिको बंध कटोरी,
कहत जयकृष्ण बहोरी. ऐसो मन० ४

जीवणदास.

—०—

पद १५९.

नाभिकमलसें नदुया चडिया, अधर उतारा कीना. (टेक.)
नरदेहीमां जुओ तमासा, यां हे सतगुरु मेरा;
ए सतगुरुना सुरा नमन त्यां, पोंचे नर कोइ पूरा रे जी.
नाभिकमल० १
शब्द सुणो भाइ मारग झीणा मेंत चल्या मरजाया रे जी।
अखंड ज्योतमें हुया उजियारा मंडमां निरख्या तारा रे जी.
नाभिकमल० २
गढ दर्शनमां केवल दीठा, पीधा प्याला गुरु पूरा रे जी।
चार वेदमां जे नर समज्या नाशा निर्मळ हीरा रे जी.
नाभिकमल० ३
अधर मंडपमें आता उतारा काल पडावशे फेरा रे जी।
सुनमेरी सुरता चडी गगनमां, हम पाया हीरा रे जी.
नाभिकमल० ४
अधर अमीमें उड झीलिया उगमग डगली धीरा रे जी।
दास जीवण सत भिमकी शरणे, सतगुरु मळिया पूरा रे
नाभिकमल० ५

पद १६०.

अनहद नाद गगन धुन गाजे, झिलमिल ज्योत जगत हे होजी.
(टेक.)
झळझळ झळक मांहे हुवा झळकारा, नाभिना दिया बताइ।
सहजकी हाटी होय सो जाणे, दुनिया क्या जाणे भेद भाइ.
अनहद० १

मुक्ताफळ हुआ अमरस मेवा, घण चाखत मस्ताई।
आगम महेलमें अमर पुरुष हे, सो संतों करी रहो त्यांई.
अनहद० २

उन मन्दिर एक जोगी बेठा, उनमें धरो ओळखाण।
उनमें सत्गुरु एक सरवर भरिया, त्यां भराय अवधूत मांई.
अनहद० ३

आ कायामां दस दरवाजा, सत्गुरु दिया बताई,
दास सांवल बंगी भीमभेरे चरणे, धरने गुरु मळ्या गुसांई.
अनहद० ४

पद ११६.

गुरु गुरु गुरु गुरु गाजे रे, गगन झणकार वाजे,
गगनमंडळ घरमांही (टेक.)
अनहद नाद गगन गाजे, झळहळ ज्योत जगाई.
झळन झळन हुवा झळकारा, आ नगिनदा दिया दिखाई। गगन० १
मुक्ताफळ गुरु प्रेमरस मेवा, घण चाखत मस्ताई।
उन शहेरमें चार सरवर भरिया, नित नित अनुभव नाव. गगन० २
उन शहेरमें एक जोगी बेठा, उनमें धरो ओळखाण।
अगमहेलमें अमरपुरुष हे, साधु सन्तो करी हे कमाई. गगन०
उन शहेरसे एक देवळ देखा, सत्गुरु दिया देखाई.
दासभायण मन भामवंर चरणे, गुरु मळ्या गुसांई. गगन० ३

पद ११७.

देख्या हंस मैं करी चमत्कारा, मोती चेरता हंस होशी. (टेक.)
हंस करी गगनमां गाजे, त्यां तो सुन्न सभा. देख्या० १
सुघड गुरु ने दीया चलता, अत्र निजवन नाहि पगरखा होशी
आगम भासे निगम नाहि निरख, आप परमाण वाधा. देख्या० २
सत्गुरु मळ्या मन टळिया, मिट गया सब फरा होशी
पियुने परख्या मारा जरख्या, अखंड भया आनंदा. देख्या० ३
आप निरंजन माला निरख्या, अचल गुरुना चरणा, होशी
नांहि रूप पाचू रूपक रेखा, नांहि सूरज नांहि चन्द्रा. देख्या० ४
एक नाम जेणे मन करी मान्या, धन्य गुरुना चरणा होशी
दास जीवण अरजणके शरणे, त्यांना पुरणका धंधा. देख्या० ५

काजळ स्याहिका सुंदर घोवारे,
और नामोंकुं न बतावे. सुरता० ४
अगुरे मे मोकळे रोम वेधानो,
सो अन्न बिना मरी जावे. सुरता० ५
लाखता जोनकी प्रेम सुरता मरे है,
बाण शब्द विचारी कोई संत पावे है. सुरता० ६
सब जोईतान जीवण कहे है,
सुरतामां मरी शूरा आवे. सुरता० ७

पद १६१

भाई सारो रे, मे मन काहि आव रे, जेणे सद्गुरु मेरव्या (टेक.)

सुमण व्यापक मंने गुरुजीए पाया,
तो अवर दूजो मन नहीं भावे रे. जेणे० १
आवागमन जेने कांई नथी अडतुं, पाम्या,
रूप कोमलताई छोडी सुरतीमां धावे. जेणे० २
तन मन धन जेणे गुरुजीने अरप्युं, वाल्या,
दुग्धा मिर्गीने येनु विगुण दावे. जेणे० ३
अरु भेदया नेवां रहे दुख भाग्यां, पाम्या
दास जीवण साचा गुण गावे. जेणे० ४

पद १६२.

शिखरे जाणीओ, जोगी जाणीओ,
नेणनीं नजीक, साचां गोरांन परमाणे. (टेक.)
मानसरुपी मांहेलो, जाणे स्वाधन कोई
गगनमांहे मग्न गाजे, हेया न हर होय. जोगी० १
पवनरूपी प्राणीओ, गुरु आको नाम
बोल ने बोलो नहीं, सो ह मांगे दयाम. जोगी० २
मन उपर महल ज्याको, माल ठाकोर मांहे,
पवन-रूपी पड हुआ, अगमी मन होय जोगी० ३
अखंडस्वरूप भूषणे, एक जाको भेग
अलखरूपी पलकमांही, करे केसा रंग जोगी० ४
दश चारे दशे द्वारे, एक दीसे आप,
जीवण जोगी न्हाही जोगी, जपे उनगा जाप. जोगी० ५

जेठीदास.

—:0:—

पद १६८.

काया कोट लियो गढ घेरी बंको, काया कोट लियो. (टेक.)
ज्ञान वैराग्यकी फोजां चडियां, जब सतगुरु शब्द सुनाया;
नेजा रोप्या निज नामका, स्वांसोस्वासका डेरा दिया. गढ बंका० १
सुरत सुरतकी नाळां जोडी, प्रेम पलिता दिया;
गोळा छूटा ज्ञानका, मारा शहेरकुं कबजा किया. गढ बंका० २
पांच उमराव पचीश पटराणी, उनकुं पकड मंगाया;
पकडी शहेरकुं ढुंढा राजिया, तेने पलमांहि नंगाया. गढ बंका० ३
त्रण उमरावोंने मारिया, अब भागा शहेर धूजाया;
जेठीदासे अमका वास मिटाया, रामकोट सांवरकुं दिया. गढ० ४

—

डुंगरपुरी

—

पद १६९.

बान्धे चडे तीर कबु नहि कबु नव कालजमां पारा रे. (टेक.)
[illegible] मान, इनकेरा पारा रे,
[illegible] तथा सतगुरु नाहं जी. कारे० १
[illegible] कला कला आपकुं [illegible] रे,
[illegible] तथा समदर पारा रे. कारे० २
[illegible] सुरत [illegible] रे,
[illegible] नहि [illegible] रे. कारे० ३
[illegible] पारकुं पाना रे,
दास डुंगरपुरी [illegible] सतगुरु [illegible] रे. कारे० ४

पद १७०.

म्हेरे ए आतमराम, घट घट रम रह्या आतमराम. (टेक.)
गुरु [illegible] दास निरंजन, सकीर [illegible],
[illegible] मनमें [illegible], अविनाशी [illegible].
[illegible] १

झुमर सुरतामें मेरुझ गाजे, मे समझे शुन्यम लागे।
मेहेरम मौजी सार्ई आरीस नगर है, सदन मान्दे लागे.

संतो रमेऽ २

ऐसा नगर दिसता न आवे, नहीं दूजी अनरमान।
दयल साची निगम नहीं जेमां, ते सो दिये उमगुनी ध्यान.

संतो रमेऽ ३

शब्द ओंकार गाजे गगनामें, अनाहद गेंड अपार।
झळहळ झळहळ ज्योति जगत है, निरखो पुरुष देदार.

संतो रमेऽ ४

ओ अब सतगुरु पारसें पोतमा, मेरो मिटगई सारि ग्लान।
दास डुंगर कहे में तो प्रलय पाते नहीं, मेरे आदलमें पाई आन

संतो रमेऽ ५

पद १५१.

सतगुरु हस्त दिया शिर उपर, शुक्ष्म नाम सुनाया।
प्रेम जडीका प्याला पिलाया, मुं ई मुं ई नाम लगाया।

संतो मेहेरी भई मस्ताना होजी.

प्रेम लिया गम्दारा, संतो मेहेरी भई मस्ताना होजी. (टेक.)
पवन सिंहासन सतन बनाये, धीरज छत्र धराया हो जी।
चंद्र सूर्य दो निरखे परके, सूना पौन जगाया. संतो मेहेरी० १
धरम धूळे धरधारण उच्चारी, ब्रह्मा पुस्तक गायां होजी।
विष्णु तख्तपर ध्यान लगा तब, शंकर सयाहीं लाया. संतो० २
धारा गूढ विकट दम पीना, तब उलटी आप भट आया।
गुरु शब्दकी धारा धरतां, मन मेवासी पाया. संतो मेहेरी० ३
सहज सुरतीको धन्तर टोपी, क्षमाका खड्ग नमाया।
सत्यका ध्यान किया गुरुनाम. दरशनका फळ पाया. संतो मेहेरी०४
दर्शी अलक मिटी सब भ्रांति, समरसका सुख पाया।
कहे डुंगरपुरी भय गई अमदा, अविनाशी पद पाया. संतो मेहेरी०५

तुलसी.

— :०: —

पद १७२. (देश.)

अरे मन तू न भयो भगता. (टेक.)
दौलत दुनिया माल खजाना, यह जग सपना है. अरे० १
[illegible] पुत्र अरु [illegible] लागे, मुक्ति दिये [illegible]. अरे० २
चार जना मिलि लेई चले हैं, कांध चार लगता. अरे० ३
तुलसिदास जगमाए यही है, राम नाम जपना. अरे० ४

पद १७३

जपा कर माला काहेकुं बिसारे. (टेक.)
रामभजनकुं तुलसीकी माला, ओढनकुं मृगछाला रे, जपाकर० १
रामभजनमें कौडिस लगाये, तु कयु न भजत गमारा रे, जपा० २
तुलसीदास भजो भगवाना, भवसागर उतरो पारा रे, जपाकर० ३

पद १७४

बिन रघुनाथ कोउ नाहि अपना (टेक.)
मात तात स्वारथके साथी, ए सब जानो सपना है;
धन दारा सुत नहि तेरा, काहेकु करे तु कलपना है. बिन० १
धरता ममता सबकी झूठी, झूठा ह सब सपना है;
[illegible] नाम कबु न जपना है. बिन० २
राजा राणा और बादशाह [illegible] है;
तुलसी श्री रघुनाथ भजन बिन [illegible]. बिन० ३

श्रीकम

— :०: —

पद १७५.

[illegible] (टेक.)
[illegible],
[illegible]. [illegible]० १
[illegible].
[illegible]. [illegible]० २

तृष्णा सौ देर धाया, धनादि दुलाया।
ऐसी अलगअगर दृष्टघार दैन्या सो, गलमुख आइ देखाया. हमने० ३
दरसन साच आइ अकर्मी, आवे भेद बतादी.
गुने घाँतसार करता कार्या, अविनाशीपद मिलाया. हमने० ४

त्रिविक्रमानंद.

—:0:—

पद १२८. (राग-...-त्रिताल.)

बालबुद्धि तुं छांड रे जियरा, देह मनुष्य न आवे फेरी रे,
बालबुद्धि० (टेक.)

बाल धाम निंदि खोयन खोनी, अब जाग्यो तुं संसार हरि रे,
लोकव्यवहारमें दिवस पुनी पिलो. प्रभु न भज्यो फिर
सांस घरी रे. बालबुद्धि० १

बाल युवा वृद्धापने पिरयो, जाग्यो काल निसान घरी रे,
माहा निंदि सोवनारीको रे, थामें परे कब पहो फेरी रे.
बालबुद्धि० २

याने महत्तर रैन प्रलयकी, कर्मके वश फिर देह गई रे;
कोटिन जन्म तो पैसेहि गये. अजहु न ह्रिये त्रास धरी रे.
बालबुद्धि० ३

विषयन संग पर्योंहि रहत है. तृष्णा लाग ज्युं अधिक जरी रे.
अजहुं तोहि वैराग्य न उपज्यो, हरि न भज्यो नें पग धरी रे.
बालबुद्धि० ४

वेद गुरुकि नें एक न मानी, मरकट मूठि न छांड दई रे;
धिःक धिःक तोकु कहे त्रिविक्रम, विष्णुपद सही किन्हीं नहीं रे.
बालबुद्धि० ५

पद १२९ (राग-...-त्रिताल.)

बलिहारि तेरे वचन पर, बलिहारि तेरे वचन पर. (टेक.)
धर्मकि फरकी उठतहु तो मन, रहत रहत रैन दिवस बीत गये,
सोतो धीर गयें आगत हरन. बलिहारी तेरे० १

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जिनदाँ पेर किनरा, जिनदा मोहे हरि सही।
इनोंने करक नया नरा, डर कहूं नहीं. मुझे अब आन० २
जीवन्मुक्त भया मोक्ष, अब मेरे नहीं।
मेरी समयान्मा अब मेरी, निरगुण नहीं. मुझे अब आन० ३
सगुण निरगुण एक मान, विरह भया नहीं,
सगुण निरगुण देख्या हरि बिना ओर नहीं;
कहे त्रिविक्रमानंद एक, शिष्य गुरु नहीं. मुझे अब आन० ४

पद १८०. (राग इमनी.)

मैं देख्या दिलदार तेरा ख्याल समझाँ। (टेक.)
तुं आद्यां निरगुण सगुण भया समझाँ. मैं देख्या० १
पतन्या अविद्याके पेच ऐसी ज्यों उलझाँ;
करन लग्या हाय हाय भुल्या आदि कारलाँ. मैं देख्या० २
तुं कर मेरी खोजमें भया कहाँ;
तातें उत्पत्ति संहार भया सादी कारलाँ. मैं देख्या० ३
समझ पर्या सब मान मोहे ब्रह्म पाहिनें।
छुटा अविद्याका पास भया ज्ञान नवलें. मैं देख्या० ४
निरकुना मां वृत्ति भया ज्ञान गुन गुनें।
गया राग द्वेष मोह मोकुं आतम दरसनें. मैं देख्या० ५
मगन भया महाराज मेहेर करी अपनें;
धन्यो हुं धन्यो हुं यह शास्त्र समझनें. मैं देख्या० ६
कृत कृत्य भया हुं स्वामी तेरी मेहेरनें;
त्रिविक्रम नमस्कार करन भया याहालें. मैं देख्या० ७

पद १८१. (राग पूर्वी.)

प्यारे जु हरि नां विसारिये त्यांह नां विसारिये।
सुन रे जियरा सुख दुःख मनमें न धारिये. प्यारे जु० (टेक.)
अपने किये का गेनां क्यारे समझे मो नया नहीं कारियें;
प्यारे जु० १
सुख दुःख दोनों अंगमें पाई धीरज त्रिविक्रम धारिये.
प्यारे जु० २

पद १८४. (भैरवी.)

जागो भयो भोर, जागो भयो भोर. भोन बंध कमल मई मलिया देत।
भीन गये याम बांधे परोक्ष भयो विकसत ललित अंकुर।
जागो० (टेक.)
अपरोक्ष ज्ञान स्वामी कैसें जानुं लीजे तुम्हारी ओर।
जगत ज्ञान सत्य भव तु मोहे, तम्यमसीके जोर. जागो० १
अपरोक्ष ज्ञान भयो मेरे स्वामी, शोक मोह बिलाने चोर।
त्रिविक्रमानंद मुनि निरंकुश, सुखसिंधु हेत हाकोर. जागो० २

पद १८५. (राग [illegible].)

ज्ञानि दे नैन ज्ञानी दे नैन.
जीनु न जानु यद गुंथे मांहि विकसत चैन, मांहीं न ज्ञानि दे०(टेक.
चंचल मन इंद्रिय पुनि चंचल, लम्बोरे परमद सुख ऐन,
ज्ञानि दे० १
कांचनको मान धरत मन मिथ्या ज्ञानीके मांहि मोन।
त्रिविक्रमानंद सहज्ज कांचनका नाम रहित सुखदेन.
ज्ञानि दे० २

पद १८६ (राग [illegible].)

होजो कुरबान [illegible] [illegible] हू आयो, होजो कुर० (टेक.
[illegible] [illegible] [illegible] मारि भागा, होजो० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] होजो०
जागि [illegible] त्रिविक्रमानंद [illegible] आई,
[illegible] [illegible] [illegible] होजो० २

पद १८७ (राग [illegible].)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (टेक.
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] गुरु [illegible] [illegible] [illegible] त्रिविक्रम० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].
त्रिविक्रम [illegible] [illegible] मनुष्य देह [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] त्रिविक्रम० २

देह प्राण अरु मन विज्ञान, आनंदमें सो पातीये।
त्रिविक्रमानंद सबको साक्षी, दूरि करो सब जाती. मेरा नहि रे० २

पद १९२.

अब मेरी बात परी अद्वैत कहुमकी कोउ खुसी कोउ मांहीं।
नाद अनाहत कोउ गुन गावत, अर्क जवासा पानीमें मोंर
जोई. अब मेरी० १
मेरे मन गलय होत बनस्पती, जब बरसे तब हरिआई।
त्रिविक्रमानंद कहे सो गति भई, मेरी कहुं नाहिं कहुं बलि-
हारी. अब मेरी० २

पद १९३ (राग बिहाग.)

धीरज मन क्यों न धरे अनहोनी नहि होय; (टेक)
जादिन गर्भमें बुंद परी है, तादिन लिख्यो सो होय. धीरज० १
नाहि चिंता तहां चिंत करत है, कोनि सुनाई तोय;
चिंता कर रे हरि मिलनेकी, जाते भलो तेरो होय. धीरज० २
ज्ञानको फल मुक्ति लिख्यो है, सब उपनिषद जोय;
ज्ञान पायके विषको मांगे आत्महत्यारो सोय. धीरज० ३
ऐसो ज्ञानके सदा सुख लीजे, दुख कबहु नहि होय।
त्रिविक्रमानंद मनुष्य पायके, याते रहो जिन सोय. धीरज० ४

पद १९४. (राग एम.)

अरे मन बावरे तुं कहा मनका मान रे. (टेक.)
दुर्लभ देह मनुष्य तु पायो भूके मत यह दाव रे; अरे० १
श्वापदकु श्रवणता नाहि पशु आदिककुं अभाव रे,
एकादश अधिकार मनुष्य पुनि. मोक्ष चितंन जिन दाव रे. अरे० २
विघ्न हरन गुन दाता मानो, इनतें जियरा बचाव रे,
जो पुरुषोत्तम पायो चाहे तो, सब शास्त्र कुं मनाव रे. अरे० ३
उपनिषद गुरु मत [illegible], अनुभव युक्ति हाथ रे,
पक्षपातनें जो है विलक्षण, सोहि युक्ति लगाव रे. अरे० ४
सत-चित आनंद ब्रह्म जानिके, सोहि निगु मरि जाव रे,
सुनि विरकुद पायके ज्ञानी, तिनके वाके बजाव रे. अरे० ५
सोच नहि माखन हाथमें दियो, बाप वाके मो लाय रे,
जो जाने सो मौन धर मूरख, नहि तर मुख को खिलाव रे. अरे० ६
त्रिपुटि त्यागि जुदी होवे, त्रिपुटि लिये तु रहात रे,
सो तु त्रिविक्रम सबको साक्षी, सर्वातरात्मा कहाव रे. अरे० ७

[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible] १

[illegible]
[illegible]
[illegible] २

[illegible]
[illegible]
[illegible] ३

[illegible]
[illegible]
[illegible] ४

[illegible]
[illegible]
[illegible] ५

[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible] १
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] २

[illegible]

[illegible]
[illegible] १
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
[illegible]

पद १६८.

सुनके बाणीले मन मेरा इसक लागा लागा लागा रे। (टेक.)
इस्क बाजे [illegible] दुनियां मेली [illegible]. सुनके० १
[illegible] फकीरी, [illegible] देख के।
[illegible] फकीरी [illegible] मेली [illegible]. सुनके० २
[illegible] और [illegible]।
[illegible]. सुनके० ३

पद १६९.

[illegible] आनें तु [illegible]।
[illegible] मेरा. [illegible]० १
[illegible],
[illegible] प्रमाण. [illegible]० २
[illegible]।
[illegible] और [illegible] [illegible]० ३
[illegible]।
[illegible]. [illegible]० ४
[illegible]।
[illegible]. [illegible]० ५
[illegible].
[illegible]. [illegible]० ६
[illegible] है [illegible].
[illegible]. [illegible]० ७
[illegible]।
[illegible]. [illegible]० ८

[illegible] है [illegible]
[illegible]
[illegible]० १

[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible]० १

है समर्थीन कथाके महाजन, ज्यौं अलि भ्रमुज लागे लागे लागे।
गुरु० २
त्रिविक्रमानंद तैसेही जानो, मुहर्मुहु रस मागे मागे मागे।
गुरु० ३

पद २०२.

घटकी गईके येत रंग दैसा नाहिं। घटकी० (टेक.)
उमग्यो वैराग्य पिछे रस मैसा नाहिं, रंग धैसा नाहिं।
घटकी गई के० १
बिगड गया दूध फेर स्वादका नहीं।होत नाहि सभी काढे सो घडी गई।
अब क्या करूं इहाँ, घटकी गई के० २
माक राग सूर सुनि जैसे घटा दूर।
उतर गया सुर पीछे तैसा नाहि नूर. रंग धैसा घटकी० ३
संसार रम भोग जैसे आंधला कुआ।
त्रिविक्रम झगडा चुकाय कोई नाहि मुआ. रंग धैसा घटकी० ४

पद २०३.

किन पापीने मेरा जियरा बिगाडावे ; किन० (टेक.)
एक हरिकुं मैं देखेके हरखती दूधमें दहीं किने डालाये। किन० १
त्यज त्रिविक्रम संग भेद दरसीको जो चाहे प्राणप्यारावे; किन० २

पद २०४.

हाजर है तोभी नजर न आंवदा, (टेक.)
मांस नेत्र करी देखन चहत है,
मिथ्या गृहे सत्य नांवदा। हाजर० १
अमर त्रिविक्रम भय क्यों कोई, धंन्ना गुरु दरसांवदा।
हाजर० २

पद २०५.

मैं मूर्त किया घास तातें सगुल कहांउ। मैं० (टेक.)
जे कोई दीसत भगवान मेरा रूप लखाउं. मैं मूर्त० १
गुण गुणी भये तातें ताकों भेद जनाउं।
गुणीनें जो गुण दूर किये नाहीं देखाउं. मैं मूर्त० २
सोंवर्णमें जो घाट एक देह भासे।
सोंवर्ण तेज व दूर किये घाट विनासे. मैं मूर्त० ३

त्यों एक अद्वैत ब्रह्म सोतो द्वैत व्है भासे ;
सो लख ले तुं शिष्य एक रूप प्रकाशे. मैं मूर्त० ४
अहं ब्रह्मास्मि शिष्य बोल्या गुरुज्ञानतें,
त्रिविक्रमानंद सोहं ब्रह्म प्रमाणतें. मैं मूर्त० ५

पद २०६.

नारायण निज नाव संभारो,
जन्म मरण भय दूर निवारो. नारायण० १
देह इंद्रिय मन बुद्धिको गारो,
सत रज तम सब पापको मारो. नारायण० २
तातें विलक्षण स्वरूप त्रिविक्रम,
सोहं ब्रह्म कही जन्म सुधारो. नारायण० ३

पद २०७.

सदाहीं खुशाल मुक्त डोले, सुनी सांई जाने उस घटकी,
हो मारी हेली० १
राग द्वेष व्यापे नहि स्वप्ने, परमानंदमें हे रानी बुद्धि. हो मारी०२
महासागरमें सीप वसत है, मन मिलाप नहि लेता,
त्रिविक्रमानंद त्यों जगमांही वसुतरें,
दिल उनमें नहि देता. हो मारी हेली० ३

पद २०८ (धमारी.)

नाद ब्रह्म अकल गति तेरी नाद ब्रह्म० (टेक.)
सत सूर तीन ग्राम इक इसमें,
रचकन उनचास कोटि तान ताकें मींड होत तेरी. नाद ब्रह्म० १
मारुद अग्निलालुग कंठ नासिकातें,
प्रकार थोपले होत ध्वनी देतघेरी,
सत सूरके मुकाम त्रिविक्रमानंद कहे,
नादको नचार पार जेती मग मेरी. ब्रह्म नाद० २

पद २०९.

पैयां लागुं रे मन मोहनकुंजी,
जे कोई मेरे मनकी आने उन मंतनकुं. पैयां लागु० १
थेई थेई करुं उन आगे नाचुं, तननन तान ले,
हाथ साथ करि तिनाहिं रिझाउं तिन रामजुरुं. पैयां लागुं० २

आंखिनसे प्रत्यक्ष दिखाऊं, हरिगुन गाऊंगा,
निरंजनानंद अवधूत आपही प्रभु कहावे, दिया ज्योति० ३

पद ११०.

अलखकी आरतीमें प्राण पद लागा, देख्यो है मन निरंजन आपहीमें?
अखंड ज्योतसे सरस अधम उद्धारे सुरति निरंतर,
कहूं न जनम न मरन लीन हुआ आप है. देख्यो है० २
हूवा न देव दिन न देव निरंतर धाम भयो,
सत्य गुरु उपदेश श्रीगुरुका ज्ञानको दीप जगा दिये. देख्यो है० ३
निरंजनानंद कहे सारा पूजन देख आतमा ज्योति,
वहिपन प्रकट प्रपंच आंखिन लगाव धारन है. देख्यो है० ४

पद १११. (राग भैरव.)

गुरु महाराज, कीजिये पाप आरती दयाल देव दयाल दीन,
सुन्दर भुवन वय पुजारन आरती,
जहं जहं चरनके भक्त, गुरु० १
अन्दाज भगवान भजनको प्रकाश,
अन्धकारको आंधी छोड़ी भाई धन लिया,
कामदुघा बांधी भाई पूरन
कीजिये मन धारे धर्म काम मोक्ष संग. गुरु० २
ब्रह्मानंदको मांडे खेल, दीनबन्धु देव
जिसहूको भेटि लिये कर साधन संग,
निरंजनानंद बोलो महिमा कैसी कहे
कथा कथा न जावत मन संग. गुरु० ३

पद ११२

धाय धरे चरन मेरे, अन्तर मगन मेरे,
तुम महाराज कहां कहां जाउं,
प्राणहुके प्राण नाथ बुद्धिके निधान धाम,
तेरो चरण छांडि कहां कौनको हु जाउं. धाय धर० १
गजनके राजा तुम देवनके देव प्रभु,
तुम महाराज औरकू मैं शीश नहि नाउं. धाय धर० २
निरंजनानंदको मो टेक एको गुरुनाथ,
दिनरात मो दीजे दान चरणन पाउं. धाय धर० ३

स्यों एक अद्वैत ब्रह्म सोतो द्वैत व्है भासे,
सो लक्ष है तुं शिष्य एक रूप प्रकासो. मैं मूर्त० ४
अहं ब्रह्मास्मि शिष्य बोल्या गुरुज्ञानसें,
त्रिविक्रमानंद सोहं ब्रह्म प्रमाणसें. मैं मूर्त० ५

पद २०६.

नारायण निज नाम संभारो,
जन्म मरण भय दूर निवारो. नारायण० १
देह इंद्रिय मन बुद्धिको गारो,
सत्व रज तम सब पापको मारो. नारायण० २
तातें विलक्षण स्वरूप त्रिविक्रम,
सोहं ब्रह्म कहो जन्म सुधारो. नारायण० ३

पद २०७.

गहाहीं खुशाल मुक्त झोले, सुनी सोई जाने उस घटकी,
हो मारी हेली० १
राग द्वेष व्यापे नहि व्यसे, परमानंदमें है रानी बुद्धि. हो मारी० २
महात्मागणमें सोय बसत है, मन मिलाप नहि लेना;
त्रिविक्रमानंद स्यों जगमांही बसुनरें,
दिल उनमें नहि देना. हो मारी हेली० ३

पद २०८ (परजाओ.)

नाद ब्रह्म अकल्द गति तेरी. नाद ब्रह्म० (टेक.)
मन गूर तीन ग्राम इंक हमसो,
रचकन उनचास कोटि तान नाके मींड होत मेरी. नाद ब्रह्म० १
नाग्द अग्निवायु कढ नाभिकातें,
प्रकार धोष्तें होत ध्वनी देतवेरी;
मन मूर्छ मुकाम त्रिविक्रमानंद कहे,
नादको नपार पार जेती मन मेरी. ब्रह्म नाद० २

पद २०९.

पैसो लागुं रे मन मायनकुंओ,
जे कोई मेरे मनको जाने उन संगलगुं. पैसो लागु० १
धरुं धरुं करुं उन धागे माथुं, मनजन्म नात हे;
हात मात करि निवाहि दिखाई तिन मनजुई. पैसो लागु० २

अविनाश अम्बर देखाई. हरिगुन गावनरूं।
चिदविलासानंद सद्गुरु स्वामी पूर्ण पुरुष. देवा साईं० ३

पद ११०.

आजको मनरंजन सब सब साज, देखो है आज चितवन, आनंदित,
आजच वृन्दावन श्याम मदन मोहन पूर्ण लियो,
[illegible] न [illegible] अति पुरान साधन थे. देखो दे० २
हमा न देय दिन न देय निर्मल सब गोपाल,
[illegible] कहां दे० ३
चिदविलासानंद मरी [illegible] पुरुषि होय सदाई [illegible]।
[illegible] देखो दे० ४

पद १११. ([illegible])

पुन्य महाप्रभु, [illegible] देव [illegible] संग,
[illegible] भुवन [illegible] पुजावन [illegible].
[illegible] संग, पुन्य० १
[illegible] प्रकाश,
[illegible] भव दिन,
[illegible] गुरुन
[illegible] संग. पुन्य० २
[illegible] देव
[illegible] संग,
चिदविलासानंद [illegible] महिमा [illegible]
[illegible] संग. पुन्य० ३

पद ११२

धाय धरं चरन [illegible], [illegible]।
तुम [illegible] कहां कहो जाउं,
[illegible] धाम,
[illegible] गाउं. धाय धरं० १
[illegible] प्रभु,
तुम [illegible] नहि गाउं. धाय धरं० २
चिदविलासानंदजी [illegible] गुरुनाथ,
[illegible] दान परमपद पाउं. धाय धरं० ३

त्यों एक अद्वैत ब्रह्म सोतो द्वैत व्हे भासे;
सो लक्ष ले तुं शिष्य एक रूप प्रकासे. मैं मूर्त० ४
अहं ब्रह्मास्मि शिष्य बोल्या गुरुज्ञानतें;
त्रिविक्रमानंद सोहं ब्रह्म प्रमाणतें. मैं मूर्त० ५

पद २०६.

नारायण निज नांव संभारो,
जन्म मरण भय दूर निवारो. नारायण० १
देह इंद्रिय मन बुद्धिको गारो,
सत रज तम सब पापको मारो. नारायण० २
तातें विलक्षण स्वरूप त्रिविक्रम,
सोहं ब्रह्म कहो जन्म सुधारो. नारायण० ३

पद २०७.

सदाहीं खुशाल मुक्ता डोले, सुनी सोई जाने उस घटकी,
हो मारी हेली० १
राग द्वेष व्यापे नहि स्वप्ने, परमानंदमें हे रानी बुद्धि. हो मारी०२
महासागरमें सीप बसत है, मन मिलाप नहि लेता;
त्रिविक्रमानंद त्यों जगमांही बसुतपें,
दिल उनमें नहि देता. हो मारी हेली० ३

पद २०८. (धनाश्री.)

नाद ब्रह्म अकल गति तेरी; नाद ब्रह्म० (टेक.)
सप्त सूर तीन ग्राम ईक इसमें,
रुछन उनचास कोटि तान तामें मींड होत तेरी. नाद ब्रह्म० १
सारद अरितालुग कंठ नासिकातें,
प्रकार ओष्टते होत ध्वनी दंतप्रेरी;
सप्त सूरके मुकाम त्रिविक्रमानंद कहे,
नादको नवार पार जेनी मत मेरी. ब्रह्म नाद० २

पद २०९.

पैयां लागुं रे मन भावनकुंजी;
जे कोई मेरे मनकी जाने उन संतनकुं. पैयां लागु० १
थेई थेई करूं उन आगे नाचुं, ततनतत तान लें;
हाव भाव करि निनाहिं रिझाउं तिन समजुकुं. पैयां लागुं० २

कंचनका मन्दर देवाधू. कंचनका मानवदू.
निष्कुलानंद कहते गाती सूरी तनदू. पैया लाग्युरे० ३

पद ३१०.

छाडो प्रभातिन काल सब काम, देखो ये नाव निकरि, भारतैर!
धापक दरदस देवन नाम कारीद सूरी तिरदो।
बाहु न स्नान न माल पैर सुजाम मानंद है. देखो ये० २
एता न देव दिन न होन निर्मल करते सबेन।
पास दास उपरांत सीधियारा रहदो शीय नजर दिये. देखोये० ३
निष्कुलानंद कहे बारा पूरिम दाम कांतरी जोरी।
कपिन दुर्गम दासन काविन लगाय सदन है. देखो ये० ४

पद ३११. (भैरव आसाह.)

पुन्य महातन. कीर्तिन पाप जाईगवो. बहाव देन मान संग।
शुजान भुवन जप पुजापन जगतारी.
सर्व मदैं बचावे सबंग। पुन्य० १
अध्यास जगादन प्रजनी प्रकाशन,
अध्यागरको धरी दोरी करे सवा दिन।
कायदुवा कोटी सारैं पूरन
कोटिन मन धर्म अर्थ काम मोक्ष संग. पुन्य० २
कोशगाडीको मीठे बेन. जीवनमुक्ति देन
जिवहुको करि दिन करे सत्संग संग।
निष्कुलानंद कोतो महिमा केती कहे
कथा कथा न धरत स्नत रंग. पुन्य० ३

पद ३१२.

धाय धरे चरन मेरे, असरन सरन मेरे,
तुम सर्डा अन्यतु कहां कहां जाउ.
माणपुके प्राण नाथ दूसरोके जियेना धाम,
मेरे जग छांडि काहां कौनको हु गाउं. धाय धरे० १
सजनके माथा तुम देवनके देव प्रभु,
तुम सर्डा ओरकुं तो दीसत नाहि आउं धाय धरे० २
निष्कुलानंदकी तो टेक एसी गुरुनाथ,
देखो तो दीजे दास परमपद पाउं. धाय धरे० ३

अविनाशी प्रताप देखाड़े, हरिगुण गायकई।
त्रिविक्रमानंद स्वामी मानो मूर्ति ठाकुर,   देखत मनसुख०   ३

पद ३१०.

मनमोहन आनंदघन प्रभु मन मान्य, देखो रे आज निरखो आनंदसे।
प्रथम मूरतवंत सुंदर श्यामल आनंद मूर्ति निरखो,
मधु के समान श्याम सुंदर दिव्य कुसुम गावत है.   देखो देख०   २
भूत न देव जिन न देव निरंजन आप ही स्वामी,
काम क्रोध उपराति नर्तकि शामरी धोल जनक मिले. देखो देख० ३
त्रिविक्रमानंद कहे बाला सुंदर रंग नहीं कोटी,
मंदिर उपदेश शब्द व्रजवंत समान श्याम है.   देखो देख०   ४

पद ३११. (राग धनाश्री.)

सुन्दर वदनारविंद, गोविंद आय आनंदकंद सदाय देत सुख शरण गोविंद,
सुन्दर भूषण अंग भुजबल अवतारी,
जहं तहं मनमोहन सोग।   सुन्दर०   १
अवतार अवतारन प्रगटो प्रभानाथ,
अपरंपारकी गति कोई नहि जान तिन।
बालमुकुंद धीरजी धांई पूरन
गोविंद मन धर्म अर्थ काम मोक्ष देत   सुन्दर०   २
कांतारनिको मोहि रंग जीवनमुक्ति देत
त्रिपुरको फिरि दिन करे साधन योग।
त्रिविक्रमानंद गोरख महिमा केती कहे
कहा कथा न पूरन रत सदा   सुन्दर०   ३

पद ३१२.

धाय धरो चरन मेरे अवतार स्वरूप अरु,
तुम सदा भगवंतु कहा कहाँ जाउ
प्राणपति प्राण नाम मुक्तिके निधान धाम.
मेरो प्रभु छोडि कहाँ कौनको हु जाउ   धाय धर०   १
गजराज गज्या तुम देवनके देव प्रभु
तुम सदा अंतर्मु तो नीरज नहि जाउं   धाय धर०   २
त्रिविक्रमानंदको तो देख दर्शन गुरुनाथ.
देवनको तो देखि दान परमपद पाउं   धाय धर०   ३

पद ३१४. (अनारांवरा)

विरहन दीनार हलाहल भाग करी,
कलेवरमा बैठ मो मर्ग भवन मास. विरहन० (टेक.)
सुख देशु बलिरामे नट मिल
मो प्रकट किम हासि करत मांगो हलायो प्राण. विरहन० १
स्वरूप विरहम छाने मनमहोंचि,
अनुकूलताडु मर्दाडिन विम हारिणाम,
भवाधि कविवरन भायो सिविधमानेद
मार हुमारेंषु पूर्ण हाई प्राण. विरहन० २

पद ४१८. (राग कल्याण.)

प्रेम प्रवाह गुरुनो वर्षमित कोमल मोदी,
मनमा मूर्ति काने कारण मोदी. (टेक.)
प्रीत छे कई भांती होसी मुखे परमात्मो पाये थोई.
सब लाल भावेद भणेद मारो. प्रेम प्रवाह० १
मीन भाम मांही मांग विविध करी जे, भोगा मान मे
विराजे भासी दोनें विलास।
विविधआनेद कर मोहन सुन्दरो भोट, गुरुनी कृपामें
समझाये हे ध्यान प्रेम प्रवाह० २

पद ४२१. (रेखता.)

आराम मेरे जियकुं अब काहे कहांयु होये।
धाम लार जो मोंगामी देहमांही विलोवे. आराम० १
जप तप तीर्थ प्रायश्चित बहु करि जोवे।
मंदे हियमांही हारना कुं कादु मेन पावे. आराम० २
स्याम्परागर शास्त्रमत मीमान धेध विचारे,
वेदांतिक अद ज्योतिष सुन्य वाद करी हारे. आराम० ३
सगुण उपासना बहु विधि करी ठानी।
चार मुक्ति मांहे तांकी परसुभांन करी जानी. आराम० ४
नव निधि अष्ट सिद्धि पायमें मो मोक्ष मानी।
माया भास के जुदे विनेमें देहनादि हानी. आराम० ५
जप भाई मन हास मुने सेराय गया नाही।
दीनबंधु दया करी मही हाथ मेरा पाही. आराम० ६
शिष्य हेयको लखी गुरु ऊपर दीनदा।
विविधआनेदकुं मो शिष्य करी लीन्हा. आराम० ७

पद २२०.

संभार संभार राखे क्या दरपण में, मुख देखतही अभाग;
संभार० (टेक.)
चमडी उपर तेल लगावत, हरि न भजे अभाग. संभार० १
अंते तो देहमें आग लगेगी के खावेंगे काग;
त्रिविक्रमानंद कहे नरदेहमें जाग सके तो जाग. संभार० २

पद २२१.

क्या गुन गाउं मैंतो सरस्वतीके जु; क्या गुन० (टेक)
सरस्वति माई तेरी बडाई वरनी न जाई ते जो करी;
क्या गुन० १
तिमिर उडाय दयो मनकोरी, जूठो सांचो सूझन लाग्यो;
जबतें कृपा भई मो पररी; क्या गुन० २
त्रिविक्रमानंद दीदा नाय कहे, तेरी सेवा मोतें कछु न बनीरी
क्या गुन० ३

पद २२२. (भैरवी.)

भाग जगीलो मेरो भाग जगीलो, सतगुरुको दिदार भईलो.
भाग जगीलो० १
मनके मनोरथ पूरण भईलो. त्रिविक्रमानंद दुःख दूर गईलो.
भाग जगीलो० २

पद २२३.

लगनकी बतियां उधार नही जे, लगनकी० (टेक.)
मैं तेरे पर वाहन छिजे, लगनकी० १
कुं कुलवंती नारि सांयरे सीस दई सालो पोर न दीजे;
त्रिविक्रमानंद दुन्यों न रहे, सास ज्ञान सो तो नाटकी भईजे.
लगनकी० २

पद २२४.

सोदा करले सार यौरी सोदा करले सार.
आयेका फल येही हेरी करले राम विचार. सोदा० १
कहे त्रिविक्रमानंद सत संगत,
मिटि येगी उतरो पार. सोदा० २

पद ११५. (भैरव-चौताल.)

उदे भयो भान जाके नवधा भक्ति भई तिमीर;
अज्ञान भयो दूर;
परोक्ष प्रभुको भजो अंतर कसाय धोये सुबुद्धि भई है प्रकाश. उदे भयो० १

श्रवण परीक्षत कीरतन नारद प्रहलाद जगमें उजास;
रुकमणी पादसेवा अर्जुन गोपी सख्यभाव अर्चन वंदन हनुमंतदास. उदे भयो० २

आत्मसमर्पण बलिराय किन्हो नीके भक्तिवस देवनके द्वैध भये दास;
एक एक भक्ति करी त्रिविक्रमानंद, तिरे नव जाके अहा सुख तास. उदे भयो० ३

पद ११६.

नहीं वैरी मेरा जगमें कोई, नहि वैरी० (टेक.)
अंतरजामी सबमें देख्या, राग द्वेष दोउ गहे खोई;
नहि वैरी० १

त्रिविक्रमानंद आनंद बरस्यो, काम क्रोध सब गये बिलोई.
नहि वैरी० २

पद ११७.

वरी तत्वबीजके देख्या हम नाहि दूसो न सुमलं ; (टेक.)
न देवो न कीट न मनुष्य गंधर्व न अश्व दूसो दीसे.
वरी तत्वबीज० १

न भूत न पशु स्थूल इंद्रिय न लिंग न प्रकृति मायामय.
न हाड मांस जीविका वरी तत्वबीज देख्या सह.
वरी तत्वबीज० २

कहे गुरुदेव सुनो शिष्य मेरा ब्रह्मरूप निरवयव
अज अद्वय अर दाघ अमर आत्म अखंड
वरी तत्वबीज० ३

अप्रमेय अखंड अकल लक्ष अजर अनुभव परमात्म
कहे त्रिविक्रम वो स्वरूप जानो निज रूप सुखकर
वरी तत्वबीज० ४

पद ११८.

[illegible] मेरी तुं [illegible] [illegible] [illegible] करे [illegible],
मेरी तुं० (टेक.)

[illegible] तुं [illegible] [illegible] मेरी, [illegible] तुं [illegible] नहिं [illegible];
सच्चिदानंद [illegible] ये [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible],
मेरी तुं० १

पद ११९.

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गुरुने [illegible] आनंद [illegible] [illegible]. [illegible]० १
सच्चिदानंद [illegible] कृपा करी, [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible]० २

पद १२०. ([illegible])

[illegible] [illegible] [illegible] मेरी [illegible] [illegible] मेरी [illegible] [illegible], [illegible]०
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] सच्चिदानंद [illegible] [illegible]. [illegible]० १

पद १२१. ([illegible])

आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible]० (टेक.)
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible]० १
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आ [illegible]० २
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ३
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ४
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ५
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ६
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ७
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ८
[illegible]
[illegible] आ [illegible]० ९

पद २१९. (आरती.)

जय सर्वेश्वर देव, दर्शन सेवकने दीजे;
भक्त समारो आवी, शरणांगत कीजे. जयदेव० १
सामी दिनकर ने दीप, वाम दक्षिण गाजे;
तारागण चमकारो, आरति सिध्द छाजे. जयदेव० २
सहु ज्योतिमां ज्योति, एक छे मार्गे;
दीठुं नथी कोइयाने, जोयुं निरधारी. जयदेव० ३
बीजी सामग्री नहि, हुं तो थयो हारी;
सर्वेइं ब्रह्म पद, जोयुं वीचारी. जयदेव० ४
तुं सहुने आपे छे, तुजने नथ आपे;
तुं तारे महिमाथ, सहुने परमापे. जयदेव० ५
सगुण ब्रह्म छे तुंज, पुजवाने मारे;
इंद्रियने सुख थाय, दर्शन दे त्यारे. जयदेव० ६
गुणने प्रकाशे तुंज, निरगुण ते सारुं;
निंदा करवा मनडुं, नथि थातुं मारुं. जयदेव० ७
ब्रह्मा विष्णु महेश, नामे भेद कीधो;
ए समजीने हुं तो, निंदाथी बीधो. जयदेव० ८
सगुण निर्गुण भेद, (गणी) निंदा जे करशे;
तेना मुखमां कीडा, जमराजा भरशे. जयदेव० ९
प्रतिबिंबना मुखडाने, कहिये सारुं नरसुं;
छे पोताना मुखमां, सारुं बीगडसुं. जयदेव० १०
स्तुति करिये बिजानी, निंदा पोतानी;
ए समजी त्रिविक्रम, गइ रेच्चातांणी. जयदेव० ११

पद २२१. (आरती बीजी.)

जयदेव जयदेव, थाय ति एम साहुः आरति,
ब्रह्मादिकने अगम्य, बल्ल थि आराधुं. जयदेव० १
कहं नारदजी भजने, महु कोइ आगावे;
तत्व न जाणे कंइ विधि, अवतार गाय वाधे. जयदेव० २
तुं तो एक देह अनेक, निर्णय तत्व तारुं;
सावयव देह समजी, लागे मन म्हारुं. जयदेव० ३
तुंनो शुद्ध देह मलिन, स्वयं ज्योति झलके;
देहनि जडता जोई, मन म्हारुं थडके. जयदेव० ४

पद ३१८.

चालोनी घेरा दरशन करिये, त्यां भूदेव मानी संततणुं;
जेना मनमुख आगां पडे पडे, अश्वमेध फल पाये जी. १
तीर्थ शिरोमणी संतज कहिये, त्यां मनना मेल धुवाये जी. २
गंगा पाप सिस्मीर ताप दैन्यं कल्पतरो रे हरी;
पापे तापने दीनता हरे, शिव दाढीने करे हरी. ३
संतनो महिमा कयी पेरे कहिये, अल्प मति छे म्हारी जी;
सदा संतनां चरण कमलपर त्रिविक्रमने नाख्यो वारी जी. ४

पद ३१९.

समुझ रास्ते भुलने हानी पानीकी;
नरे से जात जिंदगानी. समुझ रास्ते० १
मनुष्य जन्मनो फेर फेर नाहि,
योगि त्रिविक्रम कर गुरु ज्ञानी. समुझ रास्ते० २

पद ३२०.

कहा कमी है मुरारी मेरे धाममें. (टेक.)
विश्राम करो क्युं स्वामी मेरे काहा अटक्यो कोई काममें,
त्रिविक्रमकी मटक मुमायो, पाछे फरक पडे आराममें.
कहा कमी है० १

पद ३२१.

मेरी गति कोन स्मरी हां.
होरी हमी सो तो भस्म भई. मेरी गति कोन० १
या होरीने सब जग जायाँ, मेरे खांच नाही.
गोवानंद मन आश्चर्य समझी, मेरे मन कछु नाही.
त्रिविक्रम आनंदमें डोले,
जहां काल गति नाही मेरी गति कोन० २

पद ३२२.

मेरी मति फेर सर्व को है, हेत हांसिम दाहन है,
सब फेर सकंको है.
त्रिविक्रम भुमा पद मे रहे, सतो सत्य कहो. मेरी मति० १

देपाईन.

—:o:—

पद २४६.

प्रथम समरों श्रीगणपति देवा जी, समरुं शारदा माता रे,
धारी धारी आडं अखंड गुरुने, ओळखो जी,
गुरु आगे पार न पायो, पार न पायो जिवन टाकोर नागोजी. (टेक.)
गगनमंडळमां एक बाळक खेले जी, बाळकरुपे सवायो रे. धारी० १
अमी आसमानने मूळ विना मांड्यां, मननो थांभलीए टेरायो रे. २
सुनशिखरपर एक अलेक अखाडो, दरसनज विरले पायो रे. धा० ३
झगमग ज्योत त्यां झाकझ घरमें, घरमें ते नूर सवायो रे. धारी० ४
दोई करजोडी देपाईन बोल्या, साधुसंतो वेडलो सवायो रे धा० ५

देवीदास.

—:o:—

पद २४७.

आगम टोरला उडिया, सन्तों सदगुरु चरणे पडिया
कांई सदगुरुचरणे पडिया, सो नाडिया गुन डिम्बर
गढ भांडिया (टेक.)
घरमें माल अमुलक भरिया, और टोर सबघडिया.
जन्मगुप्तारमा सदगुरु भेट्या सो फेर घाट टे घडिया सन्तो० १
तुझमां देव नम्रतापर मेरा सो आगम अंतरमें गाडिया
सतगुरु सर्मे मन ठराया सो मनका मेगमण मारिया सन्तो० २
आघरण अष्टकमळमें ऊपर सत चितन पग धरिया
सुनके पार सर्वां घट सरखा सो चतनसागर भरिया सन्तो० ३
परिब्रह्म पुरण जब पेख्या त अनुभव ऊपर आंडिया
देवीदास सदगुर परताप सहज बावन भरिया सन्तो० ४

पद २४८

नव वाकगाथी न्यारा न्यारा नव बाव गाथा न्यारा
सम गुणगम ज्ञान विचारा न्यारा नव वाव गाथा न्यारा टेक
पर भ्रम दाबन स्वरूप रूप सत गत पाना निरंजना
मन बुद्धि चित्त थार अहंकार ... ... निरंजना ... ...

हृदे उमंग रंग केसरको, आशा अतर लगैहों।
अबिर गुलाल सनेह दीलको, उनहींपै बरसैहों.
शीशनकुं चलि जैहों. शिवके शरनागति० २
शिवपदमें अनुराग फागमें, निज मति नारि नचैहों।
रंगभीने पग तिरछि पियाके. मन मधुकरको लगैहों.
उतर भवसागर जैहों. शिवके शरणागति० ३
देवीसहाय जोग जपके फल, शिवहि समर्पि सिद्ध हों।
पाप जगाय बीचकारी करी, हर बिमुखनको लगैहों
दास शंकरको कहैहों. शिवके शरनागति० ४

पद २५२. (काफी.)

शिवसों न सनेह लगायो. (टेक.)
गर्भवासमें जठर अग्निमें, जो प्रभु तोहि बचायो
ताको नाम भूलि गयो पामर, नितकाहकाम बढायो
वृथा जननी अंग आयो शिवसों न सनेह० १
परम मलीन करत निशिवासर सतसंगत बिसरायो
गायो शठ परनार निरखिके लपट नाम धरायो
मूढ मन लाज न लायो। शिवसों न सनेह० २
संत पतित पवित्र किय शिव आय अमरपद पायो
तिनहुंसे मोहि अधम जानिके दीनबंधु बिसरायो
[illegible] शिवसों न सनेह० ३

धर्मदास

१

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

धूप छाया उष्ण नाहीं, बरसे नाहीं नीर. जपो० ३
बाल तरुन वृद्ध नाहीं, त्रिगुण ताप शरीर. जपो० ४
करें आनंद निर्मळ मुक्ता, गये सुक नीसीर जपो० ५
मुकुट देके भिट होय बैठे, ओढन अंबर चीर. जपो० ६
मानक जोत अनुप अस्मानों, रगा भाग शरीर, जपो० ७
धरमदास सतपुरुष पाये, करम कागद चीर. जपो० ८

पद १५८.

सबद केरा अमरलोकसें हम चली आए
आ ए जगत मझारा हो; (टेक.)
जीव दुखी देखी संसारा, ता कारण पग धारा हो. सबद० १
सही छाप परवाना लाए, समरथके कडियारा हो;
दस मुकामकी भक्त दिढाई, चौका पान विस्तारा हो. सबद०२
बस बियाली थाना रोपा, जंबुद्वीप मझारा हो;
बारे पंथ चलेंगे आगे, घर घर बोध पसारा हो. सबद० ३
गुरुचेला जब एक न उबरे फिर फिर गर्भ मझारा हो;
वचन बंसका बीरा पीवे, तब पुनि होय निवारा हो. सबद० ४
नेरे पीछे चले राजधानी. चडामणि अवतारा हो.
उनकी देह छाया नहि कोई, देह विदेह अपारा हो. सबद० ५
उनके आगे जोग गत चलही, राज नेत मिटि जाई हो;
पांच स्वादकी इच्छा नाहीं, सो गति सब आई हो. सबद० ६
पारस पान तबी पुनि उगे, जुग निद्रा मिटी आई हो;
पांच हजार पांचसें बीते, तब सत्त चाल ठेराई हो. सबद० ७
बारे पंथ मिलेंगे आई, छांड कपट चतुराई हो;
नहि गुरुशरणे मनकी करणी, कैसे हंस कहाई हो. सबद० ८
है कोई संत विवेकी शूरा, सुनत मिलेंगे आई हो;
जबलग कोल पीवे नहि आई, तबलग भेद छुपाई हो,
कर सिर उतार मिले जो आई, ताकुं देह लखाई हो. सबद० ९

धीरो.

—:o:—

पद १५५.

मलक ले लागी रे, जागीने जो घुंघटमां;
भ्रमणा सर्वे भागी रे, सोहागी मळ्या उलटमांजी. (टेक.)
अंबाडीए गजराजने गळियो, घोडाने गळी गयुं जीन रे;
चरन उपर घाड सूतार्जी, पण समदरने गळी गयां फीण रे;
ससे सिंहने धर्यो रे, शार्दूलने नांख्यो पटमां. अलक० १
आंबाडाळे नाळियर सळग्यां कदळीए केरांनी लूम;
नागरवेले द्राक्ष बिजोरां, पण शोभा थनी छे अति गूढ.
गगन शेहो घटमां रे तेनां दूध पीधां सटमां. अलक० २
पावक वरसे ने पथ्थर भींजे चोदश हो गयुं पाणी;
ए पाणीमां देवी देवता बुड्या राजा रंक राय राणी रे.
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर बुड्या जीर्ण बुड्या हाटपटमां. अलक० ३
जनकादिक घरमां चिन्हा गोरख दत्त कबीर.
एज डहाना वाशी शुकजी धारोदास कबीर.
जायबमुनि माणे रे बना मन मटमां. अलक ले लागी० ४

पद १५६.

मन मळे मारा रे त्यार अरमनी मायर कोर
नाव नदी तट रे त्यारे मार्गो कागज मेर (टेक.)
[illegible]

विना पुत्रथी दुःखी थयां, मालम नहोतुं पतुं धंन;
जळविना तलसे माछली, तेम हरि विना तलसे मंन,
धन भरपनमां भूल्यो रे, आत्माने चिन्यो नाहि. पितानुं० १
समजणविना मकरो माथना. दमके दिन ने रात;
सिंहने साथे मध गन्युं. पेम करी आवे हाथ,
मरजीवा मध पीने रे, कायरनुं काम नथी. पितानुं० २
कासीए जइने करवत मुकावो, खोळी आवो चारे धाम;
वन वन हींडे भटकतो, तारी देहमां आतम राम,
चेती लेजे धीरा रे, काची काया छे ने नथी. पितानुं० ३
नमे नमाज दिलमां सपासी तुं जो नाभि कमळपर धाम:
ओहं-सोहं शब्द भितर वासिया. पत्र होगे से दूजा लाल,
दास धीरो कहे छे रे क्यां कहुं वात कथी. पितानुं० ४

पद १८०.

दुनियां छे रे दीवानी रे, घड मेली थाय पूजे,
दृष्टा देव जेने रे, मुरखने नव सूझे दुनिया छे० (टेक.)
शिव नहि जेने शिव करी मोने पूजे काष्ट पाषाण
चेतन [illegible] ना आगळा पशु जगत छे अजाण
अनमळ अजवाळे रे पारसमणि नव सुझे दुनिया० १
[illegible] नाथ जळमा [illegible] पाक शीश.
[illegible] करी तुंजो, [illegible]
[illegible] दुनिया० २
[illegible] जळमा [illegible]
[illegible]
[illegible] दुनिया० ३
[illegible]
[illegible] ४

[illegible]

[illegible]

पंच तनूके दरगा अंदर, आलफ नामका सिक्का है;
अयन अली गुलचमन खुला है, बिन देखको धक्का है. रगमें० २
बेचुन बेच गुन निरंजन, बेगुमान्तुं देगा है;
बेनमनके दीद फर्मादपे, सो एक आशक पक्का है. रगमें० ३
दास नवलका पीर आवलिया, नागमेर घली याका है;
उन पीया मेहरमसो वानो, नयी नाम विठ्ठलका है. रगमें० ४

पद २६४.

सुनके गुन निर्गुनकी वातां, म्यायु-संत कैलाता है,
अर्थ छोड़के अनर्थ करता, पोथी वांच सुनाता है. सुन० १
क्या निर्गुन पोथीमें बैठा, फेर कव तुझे नहि पाता है;
सच्चिदानंदकी खबर न जाने, झूटा दिल बहेलाता है. सुन० २
क्षर अक्षरका खोज दिये बिन, अजर नजर नहि आता है;
ज्ञान ध्यान निर्गुन निरंजन, मनगुरुनाथ बताता है. सुन० ३
अमृत कहे सो कोन अमर भया, वीष कहे कोइ मरता है;
ऐसा पंडित नित रट पोथी, वांच वांच पस्ताता है. सुन० ४
सच्चा सत्गुरु नाथ निरंजन, भवभंजन दुख हरता है,
दास नवल कहे उनकी कृपासें, तनमनमें नाथ सुमरता है.सु०५

पद २६५.

फकर मकर हम नहि समजते, सीना साफ फकीरी है;
आलक नाम अलाका आशका, आवर मरक मंजुरी है. (टेक.)
लकीर उपर मनद फकीरी, मुकते अंदर मुरदान है;
शारदा कुरना दिदार होरा, मेहेरम मेरा दिखता है. फकर० १
मांई महंमद दिलके अंदर. जो देखे सो सच्चा है;
अयन अली चश्मोंके अंदर, नूर नबीका बरस्ता है. फकर० २
बेचुन बेच गुन बेगुमा, वे ममन वे भारी है.
दास नवलका सलाम सींमदा लायलाम हाजूरी है. फकर० ३

नवीक.

—:o:—

पद २६६.

क्या जाने घरभोंदु, अपनी गुरुकी निशानी रे;
ये तन अंदर झुले कलंदर फकिर सदा निर्वानी रे. (टेक.)

तूं बधया लादे बैल भरे जो पूरब पछम जावेगा,
या सूद बढ़ाकर लावेगा या टोटा घाटा पावेगा;
कज़ाक़ अजलका रस्तेमें जब भाला मार गिरावेगा,
धन दौलत नाती पोता क्या एक कुनबा काम न आवेगा.
सब ठाठ० ३

जब चलते चलते रस्तेमें येह गौन तेरी ढल जावेगी,
एक बधया तेरी मट्टीपर फेर घास न चरने आवेगी;
येह खेप जो तूंने लादी है सब हिस्सोंमें बट जावेगी,
धी पूत जंवाई बेटा क्या बंजारन पास न आवेगी. सब० ४

येह खेप भरे जो जाता है येह खेप मियां मत गिन अपनी,
अब कोई घड़ी पल साअतमें येह खेप बदनकी है कफनी;
क्या थाल कटोरे चांदीके क्या पीतलकी डीबया ढकनी,
क्या बरतन सोने रूपेके क्या मट्टीकी हंडया अपनी. सब० ५

येह धूम धड़का साथ लिये क्यूं फिरता है जंगल जंगल,
एक तिनका साथ न जावेगा मौकूफ हुआ जब अन्न और जल;
घरबारी अटारी चौपारी क्या खासा नैनसुख और मलमल,
क्या चिलमन परदे फर्श नये क्या लाल पलंग क्या रंग महल.
सब ठाठ० ६

कुछ काम न आवेगा तेरे येह लाल ज़मुर्रद सीमो ज़र,
जब पूंजी बाटमें बिखरेगी फेर आन बनेगी जान ऊपर;
नक्कारे नौबत बान निशां दौलत हशमत फौजें लशकर,
क्या मसनद तकये मुल्क मकां क्या चौकी कुरसी तख्त छतर.
सब ठाठ० ७

क्यूं जी पर बोझ उठाता है इन गौनों भारी भारीके,
जब मौतका डेरा आन पड़ा फेर दूने हैं ब्यौपारीके;
क्या साज़ जड़ाऊ ज़र ज़ेवर क्या गोटे थान किनारीके,
क्या घोड़े ज़ीन सुनहरीके क्या हाथी लाल अंबारीके. सब० ८

मगरूर न हो तलवारों पर मत फूल भरोसे ढालोंके,
सब पट्टा तोड़के भागेंगे मुंह देख अजलके भालोंके;
क्या डब्बे मोती हीरोंके क्या ढेर खज़ाने मालोंके,
क्या बुक़चे ताश मुशज्जरके क्या तख्ते शाल दुशालोंके.
सब० ९

क्या मखमल मशरू शबनमाना हुए मस्त मेरे तनका हुए पोला,
तू इसे कफन देखाना हय गा तेरि गोरने मुंह खोला।
क्या ऊंचा मरकद कद बड़ी क्या बुर्ज कंगुरा अनमोला.
गर काट गरहकन्दा माप किला क्या शीशा दारू और गोला.
सब० १०

हर आन नफे और टोटेमें क्यों मरता फिरता हुवे बन बन,
टुक गाफल ऐ दिल इस मान भगा हुवे साथ लगा तेरे दुश्मनः
क्या लौंडी बांदी दाई दूवा क्या बंद भंडया नेक चलन,
क्या मंदर मसजद तालकुवें क्या घाट सरा क्या बागचमन.
सब० ११

जब चलते फिराकर चाबुकका येह बैल बदनका हांकेगा,
कोई नाज समेटेगा तेरा कोई गोन सिये और टांगेगा;
हो ढेर अकेला जंगलमें तू खाक लहदकी फांकेगा.
इस जंगलमें फिर आह नजर एक भिंगा आन नझांकेगा;
सब० १२

५. ७१५. (गजल.)

जब मौत अजलका आ पहोंचा टुक उसको देख डरो बाबा,
अब अश्क बहाओ आंखोंसे और आहैं सर्द भरो बाबा.
दिल हाथ उठा इस जानसे भी बस मन मार मरो बाबा.
जब बापको खातिर गलमें अब अपनी खातर रो बाबा.
तन सुखा कुबडा पीठ हुई घोडेपर जीन धरो बाबा,
अब मौत नकारा बाज चुका चलनेकी फिकर करो बाबा. १
अब जानका तुम एहसान उठा और मरनको महेमान करो,
असबाब क्या अरमान करा या पूल करा या दान करो.
या पुरी कु मलाई या खाजा हलवा नान करो.
कुछ टुक नमी अब जानको अब चलनेका कुछ ध्यान करो.
तन सुखा० २

दिल करो अपना जीवन अब और गलेको मत काटो,
अब खुदफिनाका टुक चखा और खून कीसीका मत चाटो.
उन लौंडा लडको शाहजादोंका राग आजी अपनी तुम नाटो.
ताकत तनुर हुई चुक अब राह चलनी मत ढाटो तन० ३

येह वक्त बहोत कुन्दा उठना अब कोडा मारो ढेर करो,
अब माल इकठ्ठा करनेसे अब तनका अपने दूर करो.
गठड़ी लादकर भाग चुका अब ध्यानमें तुम चामदोर करो,
तुम माफ़ लड़ाई हार चुके अब भागनेमें मत देर करो. मन० ४
सर हिलना चांदी बाल हुवे मुंह पीला पलकें आन झुकीं,
बल तेरा काल हुए बहरे और आंखभी धुंधलाई गईं.
सुख नींद गई और भूख घटी दील सुस्त हुवा आवाज़ मुर्दी,
जो होनीथी सो हो गुज़री अब चलनेमें कुछ देर नहीं. मन० ५
येह पांव घसीटकर चलनेमें मत रस्तेको हयरान करो,
और पोपले मुहंसे कहके मत मलमल कर हलकान करो.
अब भाप हुए तुम पानीसे मत पानीका नुकसान करो,
कुछ काम नहीं हुए जीनेमें अब मरनेसे पहेचान करो. मन० ६
गर अच्छी करनी नेक अमल तुम दुनयासे ले जाओगे,
तो घरभी अच्छा पाओगे और पकडके गुगरे खाओगे.
और अपनी हयकल छोडके तुम जो खाली हाथों आओगे,
कुछ पास नहीं धन आनेको घबराओगे पछताओगे. मन० ७
येह उमर जीसे तुम समझेहो येह हरदम तनको चुनती हए,
जीस लकड़ीके बल बयटेहो दिनरात येह लकड़ी घुनती हए.
तुम गठडी बांधो कपडेकी और देख अजल सर धुनती हए,
अब मभोल कफनके कपडेका यां ताना बाना बुनती हए. मन० ८
घरबार रुपे और पयसेमें मत दिलको तुम खुरसंद करो,
या गोर बनाओ जंगलमें या जमनापर आनंद करो.
मभोल आन लताड़ेगी आखिर कुछ मकर करो कुछ फंद करो,
बस बहोत तमाशा देख चुके अब आंखे अपनी बंद करो. मन० ९
बेपार तो यांका बहोत कीया अब वांकाभी कुछ सवदा लो,
जो सैर उधरको चलती हए उस खेपको यांसे लदवा लो.
उस बाटमें जो कुछ खाने हों उस खानेकोभी मंगवा लो,
सब साथी पहोंचे मंझील पर अब तुमभी अपना रस्ता लो. मन० १०
दो चार घडी या दो दिनमें अब तनसे जान नीकलती हए,
येह रुही पनछी जीतनी हए कहां होनी हए या जलती हए.
हए रात जो बाकी थोडीसी और हरदम येहभी ढलती हए,
टुक पोंछो नज़र रुखसत है तुमकोभी मझील चलती हए. मन० ११

जो गुलबदन हुए रहे हसरते उन्हें मनाले,
बोसा उन्होंका ले कर सीनेसे फेर लगाले.
हँसले हँसाले हरदम दिलसे दिलाले माने,
जो धन सके सो अपने जीको मज़े उड़ाले. दौलतमं॰ ५
जो पास हुए ज़रीका मन रख चोर बीने अंदर,
मसजीद पुंडे घना दे मालाय बाग मेंदर,
दरया कहीं बहादे दनजा कहीं समंदर,
सब कुछ उड़ा गुज़ाफर हो रहे मस्त कलंदर. दौलतमं॰ ६
संदुकमें जो सुर हुए उमरांओसी के बोसादे,
मय्यांके प्याले साले नवलोंकी फड़वादे.
कोठे मकां हवेली सब बांद कर मिलादे,
कारपों मलक जलादे ईंटों लगक उड़ादे. दिलजीं॰ ७
जो जो कमाल हुए हर छोड़कर मरेगा,
या मालका जवाद या सालोंमें रहेगा.
तेरा चोरी हुए जो कुछ नाहे कुदामें देगा.
ख़ाला भिड़ाना हंसना तुझे भरा रहेगा. दिलजी॰ ८
गर आ पड़ेगा तुझपर कुछ हादिसा गजबका
मालीक फेर धार वोई हमेशा मेर हानका.
[illegible]
[illegible] दिलजी॰ ९
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] दिलजी॰
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पद २०१. (गझल.)

दुनया हय जीसका नाम मीयां येह और तरेहकी बस्ती हय.
जो महँगोंको तो महँगी हय और सस्तोंको येह सस्ती हय.
यां हरदम झगडे उठते हय हरआन अदालत बस्ती हय,
गरमस्त करे तो मस्ती हय और पस्त करे तो पस्ती हय.
कुछ देर नहीं अंधेर नहीं इनसाफ और अदल परस्ती हय,
इस हाथ करो उस हाथ मिले या सवदा दस्त बदस्ती हय. १

जो और कीसीका मान रखे तो उसकोभी और मान मिले,
जो पान खीलावे पान मिले जो रोट दे तो नान मिले.
नुकसान करे नुकसान मिले एहसान करे एहसान मिले,
जो जयसा जीसके साथ करे फेर वयसा उसको आन मिले.
कुछ देर नहीं अंधेर० २

जो और कीसीका जां बखशे तो हक उसकीभी जान रखे,
जो और कीसीकी आन रखे तो उसकीभी हक आन रखे.
जो यांका रहेनेवाला हय येह दिलमें अपने ठान रखे,
येह तुरत फिरतका नकशा हय उस नकशेको पहेचान रखे.
कुछ देर नहीं अंधेर० ३

जो पार उतारे औरोंके उसका भी नाव उतरती हय.
जो गरक करे फेर उसकोभी यां डुबकुं डुबकुं करती हय.
शमशीर तबर बन्दुक सनां और नस्तर तीर नहेरनी हय,
यां जयसा जयसा करती हय फेर वयसी वयसी भरनी हय.
कुछ देर नहीं अंधेर० ४

जो औरका उंचा बोल करे तो उसका बोलभी बाला हय.
और दे पटके तो उसकोभी कोइ और पटकनेवाला हय.
बेजुल्म खता जीस जालीमने मजलुम झुब्हा कर डाला हय,
उस जालीम केभी लोहुका फेर बहेता नद्दी नाला हय. कुछ देर० ५
जो मीसरी औरके मुहमें दे फेर वोहभी शक्कर खाता हय.
जो औरके तांई अब टक्कर दे फेर वोहभी टक्कर खाता हय.
जो औरको डाले चक्करमें फेर वोहभी चक्कर खाता हय.
जो औरको ठोकर मार चले फेर वोहभी ठोकर खाता हय.
कुछ देर नहीं अंधेर० ६

जो और किसीको नाहक़में येह झूटी बात लगाता है,
और कोई ग़रीब बिचारा है हक़ नाहक़में लुट जाता है;
वोह आपभी लूटा जाता है और लाठी पाती खाता है,
वोह जैसा जैसा करता है फेर वैसा वैसा पाता है.
कुछ देर नहीं अंधेर० ७

जो औरकी पगड़ी ले भागे उसकाभी और उचक्का है,
जो और पेड़ोंकी खिलवाये उसपरभी ओस धड़का है.
यां पुर्नीमें तो पुर्नी है और धक्केमें यां धक्का है,
क्या और मज़ेका उलटा है क्या ठौर येह भीड़ भड़क्का है.
कुछ देर नहीं अंधेर० ८

है खटका उसके साथ लगा जो और किसीको दे खटका,
वोह ग़ैबसे झटका खाता है जो और किसीको दे झटका.
चीरेके बीचमें चीरा है टीपकेके बीच जो है टिपका,
क्या कहिये और नज़ीर आगे है और तमाशा झटपटका.
कुछ देर नहीं अंधेर० ९

पद २७१. (ग़ज़ल.).

दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जींस यांकी साथ ले,
नेकीका बदला नेक है बदसे बदीकी बात ले.
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफ़त ले.
कलजुग नहीं करजुग है येह यां दिनको दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले. १
कांटा किसीके मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू,
वोह तेरे हक़में तीर है किस बात पर भूला है तू.
मत आगमें डाल औरको वोह घासका पूला है तू,
सुन रख येह नुक्ता बेख़बर किस बात पर भूला है तू.
कलजुग नहीं० २
शोख़ी शरारत मकरो फ़न सबका बसेखा है यहां,
जो जो दिखाया औरको वोह ख़ुदभी देखा है यहां.
खोटी खरी जो कुछ कहे तिसका परेखा है यहां,
जो जो पड़ा तुलता है मोल तिल तिलका लेखा है यहां.
कलजुग नहीं० ३

अपने नफ्सके धामसे कर धीरका नुकसान कर,
हिरसकी गुबरा होयेगा इस बात पर तुं ध्यान कर.
न्यामत जो न्यासो देख कर पानी पीए तो छान कर,
यां पांचको रख कुंक कर, और साबीरके गुजरान कर.
कल्जुग नहीं० ११
गफलतकी येह जागा नहीं यां साहेबसे हुशियार रहे,
दिल शाद कर दिलशाद रहे गमनाक कर गमनाक रहे.
हर हालमें भी तु कबीर अयहर धरमकी न्याक रहे,
येह पांह मला हप ओ मीयां यां पाक रहे वे पाक रहे.
कल्जुग नहीं० १२

नथु.

—:o:—

पद १५१.

हादरो प्रगट देव हो, हादरो प्रगट देव हो;
न्हावी गुरुनी सेव, अहो व्यांझायिनानो खेल. (टेक.)
स्नान स्माहेब मुम घोवी, पूरा बोध पहोंचेल;
भामन शुंधी गोळ आंणी, छोड पीयनी धेल. हादरो० १
सुम सूरत लागी ज्योत जाणी, दया धरम दीपेल;
गगन मस्तु भोम झानी, मंदिर दीपक मेल. हादरो० २
सुषमना होरीथी देख हेरी, हेरा हरदम हेर;
पवन पोशा पाखरी, तुं खरी लपेर खेल. हादरो० ३
कपंणी कीर हेर हेरा, पहोंचे नहीं पशालजी;
नथुक सतगुरु चरणे, उलटी रंगनी रेलजी. हादरो० ४

मथुरामशर्मा*.

पद १५२.

जुठीरे काया तारी जुठुं न बोलो, पहलो मुने तारो पडकारो.(टेक.)
जुठी काया जुठी माया, जुठा जुग भरमाया रे,
अनवांछे जडुं लवडुं, करम कोने न पाया रे जुठी काया० १

* आ महात्मा [illegible] [illegible] [illegible] छे, अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आवृत्ति छपी.

काशीमें करवत लियो, मरे ये तनु हिमाळा गाळे;
तोला घेरे देवे जो दान, सोई ना होवे एक नाम समान. हरि० ५
ज्या पर गुरु कीरपा करे, प्रेमभक्ति हिरदेमें धरे;
ये कलिजुगको ये परमान, नामदेव सुमरे श्री भगवान. हरि० ६

नानक.

—:o:—

पद २७७.

रचना राम बनाई, संतो रचना राम बनाई. (टेक.)
एक बीनसे एक अस्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई. रचना० १
काम क्रोध मोह मगन प्राणी, हरि मूरत बिसराई. रचना० २
झूटा तन साचा करी मान्या, ज्युं सुपन रैनमें आई. रचना० ३
जो दीसेसो सकल बिनासी, ज्युं बादलकी छाई. रचना० ४
नामरूप कछु देख न पावे, जिनमे जगत बिलाई. रचना० ५
जन नानक हरि भये दयाला, तो सब बिध बन आई. रचना० ६

पद २७८.

साधु क्युं बन खोजन जाई. (टेक.)
सर्व निवासी सदा अलेपित, तोही संग रहो समाई. साधु० १
पुष्प मध्यें ज्यु बास बसत है, मुकुरमें जैसी छाई. साधु० २
तैसेही हरि बसे निरंतर, घटही खोजो भाई. साधु० ३
बाहर भीतर एको जानो, यहि गुरु ज्ञान बताई. साधु० ४
जन नानक बिन आपा चीने, मिटे न भ्रमकी काई. साधु० ५

पद २७९

साधु मनका मान तियागो. साधु० (टेक.)
काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अहनिश भागो. साधु० १
सुख दुख दोनुं सम करि जानो, और मान अपमाना
हरख शोकसुं न्यारो आनंदित, तिन जग तत्व पिछाना. साधु० २
स्तुति निंदा दोनुंई त्यागो, खोजो पद निरबाना
जन नानक यह खेल कठिन है, कीनकुं गुरमुख जान्या. साधु० ३

पद १८०.

साधु य मन गह्यो न जाई. साधु० (टेक.)
चंचल तृष्णा संग बसत हो, याते अथिर रहाई. साधु० १
काम क्रोध घटहीके भीतर, जाही सुध सब बिसराई;
रतन ज्ञानको सबको हरि लीनो, ताते कछु न बसाई. साधु० २
जोगी जतन करत सब हारे, गुनी रहे गुन गाई;
जन नानक हरि भये दयाला, तब सब विधी बन आई. साधु० ३

पद १८१. (तिलंग-महला पहिला.)

किजे नेक नामी तु देवे खुदाय,
तु दीसे जिमी पर सो होसी फनाह;
दाईम न दौलत करो बेशुमार,
न रहेंगे करोडी न रहेंगे हजार. १
दमडा तिर्माका तु खर्चे व खाय.
देवे दिलावे खुदावे खुदाय;
होता न रावे एकेला न राय,
तहकीक दिलजानी यही शिताब आय. २
कीजे तवाजह न कीजे गुमान,
न रहसी य दुनिया न रहसी दिवान;
हाथी व घोडे व लश्कर हजार,
होवेंगे उगरद तिसे लागे न वार. ३
दुनियाका दिवाना कहे मुल्क मेरा,
आई मौत सिरपर न तेरा न मेरा
केती चली देख बाजे बजाय,
रहेगा यही एक जो साचा खुदाय. ४
आया इकेला इकेला चलाया,
चलते वखत काम कछुही न आया।
लेखा मगीजे क्या दीजे जवाब,
तोबा पुकारे वो पावे अजाब. ५
दुनिया पर किया जुल्म दमडा कमाया,
खाया हडाया अजाया गवाया।
आखिर पछोता करे हाइ हाई,
दरगह गया तहाँ पावे सजाई. ६

लानत अय तैकुं व तेरी कमाई,
दगाबाजी करके दुनिया लूट खाई;
बीप पिआले व खाए कबाब,
देखो रे लोको जु होने खराब. ७
जिसोंका तुं बंदा तिसीका बिसारा,
दुनियाकी लालच तैं साहिब विसारा;
न कीनी इबादत न राखा इमान,
न कीनी अदालत पुकारे जहान. ८
अंदर महलोंके बैठा तुं जाई,
दरबासों मेलें तु खुशाबो लगाई;
सूझे न बूझे बाहिर क्या होई,
हरामी गरीबाको मारे बिगोई. ९
बस्ती उजाडे व फिर न बसावे,
कूके पुकारे न कोइ दाद पावे;
करोडो अर जोडे करे बेशुमार,
कांकी खराणव पडे मारिये हजार. १०
हाकम कहावे हकूमत न होई,
दुनीका दिवाना फिरे मस्त लोई;
लूटे मुलख और पहिरे रुबाई,
दोजककी आतश मारे तुं भलाई. ११
गरीबासें उन देख दुनियांके दिवाने,
हमेशांह न रहसी तुं ऐसी न जाने:
किसकी ए दुनिया व किसके घर दार,
उडाने सफा उमे लागे न बार. १२
न कीजे हिरस बहुत दुनियाके यार,
चंद रोज चलनांकि पकडो करार;
शरमिंदा न हो कछु नेकी कमाई,
लानतका जामा तुं पहिरे न जाई. १३
गफलत करोगे तो खाओगे मार,
बेटी व बेटा लहेगा न सार:
तोबा करो बहुत कीजे न जोर,
दोजककी आतश जलावेगी गोर. १४

मुहायक पैगंबर केने शाहुयान,
न दीमें जिमींपर उनोके निशान;
बदने कबूतर जनावरकी छाँव,
किते थाक हुए को पूछे न नाम. १५
खाली गंज जोंडे न राखा इमान,
देखो रे लोको क्या है ता पिरेशान;
न दानोंये दुनिया है फानी मुकाम,
तुं खुद चशम बीनी है चलना जहान. १६
न हरवख्त बंदे तुं खिजमत विसार,
मस्ती व गफलतमें शाजो बहार;
तोया न कीतैने करले गुनाह,
नानक ईस आलमसें तेरी पनाह. १७

निर्मळ.

— o —

पद २८२.

सुरत निज नामसें अटकी. (टेक.)
नाम विना कछु काम न आवे, काळ मारे पटकी;
कर सतसंगत राम लइ ल्हावो, जेसी कळ नटकी. सुरत० १
गुरुगम नाव पडी सागरमें, उतर चलो चटकी;
निर्मळदास आस सतगुरुकी, भटक मिटी जगकी. सुरत० २

पद २८३.

सतगुरुजीसें ध्यान लागा हो. (टेक.)
चोरासीसें तुरत बचाए, कर लिया आप समाना हो;
निशदिन रसना लागी रही, सुरता चढी कमाना हो. सतगुरु०१
पीले प्याला तुं मतवाला, पावे पद निरवाणा हो;
निर्मळदास दया सतगुरुकी, मिट गये सकल विकारा हो.सत०२

पद २८४.

में भई मतवालि जोगनियां, (टेक.)
पियु हमारे अमरपुरवासी, लाग रही चितवणियां हो;
ज्ञानकी दोर सुरत पनिहारी, जन्म कचडी गइ तेरी हो. में भई०१

गुरुजी मिल सुरत कहि बूझी, पिया मिला दिल भरियां जी.
निर्मलदास कृपा सतगुरुकी, पायो मैं अपनो नेज पिया हो. मैं गरी॰ ५

पद १७८.

निद्रा करे सो सिध है, सिद्ध आसण होई रे,
मोहना थापु लगायके, उज्जल करे देही रे. निद्रा॰ १
ऐसी करे कोई सूरमा, जीवन फल सोई रे,
लेकर आपको जागके, निंद्र सब खोई रे. निद्रा॰ २
पांच पचीसों के साथ है, जाने कोई कोई रे;
साध गुरु सुरती करी, उदा सुरतें जोई रे. निद्रा॰ ३
बलना निराकार सदा चेतनका, प्रभुजीवन से होई रे;
जाका नीम निद्रा नहि, तामें दूजा न होई रे. निद्रा॰ ४
निरख नेह लगायके, ऐसी मेहर बनाई रे,
निर्मलदास अभय भये, निद्रा पूरी आई रे. निद्रा॰ ५

पद १७९.

कहांसे आये कहां जायगे, कहां धाम तुमारा रे, (टेक)
गुरुसे आये गुरुमें चले, गुरुजी न्याव पुकारा रे,
शब्द सुरत जागके चलो, आवागमनसे न्यारा रे. कहांसे॰ १
रामनाम टंकसाल है, पांचो चमर कटारा रे;
पांच पचीसको बस करो, उतरो भव पारा रे. कहांसे॰ २
जोगी जंगम सेवडे, सबी जोग पसारा रे,
ओही नामको कारने, छोडा कुल परिवारा रे. कहांसे॰ ३
मायाके परपंचसे, कोई कोई न्यारा रे,
निर्मलदास निर्मल भये, छोडा जगत पिचारा रे. कहांसे॰ ४

पद १८०.

अमरपुरा नीचे नये मन डाथट आई रे, (टेक.)
ऊपर लालच देखके, फल पाने न जाई रे. अमरपुरा॰ १
जैसे जगतमें झाड है फल देख लो भाई रे,
फल चाख्या बहु जानका, पिछे जगतमें आई रे. अमरपुरा॰ २
बीज बोया संसारमें, बाडी अजब बनाई रे,
नाना विधके फल लगे, जैसे जल बंधाई रे. अमरपुरा॰ ३

अब सतगुरु पूरा मिले, माया जल कटाई रे,
राम नाम निज मंत्र है, सोइ दियो है बनाई रे. अमरपुरा० ४
नव दरवाजा कूदके, दसवे घर आई रे,
निर्मळदास सतगुरु मिले, जमद्वार छुडाई रे. अमरपुरा० ५

पद १८८.

घेदमें न्यारा भेद है, गुरुगम कोई जाने रे. (टेक.)
साकारकुं खंडन करे, निराकारकुं गाई रे,
साकारकुं खोजे बिना, निराकार न पाई रे. घेदमें० १
चारद्वार छार पथ है, ढुंढे नहि पावे रे;
अठार पुराणी पंच जावे, सतगुरु दरसावे रे. घेदमें० २
केणी करे रहेणी नाहि, निरगुण निरधारी रे,
पांचतत्त्व बिच बठेके, निराकार लखाणी रे. घेदमें० ३
संगत करि साधन करो, सब जाय विकारा रे,
निर्मळदास निरभे भय, छोड जगत जजाला रे. घेदमें० ४

पद १८९.

रहेसा निर्गुण नामका, गावे कोई समरथ जोगी;
अलग रहे संसारमें, सो तो रमता रे जोगी. (टेक.)
लहर उठे गुरुज्ञानकी, निरख्या निर्मळ मोती,
अन उज्याळा होइ रहा, झळके अखंड ज्योती. रहेसा० १
सुन नगरीमें आसन करे, पुर्णा ध्यान लगता;
तानो गुण विचारमें, चोथे धामें लगता. रहेसा० २
जळका कुंभ जळहळ रहा, झळके अखंड ज्योती,
आपा अभान मिटके, सो तो ब्रह्म समाया रहेसा० ३
पांच प्याणीने परहरे, परकीर्ति समारी,
चढि सुखाणी न उतरे, बाणी अनहद तारी. रहेसा० ४
सगुनमें निर्गुण मिले, निर्मळदास देखाली,
कहे कबिर धर्मदासकुं, परखो अनहद बानी. रहेसा० ५

पद १९०.

गुरुका शब्द सुना नहि, तेरी काळ न खाया रे. (टेक.)
रोम रोममें माया रमी रहे, सब काळकी माया रे,
निराकार सोई शब्द है, तेरी काळ न खाया रे. गुरुका० १

उत्पत्ति प्रलय काल है. तीन लोकमें छाया है,
ॐकार निज सिध है, जिनोंने जग पाया है.   गुरुवा० २
आंधी जोत मैंदा, भारी पेड़ने लाया है,
पेड़के न्यारा भेद है, भारी काल डराया है.   गुरुवा० ३
शोहन बरन रूप मायकी, जहाँ काळ न व्यापा है,
निर्मलदास निर्मळ भये, गुरुपास बोलाया है.   गुरुवा० ४

पद १९१.

हद बेहद क्यों कौन है, कौन कहाँ निशानी,
कौन गुरु निर्वाण है, कहाँ सुरत समानी.   हद बेहद० १
निर्गुण स्वामी कौन है, कौन सगुण सन्यानी,
कौन गुरु कौन शिष्य है, कौन सेवक स्वामी.   हद बेहद० २
कहाँ माया कहाँ ब्रह्म है, कहाँ सतगुरु ज्ञानी,
कहाँ रामका नाम है, कहाँ ठौर निशानी.   हद बेहद० ३
कहाँ जमीन आसमान है, कहाँ पवन धर पानी,
कहाँ जोत अगम चले, कहाँ सून समानी.   हद बेहद० ४
पांच तत्वको कौन है, कौन पचीसो नारी,
निर्मलदास सो कौन है, यह तो उलटी ये बानी. हद बेहद० ५

पद १९२

हद बेहद गुरुगम है. पाये ओर निशानी।
नाम गुरु निर्वाण है. जहां सुरत समानी.   (टेक.)
धन माया प्रतिबिंब है, कीर्ति सद्गुरु जानी।
शब्द रामका नाम है. जिसमें ठौर निशानी.   हद बे हद० १
धीर जमीं आसमान है, वायु पवन और पानी।
ॐकार जोत झगमगे, जहां सून समानी.   हद बे हद० २
पांच तत्व सो पिंड है, जिसमें पचीसो नारी।
तिन गुण तिन देव है, निर्मलदास पेछानी.   हद बे हद० ३

पद १९३.

जगत सब पूजा करो साकारकुं,
नहि तो दर्शायो निराकारकुं.   (टेक.)
अपने धर्मकुं सब कोइ माने, मंदिरमें देवळ हनुमानकुं;
धर्म विरोध करत नहि राजा आको हुकम संसारकुं. जगत०१

नहिं मंत्र नहिं जंत्र, नहिं गुरने बतलाई;
रामकृष्ण बिन सब बना है, तुं काहांसे लाई. राम० २
अक्षरन घर नहिं मिला असमा, आपने हो जाई;
रामकृष्ण गुरुमंत्र निश्चये, प्रकट भ्रम जाई. राम० ३
भक्तवत्सल भगवान, धीर मिलईके तुटे याई;
निर्मलदास सन्तोष समजके, रामकृष्ण गुण गाई. राम० ४

पद १९७.

ज्ञानी तो मेने चहिये रे, के गुरुके संग मिला रहे।
नित उठ ऐसी सुरता रे, के श्रीगुरुचरणे रहे. (टेक.)
अव्वलमें शब्द कियां गुरु समरण, मिट गये सकल विकार;
अठ पहोरकी चोसठ घडियां, छुट नहि लगार,
सतत तो ऐसी वृत्ति रे, के निशदिन लागी रहे. ज्ञानी तो० १
सो मन लागी मांही तन जाणे, गुरुशब्दकी वात,
रोम रोम रंग होई रह्यो है, ररंकारकी साथ,
शब्दमें सुरता रे, के ज्युं मणि नाग मिले. ज्ञानी तो० २
पोथी पढ पढ पंडित हारे, भूले देखा नहि सार,
च्यार वेद ढुंढे नहि पावे, षट दर्शनके पार,
अपार देश न्यारा रे, के कोई संत विरला ग्रहे. ज्ञानी तो० ३
आद्य अनादी नाम गुरुका, निरखी ल्यो निर्धार,
निरालंब सबहीसें न्यारा, गुरुपद है निराकार,
निर्मलदास न्यारा रे, के घट घटमांही रहे. ज्ञानी तो० ४

पद २५८ (सोरट.)

मोज उठ चली पवनके संग, जब मिल गये पांचो रंग. (टेक.)
जबलग आशा तबलग वासा, खेलतहे चोरंग;
तूटी दोरी हाथ न आवे, ज्युं उड चला पतंग. मोज उठ० १
मेरि तेरि कर धाम मिलाया, महल बना चोरंग;
भाईबंद और कुटुंब कबिला, कोई न आवे संग. मोज उठ० २
अबहू चेत हेत कर हरिसें, गुरुशब्दमें रंग;
रामनामकी नाव बना के, चल उत्तर सतसंग. मोज उठ० ३
सन्तोष सतगुरुका वासा, मिल गये एकहि रंग;
निर्मलदास रामरंग माता, चडे न दूजा अंग. मोज उठ० ४

पद २९९.

एक घर आनां दोनों दिन, कोइ संत रहे लवलीन. (टेक.)
नहि कोई पंडित नहि कोई काजी, पांच तत्व गुण तीन;
कोइ सुनत कोई कान छेदावत, दुष्या आपे कीन. एक घर० १
कोइ गाडे कोई फूंकी आपे, देखो जगतकी रीत;
कोइ भूत कोइ प्रेत बनो है, कोइ हिंद कोइ पीर. एक घर० २
कोइ संध्या कोइ निमाज पडते, कोई ध्यानमें लीन;
राम-रहिम बडे कर जाने, सोई संत प्रवीन. एक घर० ३
चार वेदसें नहि कोइ न्यारा, भेद संतकुं दीन;
निर्मळदास जगतसें न्यारा, राम-रहिममें लीन. एक घर० ४

नृसिंहशर्मा.*

—:०:—

पद ३००.

गुरुबिन ज्ञान नहिन कोउ पावेः—
सप्त द्वीप नव खंड तलातल, चौद लोक फिरि आवेः—गुरु०१
वेद पुरान षट दर्शन देखे, तउपर अनुभव गावेः—गुरु०२
जप तप व्रत अरु दान करे, फिर सब तीरथ घुमि आवेः—गुरु०३
मंत्र जोग औषधविधि साधे तउपर परम न पावेः—गुरु०४
नरसैया गुरुनाथ चरन बिन, इत उत काहीं मति धावेः—गुरु०५

पद ३०१ (भैरवी.)

तुंही चिदानंद घन मज्ञ मन रेः—
नामरूप गुन सबमें न्यारो, अस्ति-भाति-प्रिय सब तन रेः-तुं०१
देश काल दिगसें नहि खंडित, सर्वव्यापी जल थल वन रेः-तुं०२
मन वानी सबमें पर पेखो, पावत सबन न श्रवनन रेः-तुं०३
वेद पुरान मुनि पार न पावत, शास्त्र थके कर मथनन रेः-तुं०४
नरसैया गुरुनाथ चरन भज, तब देख्यो चेतन घन रेः-तुं०५

*आ भक्त-कवि मूळ आनंदपुरना निवासी, वडनगरा नागर ब्राह्मण, गृहस्थी छे. तेओ सद्गुरु महाराज महात्मा श्री मधुरामशर्माना मशहूर शिष्य हता. श्री काशीपुरिमां परमपूज्य श्रीमद् स्वामी [illegible] [illegible] हाल संन्यास वर्ष छे. सं. १९९१.

पद १०२.

समजी तज पांच विषयका संगः—(टेक.)

होई नादवश व्याध हाथमें, आपहि मरत कुरंगः-समजी० १
करत न स्पर्श मुदित मन होके, फसत मरनहि मतंगः-समजी० २
मोहि रूपमें परत दीपमें, आरत देहि पतंगः-समजी० ३
वश रसना रस हेत कर मछरी, छिदवायन निज अंगः-समजी० ४
गंध लोभसें जाइ जलजमें, बंधहि होवत भृंगः-समजी० ५
एक विषय वश या गति पावत, कया गति पांच प्रसंगः-समजी० ६
हे नरसिंह विषय विष छोरी, नाथचरन मन रंगः-समजी० ७

पद १०३.

सकल जग तज काल होई उदासः—(टेक.)

विषवत मानी विषय त्रिभुवनके, सो जहाँ उन पासः-स० १
न्यारो रही जन लोगनसें नित, जा करिहों बन वासः-स० २
धन जनका संग्रह तुज देहो, लोभ मूल कर नाशः-स० ३
भूषण वस्त्र पदारथ मानी, इनकी तजि दो आशः-स० ४
नाथ कृपा नरसिंह बनाये, भवभय टारि अभासः-स० ५

पद १०४. (बनारी.)

तन धन कामन काम न ऐहैं-समज मूरख मन क्यों दुःख पैहैः-
जब जल बुंद गरे उतरे नहि,
तब दुखनाश- कहा कर देहैः-तन धन कामन० १
आई धकरो जब धारि विहिन बन,
कया धन पासमों प्यास मिटैहैः-तन धन कामन० २
आवत काल कराल अचानक,
जब गैहैं तब मन पछतैहैः तन धन कामन० ३
निज संचित फल पावत प्यारे,
धीर धरि धोखा मोय धरैहैः तन धन कामन० ४
नाथकृपा नरसिंह बनाये,
तब निज धाम अगमसुं जैहैः तन धन कामन० ५

पद १०५.

गुरुकी कृपाके बलसें परम लाभ पायुंगा, (टेक.)
ज्ञानपाय कारहि हरणहि भवताधुंगाः-गुरुकी कृपाके० १

पद २९९.

एक घर आनां दोनो दिन, कोइ संत रहे लयलीन. (टेक.)
नहि कोई पंडित नहि कोई काजी, पांच तत्व गुण तीन;
कोइ सुनत कोई कान छेदावत, दुग्धा आपे कीन. एक घर० १
कोइ गाडे कोई फूंकी आवे, देखो जगतकी रीत;
कोइ भूत कोइ प्रेत बनो है, कोइ सिद्ध कोइ पीर. एक घर० २
कोइ संध्या कोइ निमाज पडने, कोई ध्यानमें लीन;
राम-रहिम वडे कर जाने, सोई संत प्रवीन. एक घर० ३
चार वेदसें नाहि कोइ न्यारा, भेद संतकुं दीन;
निर्मळदास जगतसें न्यारा, राम-रहिममें लीन. एक घर० ४

नृसिंहशर्मा.*

—:o:—

पद १००.

गुरुबिन ज्ञान नहिन कोउ पावे:—
सात द्वीप नव खंड तलातल, चौद लोक फिरि आवे:-गुरु०१
वेद पुरान षट दर्शन देखे, तउपर अनुभव भावे:-गुरु०२
जप तप व्रत अरु दान करे, फिर सब तीरथ घुमि आवे:-गुरु०३
मंत्र जोग औषधविधि साधे, तउपर परम न पावे:-गुरु०४
नरसैया गुरुनाथ चरन बिन, इस उत कहीं मति पावे:-गुरु०५

पद १०१. (भैरवी.)

तुंही चिदानंद घन ब्रह्म मन रे:—
नामरूप गुन सबमें न्यारो, अस्ति-भाति-प्रिय सब तन रे:-तुं०१
देश काल दिगसें नहि खंडित, सर्वव्यापी जल थल बन रे:-तुं०२
मन वानी सबमें पर पेखो, पावत मदन न मधुवन रे:-तुं०३
वेद पुरान गुनि पार न पावत, शास्त्र थके कर मथनन रे:-तुं०४
नरसैया गुरुनाथ चरन भज, सब फैलो चेतन घन है:-तुं०५

---

*आ भक्त-कविश्री मूळ झमनगरना निवासी, वडनगरा नागर ब्राह्मण, ब्रह्मचारी छे. तेओ मशहूर महाराज महात्मा श्री मधुरानंदजीना मठोना शिष्य [illegible] श्री काशीपुरीमां परमपुरुष [illegible] आनंदपूर्वक [illegible] दे. सं. १९५२.

अंतरकरणो विरामशे, तजशे व्हालना चाळा;
तन मन थिर(जोई) शिरकेशमां,पंखी घालशे माळा.आ पथो रे०१०
सघळांथी समदृष्टि राखशुं, राखी निजरूप भाव;
मुक्त थाशुं जीवतां थका, लेशुं आनंद ल्हाव. आ पथो रे० ११
संगत संतोथी राखशुं, करशुं तत्व विचार;
गुरुगम लईने रे खोलशुं, अनहद भेद अपार. आ पथो रे० १२
अनहद नादमां पामशे, लय सौ आ रे संसार;
जोत अखंडित जागशे, हृदयाकाश मोझार. आ पथो रे० १३
खोजीशुं हृदय आकाशमां, बहार बम्हांडने टाळी;
नाथगुरुना प्रतापथी, टीली टाळशुं काळी आ पथो रे० १४
नरसिंह सम थई चालशुं, जगथी डरशुं न कांय·
त्यारे खचित सौको पामशु, कल्पवृक्षनी छांय आ पथो रे० १५

पद १०९ ([illegible])

मूरख मनसें ` म ` नु ` का मेल तजोजी (टेक)
जन्ममरनको बंधन भारी टारी निजपद नाम भजोजी:- मू० १
क्लेशकरन सुखहरन मरनसें दुरद समजकर दूर भजोजी मू०२
में तुं ममत करावनहारे टारनका तुम साज सजोजी- मू० ३
अतिशय ये अहंकार बढावत कबहु न बनाहि थजोजी मू० ४
नाथकृपा नरसिंह बनावे नव नव रंग साफ हजोजी मू० ५

[illegible] ११०

हांरे मन कर लघुताम प्रीत (टेक.)
लघु महको यह्य राहु गिलत नहि, सुर शशिगनको भीति ~ हांरे० १
पूर्ण निशाकर कोउ न झांखत, नमत दुईज जगरीति हांरे० २
विचरत या लघु ख्याल बनावत, शेष शीश धरी क्षिति:-हांरे० ३
ज्यों लघुता महता त्योंहि पावत, उलटी यही जग नीति ~ हांरे० ४
नाथकृपा नरसिंह बनावे मान ममत तज जीति: हांरे० ५

पद १११. (भाशा.)

ऊठि चलो घर अपनां मुसाफिर, ऊठि चलो घर अपनां. (टेक.)
याद विकट घर दूर विदेशी, अबहीसें नां अटकनां:-मुसा० १
.. लुटारे बन बन टारे, लूट लहोपे खटकनां:- मुसा० २
व्यतीत भये पर प्यारे, परि हैं भूली भटकनां: मुसा० ३

षट् रिपु खोजत संत करी नित, सीम धरी कर काती;
जरा जरावत देह गलावत, आवत होकर ताती. हमको० २
मरकटवत कूदत मन मेरो, मोच भयोहि संघाती;
आयुष वन फल तोरि बिगारन, समुझत नां फोड पाती. हमको० ३
क्षण परिणामी सकल जग देखी, आकिल गुमहि होई जाती;
तन धन जन कोऊ ना रहिये, मात तात सुत नाती. हमको० ४
जो सुख सोधन चित चाहे, तो रहे अनुभव घर पाती;
नाथकृपा नरसिंह बनाये, सब भय बात बिलाती. हमको० ५

पद ११६. (सोरठ.)

हमारे मन, क्यौं न मरी ममता. (टेक.)
क्यौं सुविचार न रोग भयो तन, क्षय न भयो क्षमता-हमारे० १
क्यौं रिपु संत भये न हमारे, विष न दियो समता-हमारे० २
क्यौं मरत नहि क्यौं चिद्घनमें, भवसागर तरना:-हमारे० ३
क्यौं नहि फांसी लगत प्रभुपद्वी, दश इंद्रिय दमता-हमारे० ४
क्यौं नरसिंह समान न होवत, नाथ चरन रमता:-हमारे० ५

पद ११७.

होवत है नित चाह नई, चित होवत है नित चाह नई रे. (टेक.)
जीर्ण भये मुख-दांत-नयनबल, जीर्ण भइ यही देह भई रे-हो० १
केश भये शिरके सब ओरन, श्रवमन या बधिराय गई रे-हो० २
हाड चर्म तन जीर्ण भये अब, इंद्रिय सब शिथिलाय सही रे-हो० ३
रूप धीर्य बल बोल बिगर गये, मन बुद्धि बोहोराय रही रे-हो० ४
नाथकृपा नरसिंह बनायो, सब करि शिरसम फार दई रे-हो० ५

पद ११८.

मन मान तजी. मान कह्युं तुं ममता मूकी मटकुं.
हुं कथन करुं, मर्मनीलो समजावुं तुजने केटलुं-(टेक.)
तन धन दारामां मोहित मां रे, घर मेहेल बगीचा जोईने मां रे,
सुख दुःख मानीने हर्षी रोईश मां रे- मन० १
मन विषय व्यसनमां मां गळजे रे, लंपट जनमां जई मां मळजे रे:
गुण-ज्ञान गुरुमुख सांभळजे रे- मन० २
मन परनिंदाने नित परहरजे रे, परधन परदार न संघरजे रे:
दश इंद्रिय गणने वश करजे रे- मन० ३

वैराग्य नदीमां स्नान करो रे, मत संगत रंगन वस्त्र धरो रे;
आभूषण धर एक नाम हरी रे- मन० ४
नरसिंह समो हिंमत धरजे रे, भवसागर क्षणभरमां तरजे रे;
गुरु नाथकृपा पातर मरजे रे- मन० ५

पद ११९.

अखिल जगत अहित करत, दुष्ट मदन जा तुं दूर. (टेक.)
रति वलय कलंक कंठ पुष्प धनुष धारि लंठ,
कुसुमसर प्रहरत ठंठ. जप तप पर डारि धूर- अखिल० १
जोग ध्यान बिंदु हरत, भजनमेंहि भजन करत,
गहन दहनपे न डरत, तुम सम न अनारि क्रूर- अखिल० २
मधुप रु मधु कराहि संग, आवत छल कर अनंग,
व्रत रु नियम करत भंग, तन मनकुं उतापि पूर- अखिल० ३
मकरध्वज निशान हाथ कुसुमशरकुं लीन साथ,
जगत वश करनको थाथ भीडी चल्यो होइ शूर- अखिल० ४
तज तु वश करनकी आश. हमहि हीं नरसिंह खास,
नाथ चरन शरन दास, छिनभर महिं कराहि चूर- अखिल० ५

पद १२०.

जहां देखत वहां रूप हमारो. (टेक.)
जड चेतनको भेद न पेखत, आतम एक अखंड निहारो.-ज० १
क्षितिजल तेज पवन आकाशो, कारन सूक्षम स्थूल विचारो.-ज०२
नरनारी पशु पंछी न भीतर मुजबिन कोई न जागनहारो.-ज०३
कीट-पतंग-पिशाच पदारथ, सरुवर-तरुवर-जंगल पहारो.-ज०४
मैं सबमें सबही मेरे महीं, नाम न रूप निरंजन धारो.-ज० ५
नाथकृपा नरसिंह भयो अब, व्यापि रह्यो हमसें जग सारो.-ज०६

पलटू.

—:०:—

पद १२१.

बरनो मैं संत समाज जिनके ज्ञान कचहरी. (टेक.)
संतोष तखतपर मन राजा, विवेक जहां दरवानी,
क्षमा बिछाना संत सीपाई, हरिको नाम खजाना. बरनो मैं० १

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गुरु [illegible]

[illegible] सुनाता हो,

[illegible]

गुरु [illegible]

[illegible] चेलो [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पद १४८ ([illegible])

[illegible]

पद १४९ ([illegible])

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गुरुतिये नेडो निज नामसें कीनो, सुरती शब्द मुहेरा।
सुनमें आगे दिया सुरंगा, किया ब्रह्मसें भेरा. संत स॰ २
या पर घरणा एक अनोपम, द्वादश प्रगटी डाल.
तिन भुवनपर तखत गुरुका, पिंड ब्रह्मांडसें पार.संत स॰३
केण कथनमें कबू न आवे, पांच रंगसे पार;
प्रेमदास गुरु जोयण भेटा, नेडा नामका न्यारा. संत स॰ ४

प्यारादास.

—:o:—

पद १३१. (राग.)

प्रभु जगपालन गिरिवरधारी. (टेक.)
नाभिकमलसें ब्रह्मा उपजे, रचना सृष्टि विचारी,
द्वादश वर्ष कमलमें बीते, हरिमाया बड भारी;
भरमत फिरे भेद नहि पावे, वाणी शक्ति पुकारी,
नीलकमलके ऊपर राजे माया अनंत तुम्हारी. प्रभु॰१
प्रथममें रूप कूर्मके ऊपर, शेष सहस फणधारी,
दिग्गज अष्ट लगे ता नीचे, सुभग सिंधु शिर भारी;
ता ऊपर वाराह ठाढ भै, रचना सृष्टि विचारी,
वसुधा धरणी ताहिके ऊपर, माया प्रबळ तिहारी. प्रभु॰२
तल औ अतल सुतलके नीचे, वितल तलातल भारी,
ताके नीचे बनी रसातल, हे पाताल अगारी;
सीतमके पाताल धरणके, वेदन युक्ति विचारी,
ताके नीचे आप विराजें, जल स्वरूप वनवारी प्रभु॰ ३
भुवर भुवर विष्णु सब ऊपर बहलोक शुभकारी,
तब तब लोक चंदरवि ऊपर गऊ लोक बड भारी;
ध्रुव मंडलके ऊपर राजे, सप्त ऋषी मुनिधारी,
ताके उपर तेज पुंज है अलख पुरुष विस्तारी. प्रभु॰ ४
रामखंड औ हिरणखंड है, कूर्मखंड मन धारी,
हरीखंड औ केतखंड है, भारतखंड विचारी;
केतमाल औ भरतखंड है, इलावर्त्त शुभकारी,
पृथ्वी बाट खंड नौ कीन्हें, राज करत रजधारी. प्रभु॰ ५

मृदंगन की ठेकन ठुमरी है, तिरकटधिन तिरकटि.
[illegible] [illegible], [illegible] तिरकटि :
[illegible]
[illegible], [illegible] तिरकटि, [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] तिरकटि [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मालकोस.

पद १३४

[illegible]

श्रीकम शरणे बोल्या बालकदास,
नाम विनानी घेला मुक्ति रे नोती रे जो. भजन करी ले० ४

ब्रह्मानंद.

—:0:—

पद ११३.

अब तो निर्विकल्प समाधिको संभार, संभार. अबतो० (टेक.)
यम और नियम प्राणको संयम, आसन और प्रत्याहार;
ध्यान धारणा और समाधी, अष्टअंग निरधार, धार. अबतो० १
निसप्रापतमें जतन करो, तुम अवर करम सब हार;
हंस प्रणवमें मनवा राखो, प्राणापान विचार, विचार. अबतो० २
खेचरी भूचरी अगोचरी चाचरी, उन्मनि मुद्रा सार;
उन्मनीमध्ये अमरज ज्योति, कर है झिलझिलकार, कार. अ० ३
तामें मनवा थिर करी राखो पायो अगम अपार;
ब्रह्मानंद कहत सुन मनवा, सोहं दशमा द्वार, द्वार. अब तो० ४

पद ११४.

अब तो अनुभवको रस चाखीओ, सुज्ञान, ज्ञान. अब तो०(टेक)
मन अरु बुद्धि चित त्यां नांहीं, नहीं इंद्रिय नहीं प्रान;
जागृत सुपन सुशुप्ती नाहीं, नहीं ज्ञाता नाहि ज्ञान. अबतो० १
ध्याता ध्यान ध्येय ज्यां नाहीं, नहीं त्रयपुटी भान;
सर्व कल्पना रहित अखंडित जानो चतुरसुजान. ज्ञान, अब० २
नेति नेति जिह वेद पुकारत, नहीं पहोंचत मन वान;
स्वप्नभोमिका तामें नांहीं, कहां पर कथीए ज्ञान,ज्ञान. अब तो० ३
घटपट् दृष्य रूपसो नाहीं, नहीं होयत अनुमान;
ब्रह्मानंद कहत सुन मनवा. सोहं पद निरवान, वान. अब तो० ४

पद ११५.

हरिरसको न बिसार, मन मांहें भांति सुख होये. हरि० (टेक.)
चंद्र सूर्यदर कनियर गरजे, बरसे अमृत धार. मन० १
स्वासोस्वास ध्यवत निरंतर, ताको करो आहार. मन० २
झिलमिल झिलमिल बिजुरी चमकें, शोभा बनी है अपार. मन० ३
ब्रह्मानंद रसको कोई रसिया, ताकों सत बलहार. मन० ४

धन औरत पुत्र औ नौकर, कोई काम न आयो;
भगवानदास रामके भजनबिन, पाछेसें पछितायो. हे मन॰२

पद १३९.

हे प्रभु कीजे जगमें पार. (टेक.)
क्षमा करहु अपराध नाथ, विनती अवकी बार;
मैं मति मंद मलिन दीन, तुम सोच विमोचनहार. हे प्रभु॰
मैं खल कामी कुटिल कलिमली, तुम प्रभु विपति बिदार;
मैं अघखानि विषय अनुरागी, तुम विषयन मदमार. हे प्रभु॰२
मैं पामर अति पतित गलायन, तुम पावन पतित उधार;
अहो नाथ मम ओर कृपाकी, कोर कृष्ण मुरार. हे प्रभु॰३
कठिन कराल काळ मायाने, रचि कर किया तयार;
भगवानदास कर जोरिके ठाढे, प्रभु सुनहु पुकार. हे प्रभु॰४

पद १४०.

हे मन सुनहु बात हमारी.' (टेक.)
जनम तहूंते आयु घटत है. सब कहत अबे सुन यारो;
लगत प्यारो बढता ज्युं ज्युं यह बदन सवारो. हे मन॰१
वृद्धापन जब आयो तेरा, डोकरा कह कह सबन पुकारो;
यह सब जानो न जानो रे मनुवा, यह तो कालको चारो. हे मन॰२
बालूके मंदिरमें रह कर, हुकुम चलावो हजारो;
वृक्षकी छाया यहि तनु जानो. पलक उठाय निहारो. हे मन॰३
दिन दिन पालन पोषन यह तनु, छनमें होत जु छारो;
भगवानदास आश रघुवरकी, अबकी बार उबारो. हे मन॰४

पद १४१.

बाजै एक तार सुनत दिन रतियां. (टेक.)
अनहद तार अलख गति बाजै, कैसे कहो कुदरतकी बतियां;
पांच तत्वका बना तमूरा, खुदी लगी है योग युगतियां. बाजै॰१
कर फेरै फर तार नचावे. तिरगुट महल चढि नाचत सुरतियां;
भगवानदास एक सखी सयानी, कैसे कहो गगनकी बतियां. बाजै॰२

पद १४२.

छोडो मन मनकी कुटिल कुबानी.' (टेक.)
हंसननें बहुत समुझाये, तुमने एक न मानी;
छोडत नहिं तुम बानि आपनी, विषको अमृत जानी. छोडो॰१

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible])
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

नूर तख्तपर निरंजन निरख्यो, प्रेम जोगने परकाशी।
मोरी जीवनमां पियाजी पधार्यो, आप गुरु ए अविनाशी. किया० ४
रूप स्वरूप श्रोही धुन लगी, निर्गुण खेले मांहे निरादी;
मारवी देवारास भने ब्रह्म मढेल, अट पहर धारे मारवी. किया० ५

भीम.

—:0:—

पद २४८.

मैं पण दासी मोरी दासी, पीया तोरा चरनकी।
संग आठ सखीर राखी, दीनबंधु घर देवा आयो कामी.
गोकुल गामना वासी, मैं पण तोरी दासी. (टेक.)
सदा बाई बालकृष्णकी, संग श्रीधरण श्याम,
चित्रना कटांरा भर्ण मोकल्या, में केशव तमारो नाम.
बड बारी भक्तालणी, पाई हती प्रेम जामनां प्यासी।
ए प्याले सिरे मुई होय तो, वास जगतमां हांसी. मैं पण० १
मिणा गोकुल में कपाई भाभी, जेनी प्रेमभक्ति पुराणी;
गावी भक्ति मारगे लगी, जद भीख घेर पाई देवाणी
कर्यां मेहेलो देवो पोतानुं मन लई, थया दीनबंधु दासी;
ए मांहेल्लुं में मने कोई उपन्ने, मारे श्याम कर वास मारवी मै० २
हीरीशाईना बोल सांभळी, सुरता लागी श्याम;
बळरामोथी दाळ उतार्यो, पधी धार्यो प्रतिज्ञा नाम
महाराज कारण प्रभु पेर पधार्या, पामी न करी पाछी;
पेर पाखंडीने मरम तोड्यो, एमां नहि कंई पाप कार्यो मैं पण० ३
पाळे दियो गिरधारी अंबर आर्यो, तुम्हो तारी आरत्या
महाराजसाथी मेळविया हतो, प्रभुजी हता एनो पास
गुरु चरणोने कर्यो सुजाण पटरमां दासी गजनी फांसी
ए पंडाणा सवे आवजो मे श्यामा, वृन्दा रे दमका वासी मैं पण० ४
शिव सुमतार मे धार्दिक मळ्या, गुरुदेव ब्रह्म सरीखा धार
पाटल तमपण हृदयमांहना हटाया, कदा कदु कल्पद्रुम विस्तार
मालणभाभा जेणा सरखारो, जेणे तन दीधां पोतानां ...।
जोर काढुं में बहु न भिख्या, आर्पीय हेतना त्यारी मैं पण० ५

प्रीति मधुप केतुकी कुसुम बस, कंटक आपु प्रहारे;
प्रीति जानि जैसे पय पानी, जानि अपनपौ जारे. ऊधौ० २
प्रीति कुरंग नाद रस लुब्धक, तानि तानि सर मारे;
प्रीति जानि जननी सुतकारन, कौन अपनपौ हारे. ऊधौ० ३
भोळानाथ प्रीति गोपिनकी, कहु कैसे निरुवारे;
प्रीति बिचारि नारायण देख्यो, भक्तनके हितकारे. ऊधौ० ४

पद १५०.

ऊधौ मन मानेकी बाता. (टेक.)
जरत पतंग दीपमें जैसे, औ फिरि फिरि लपिटाता;
रहत चकोर पुहमि पर मधुकर, नीरस अकास भरमाता. ऊधौ० १
ऐसे ध्यान धरो हरि हरजीपै, छिन इत उत नहि जाता;
दादुर रहत सदा जल भीतर, कमलहि नहि नियराता. ऊधौ० २
काठ फोरि घर करो मधुप जिमि, बंधे अंबुजके पाता;
बरखत बरखत निसिदिनी ऊधौ, पुहमी पूरि अघाता. ऊधौ० ३
स्वाति बुंदके काज पपीहा, छिनु रटति चहाता;
सोहि न भाव अमृत फल भोजन, मोमरिको ललचाता. ऊधौ०४

पद १५१.

हमरे कौन जोग व्रत साधे. (टेक.)
मृगत्वच भस्म अधारि जटाकों, को इतनों अवराधे;
जाकी कहुं थाह नांहि पैये, अगम अपार अगाधे. हमरे० १
गिरिधरलाल छबीले मुखपर, ऐसे बांधको बांधे,
आसन पवन बिभुति मृगछाला, ध्यानतिको अवराधे. हमरे० २
भोळानाथ मानिक परिहरिके, शरण गांठको बांधे.
निसि दिन याहि करत उन हरिकी, ज्ञानजोग हम साधे. हमरे० ३

मछंदर.

—:०:—

पद १५२.

श्याम सखको पहर जोगी, नाम है निर्वाण.
जोगी जुक्तिसे प्रमाणो. दया कफनी पेरि राना. नाम है० (टेक.)
मूल बांधो पवन साधो पीओ आतमपान है,
सुखमला धरो वरे आसन छूटे आवागमन है नाम है० १

पांच मारो तीन बांधो, आठ द्वारा फाट;
उलट हंसा पियो पाणी, त्रिवेणीके घाट. नाम है निर्वाण० २
ऐसा है कोई शब्दभेदु, गगन गरजा आय;
कोण सींचे कोण पीवे, कोण मांहे रमाय. नाम है निर्वाण० ३
गरज्यत घेघी रैन बरसिया, गगन गरजा आय।
आप सींचे आप पीवे, आप मांहे रमाय. नाम है निर्वाण० ४
मार ममता मेल संशय मोडि सघळा द्रोह।
भणे मछेंदर सुणो गोरख ऐसा एसा होय. नाम है निर्वाण० ५

मदन.

— o.—

पद १५५.

सुनु पंडित रैया कथन बरन निरसैयां. (टेक.)
एक बरनसें सकल परा, दूजे कहा ठहरैयां;
ब्रह्मा विष्णु महेश प्रगट भये, से कुल कानी लगीयां. सुनु० १
आदि वेद वेदांत कहत है उनहुका गोहैरैयां;
कौन ज्ञानसें चारि कहत हु, वेदउ मता उडैयां. सुनु० २
पूजा नेम तपस्या आछीतें सब धिरनिक भैयां;
फटिक पछोर पूर कर सौदा, दूर बाहायो पैयां. सुनु० ३
मोधि बोधिकै मोहि बतायो छांड कपट चतुरैयां:
रामरमासो पूरा पंडित, कहत मदन मुस्नैयां. सुनु० ४

मनसुर

— —

पद १५६. (गजल.)

तुझे हये शोक मिलनेका, समज कर रज पाता जा. (टेक.)
जलादे खुद नमाइकु, भस्म तनपे लगाता जा. तुझे० १
पकड कर इश्ककी झाडु, सफा कर दिलके हुझरेकुः
दुईकी धूलकुं लेके, मुसल्लापे उडाता जा तुझे० २
मुसल्ला फाड तसबी तोड, किताबां डाल पानीमे,
पकड दस्तमये परस्तोंका, गुलाम उनका कितासा. जा तुझे० ३
मक्के न कर सिजदा, न रख रोजा न मर भूखा;
जूका तोडदे कूझा, शराबे शोक पीता जा. तुझे० ४

थामीन, उनकुं छोड कर तुं जा।
रका, हुंप मेल इक मिलाता जा. तुमे० ५
ाना, इकमेने दीलमें पेहेचाना;
ाणेजाना, उसीके बीच आता जा. तुमे० ६

मलूकदास.

—:o:—

पद १५७. (भैरव.)

ामकी भजप दिन रात रे. (टेक.)
ं नहिं बनिजाहिं जाउं रे;
जनते मैं बैठे बैठे खाउं रे. मैं अपने० १
ुु न सियानी सीहुं रे,
रजनते मैं रंगे रंगे पीन्हुं रे: मैं अपने० २
निहारी हों मैं सुघाकी पेहरे,
करि हों मैं रामसे सनेह रे. मैं अपने० ३
मलूकदास सुनु नर लोइ रे;
भजन बिनु मुक्ति न होइ रे. मैं अपने० ४

मध्वमुनीश्वर.

—:o:—

पद १५८.

चिंता सर्वांची हरिला. (टेक.)
ुरीं संचय केचा. चारा पुरवी तयाला; चिंता० १
ापाणाचे पोटीं, जीवन देत तयाला; चिंता० २
ग जो अहार आणुनी, कुंअर नीमिं तयाला: चिंता० ३
ेश्वर विश्वरुपा मुखीं, हानुपेक्षी कवणाला: चिंता० ४

मानपुरी.

—:o:—

पद १५९.

श्रीहरि मार्गं पुढें दाटला. (टेक.)
तेकडे आपणचीं झालों, स्वयें सदोदित थाटला; श्री० १
ीं निजरूप गुरुचें, संशय समूळि आटला. श्रीहरि० २
ला अनुभव आला, जन्ममरण फाटला; श्रीहरि० ३

पद ११४.

माई मोरे नयन बसे रघुबीर. (टेक.)
कर शर चाप कुसुम सर लोचन, ठाडे भये रनधीर. माई० १
ललित लवंग नव नागर लीला, जब पेखो तब धीर. माई० २
मिरां कहे प्रभु गिरधर नागर, वरसत कांचन नीर. माई० ३

पद ११५.

माइ मैने गोविंद लिन्हो मोल. (टेक.)
कोइ कहे हलका कोइ कहे भारी, लियो तु तराजु तोल. माइ० १
कोइ कहे सस्ता कोइ कहे महँगा, कोइ कहे अनमोल. माइ० २
बेंद्रा बनके कुंज गलिमें, लिया बजाके ढोल. माइ० ३
मिरां कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्व जनमके बोल. माइ० ४

पद ११६. (प्रभात-झिंझोटी.)

अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई. (टेक.)
माता छोडी पिता छोडे, छोडे सगा भाई;
साधुसंग बेठ बेठ, लोक लाज खोई. अब तो० १
संत देखि दोड आइ, जगत देखि रोई:
प्रेम आंसु डार डार, अमरबेल बोई. अब तो० २
मारगमें तारण मिले, संत राम दोई;
संत सदा शिश उपर, राम हृदय होई. अब तो० ३
अंतमेंसे तंत काढ्यो, पिछे रही सोई;
राणे मेल्या विषका प्याला, पीने मस्त होई. अब तो० ४
अब तो बात फेल गई, जाणे सब कोई;
दास मिरां लाल गिरधर, होनी थी सो होई. अब तो० ५

पद ११७.

लागेल प्रेमनी दोरी, गळामां अमने, लागेल प्रेमनी० (टेक.)
आनी कोरे गंगा व्हाला, पेली कोरे जमुना व्हाला,
वचमां कानुडो नागे फेरी, गळामां अमने० १
वृन्दा रे वनमां व्हाले, धेन चरावी,
वांसळी वगाडे घेरी घेरी, गळामां अमने० २
जलरे जमुनानां भरे, पाणीडां ग्यांता,
भरी गागर नाखी ढोळी; गळामां अमने० ३

वृन्दारे वनमां व्हाले रास रच्यो रे,
मामड काळा में राधा गोरी; गळामां अमने० ४
बाई मिरां कहे छे प्रभु, गिरिधरना गुणवाळा,
चरणोंनी दासी मीरा तोरी. गळामां अमने० ५

पद १६८.

कानुडे न जाणी मोरी पीड,
बाळी हुं तो बाळ कुंवारी. कानुडे० (टेक.)
जाउं रे जमुनामां भर पाणीडां ग्यांतां व्हाला,
कानुडे उडाड्यां आडां नीर,
नीर उड्यां फररर. कानुडे० १
वृन्दा रे वनमां व्हाले रास रच्यो व्हाला,
गोळीने गोपीनां ताण्यां चीर,
चीर फाट्यां चररर. कानुडे० २
हुं घरणागी काना तमारा रे नामनी रे,
कानुडे मार्यां छे अमने तीर
तीर वाग्यां [illegible] कानुडे० ३
[illegible]
कानुडे बाळीने कीधा राख,
राख उडाडी फररर कानुडे० ४

पद १६९

कानो मार्यो रे पुनागे मार्यो रे,
घर तो गमतां मुने नाथी० (टेक.)
वृन्दा रे वनमां प्रभु रास रमिया,
गोळने गाणामां घेर्या कान. घर तो० १
हाथी ने घोडा बाई माल खजाना,
हैया केरो हार ले घर तो० २
तलभर जवभर घडो नथ कीधो,
जवे तोळीने पाछो ले. घर तो० ३
बाई मिरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,
चरणकमळ चित दे घर तो० ५

पद १७०.

मंदिरियांमां दिवडा विनानुं अंधारुं, मंदिरियांमां० (टेक.)
झळमळ्यां देवळ उभो रह्यो थांभलो रे,
आडुं नहि झाले पना भार रे. मंदिरियांमां० १

हाथमां वाटकडी घरोघर घुमती,
पोहने थालो आंधारं. मंदिरियांमां० २
उठि गयो वाणियो ने पडी रही हाटडी रे,
जमडा फरे छे पिणाणुं. मंदिरियांमां० ३
बाइ मिरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,
आवता जमडाने पाछो वाळो. मंदिरियांमां० ४

पद १०१.

मारा प्राण पातळिया वहेला आवो रे,
तम रे विना हुंनो जनम जोगण हुं रे. मारा० (टेक.)
नाभिकमळथी सुरता रे चाली,
जइने त्रगतपर राम रचीला;
सुगमन नारी पती सेज बिछावे,
ते दि रंग भिना छे रासधारो. (वे वार.)
तम रे विनानुं मारे अंतर अंधारं रे,
मारा जगना जीवन. मारा० १
सांचुं घरेणुं मारे तुं छो रे शामळिया रे,
अवर घरेणुं मारे हाथ नहि आवे रे;
कुंवरबाईनां जे दि मामेरां पूर्या ते दि,
छाब भरीने वहेला आवो रे. मारा० २
साध रे हरिना मोलाना वाघा शिवडावुं रे,
प्रीतमजीने प्रणाम करीने
विठ्ठलराय जे दि परवाने आव्या ते दि,
बिराणा छे वरमाळे रे. मारा० ३
कागळियानो जे दि फटको नहोतो रे,
मस रे मोंघी ने जे दि लखण पण न्होती रे;
म्हाला विठुर ते जइने परठुं कहेजो,
तम एक वार मळवाने आवो रे मारा० ४
मधुरी नादनी मोरली रे वागे.
सुरतियांमां राधाजी जागे रे;
मिरांनो स्वामी जे दि गिरधर मळशे,
ते दि दासीना दुर्भाव भागे रे. मारा० ५

वृन्दारे वनमां व्हाले रास रच्यो रे,
कानड काळा ने राधा गोरी: गढामां आमने० ४
बाई मिरां कहे छे प्रभु, गिरिधरना गुणवाला,
चरणुंदी दासी मीरा तोरी. गढामां आमने० ५

पद ११८.

कानुडे न जाणी मोरी पीड,
पाणीडां हुं तो चाल्ली भरवा. कानुडे० (टेक.)
[illegible] जमुनामां जेम पाणीडां भर्यां म्हाला,
कानुडे उडाड्या [illegible] नीर,
नीर उड्यां [illegible] कानुडे० १
वृन्दा रे वनमां व्हाले रास रच्यो म्हाला,
सोळसे गोपीनां ताण्यां चीर,
चीर फाट्या [illegible] कानुडे० २
हुं [illegible] नामनी रे,
कानुडे मार्यो [illegible] अमने तीर,
तीर [illegible] कानुडे० ३
[illegible] गिरिधर नागर,
कानुडे [illegible] काढ्यां सागर,
सागर [illegible] कानुडे० ४

[illegible]

[illegible] पुनारो माग्यो रे,
[illegible] मुने काळो० (टेक.)
[illegible] ज श्री राम रमिया,
[illegible] खेल्यो फाग. घर तो० १
[illegible] बाई मारु खजाना,
हया [illegible] घर तो० २
[illegible] अवसर थयो नव कीधो,
[illegible] नाखोले पाछो ल. घर तो० ३
बा. मिरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,
[illegible] कमळ चित रे घर तो० ५

पद १२०.

[illegible]रियांमां दिवडा विनानुं अंधारुं, मंदिरियांमां० (टेक.)
गळगळगां देवळ उभी रही थांथली रे,
वानु नहि झाल्य एना भार रे. मंदिरियांमां० १

हाथमां पाटल्‍डी घरेघर घुमती,
कोइने आलो धोखारे. मंदिरियांमां० २
उडि गयो वाणियो ने पडी रही हाटडी रे,
जमडा करे छे धिंगाणुं. मंदिरियांमां० ३
बाइ मिरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,
आयला जमडाने पाछो वाळो. मंदिरियांमां० ४

पद १०१.

मारा प्राण पातळिया वहेला आवो रे,
तम रे विना तुंतो जनम जोगण छुं रे. मारा० (टेक.)
नाभिकमळथी सुरता रे चाली,
जइने त्रकुटपर रास रचीला:
सुखमन नारी एनी सेज बिछावे,
ते दि रंग भिना छे गासधारी (बे वार.)
तम रे विनानुं मारे अंतर अंधारुं रे,
मारा जगना जीवन. मारा० १
साचुं घरेणुं मारे तुं छो रे सामळिया रे,
अवर घरेणुं मारे हाथ नहि आवे रे:
कुंवरबाईनां जे दि मामेरां पूर्यां ते दि,
छाव भरीने वहेला आवो रे मारा० २
साव रे हरिना सोनाना वाघा दिवडावुं रे,
प्रीतमजीने प्रणाम करीने
विठ्ठलराय जे दि वरवाने आव्या ते दि,
विठाणा छे वरमाळे रे मारा० ३
कागळियानो जे दि कटको नहोतो रे,
मस रे मोंघी ने जे दि लेखण पण न्होती रे:
व्हाला विदुर ने जइने पत्र लखेजो,
तम एक वार मळवाने आवो रे मारा० ४
मधुरी नादनी मोरली रे वागे
सुरतियांमां गयाजो जागे रे:
मिरांनो स्वामी जे दि गिरधर मळशे,
ते दि दासीना दुर्भाव भागे रे. मारा० ५

पद १७२.

ध्यान धणी केरुं धरवुं रे. वीजुं मारे शुं करवुं.
शुं करवुं रे सुंदर श्याम, बीजाने मारे शुं करवुं. (टेक.)
नित्य उठीने अमे नाहिये ने धोइये,
ध्यान धणी तणुं धरिये रे; वीजुं मारे० १
संसारसागर महाजळ भरियो रे व्हाला,
तारे भरोंसे अमे तरिये रे. वीजुं मारे० २
साधुजनने भोजन जमाडिये व्हाला,
जुठुं वधे ते आपण जमिये रे, वीजुं मारे० ३
वृन्दावनमां रास रच्यो रे व्हाला,.
रासमंडळमां तो अमे रमिये रे; वीजुं मारे० ४
हीर ने चीर मने काम न आवे व्हाला,
भगवां व्हेरीने अमे भमिये रे; वीजुं मारे० ५
बाइ मिरां कहे प्रभु गिरिधर नागर,
चरणकमळमां चित धरिये रे, वीजुं मारे० ६

पद १७३.

नागर नंदा रे बालक फंदा, छोडी दीधो जगना धंधा रे, नागर०
मारी नजरे रहेजो रे, नागरनंदा० (टेक.)
कामने काज मने कांइ नव सुझे,
भूली गइ छुं मारा घरधंधा रे; मारी० १
आडुं अवळुं मे तो कांई नव जोयुं,
जोया जोया छे पुनम केरा चंदा रे; मारी० २
बाइ मिरां कहे छे प्रभु गिरिधर नागर,
लागी छे मोहनो मने फंदा रे; मारी० ३

पद १७४.

कायकुं न लायो तव तुं कायकुं न लायो,
रामजीको नाम कायकुं न लायो. (टेक.)
नव नव मास तुंने उदरमां राख्यो,
झुलणे झुलायो तुंने पारणे पोढायो. रामजी० १
रतनसे जतन करी तुंने राख्यो,
वडो रे भयो तबतें कुळ लजायो. रामजी० २

गुणकाचो वेरो गयो माहे वाँहे,
पिता विन पुत्र न गुणकाचे पाहियाची. रामजी० ३
बाई मिरां कहे प्रभु नागर भजन विना,
आयो नहे अवतो मैं तहे गुमाय्यो. रामजी० ४

पद १०५.

मैंने म्हारा जोगीरा दुंढा रे, जोगीडा न पाया. (टेक.)
कानु धरत कुंडल जोगी गले विच डोली,
घर घर आलख जगायगा. मैंने म्हारा जोगीरा० १
आग चंदनकी जोगी गारी धुणी धखायगा,
अंग विभूति भभूत लगाया. मैंने म्हारा जोगीरा० २
बाई मिरां कहे ए प्रभु गिरिधर नागर,
चरणकुं ध्यान लगाया. मैंने म्हारा जोगीरा० ३

पद १०६.

दृष्ट मो लागीन डुंगरमां, को ते अंधारानी दृषे केम करीए;
केम ते करीए अने केम करीए, दृष मो लागीन० (टेक.)
डालना जड्य तो पालना, डाली न दालीए.
पेरो पहेरण मो अने पारो मरीए. दृष मो लागीन० १
भर रे धर्मने कर्मी हेकाणु रे रहाला, पसी
पत्थरमीनी वांसे अने परीए दृष मो लागीन० २
संसारसागर महाजल भरीआं पहाला, पसी.
वांहेडी झाली गिरवर पूरी मरीए. दृष मो लागीन० ३
बाई मिरां कहेरे प्रभु गिरिधर नागर, पसी.
गुरुजी मारे तो अमे मरीए. दृष मो लागीन० ४

पद १०७.

धर्मा तुं काहन गुमान भरी. (टेक.)
आपने मनपर छंद धरीये. काना ने चितरो. धर्मा तुं० १
जाग पाल नांगां न जानुं. तुं पलकी म्हवरी. धर्मा तुं० २
मिरां कहे प्रभु गिरिधरनागर राधाने हमरी. धर्मा तुं० ३

पद १०८.

च्याकर राखोजी, अमने च्याकर राखोजी.
गामळिया गिरधारी लाल. च्याकर राखोजी. (टेक.)
च्याकर रहिसुं बाग बनारसुं, नित उठि दर्शन पाइसुं;
वृन्दावनकी कुंजगलनमें. गोविंदना गुण गाइसुं. अमने० १

चाकरीमां दर्शन मागुं, समरण मागुं खरची,
भावभक्ति जागीरी जाचुं, तीनो वातां सरखी. अमने० २
प्रेम प्रीतसें ध्यान लगाया, रामकृष्ण लीलावा;
सुरत सुरत जागीरी पाया, मिरभे पट्टा लखाया. अमने० ३

पद १७९.

ज्ञानकटारी मारी, अमने प्रेम कटारी मारी. (टेक.)
मारे आंगणे रे रामजी तपसियो तापे रे,
काने कुंडल जटा धारी रे; राणाजी० १
मकनोसो हाथी रामजी लाल अंबाडी रे,
अंकुश दई दई हारी रे; राणाजी० २
खारा समुद्रमां अमृत मळियुं रे,
पयी छे भक्ति अमारी रे; राणाजी० ३
बाई मिरा कहे प्रभु गिरिधर नागर,
चरणकमळ बलिहारी रे. राणाजी० ४

मीठो.

—:o:—

पद १८०.

बंसरी बाज रही बनमें सुरत करतां सुरत लाग रही मनमें. (टेक.)
तीन लोक झनकार, अधराधर शब्द सुनायो,
सोइ शब्दके उपर, ब्रह्माने चार वेद बनायो;
सोइ वेदके भेदमें, जो समजे तो संत,
ओर सकळ परपंच है, तुं मत भूले गुणवंत. बंसरी० १
सुनी शब्दको नाद विरहको, वध्यो वधारो,
मोट गयो देहाभिमान अंगको गयो अंधारो;
भयो उजीआरो गेबको, नहीं चंद नहीं सूर,
रोम रोम रंग लाग रह्यो, नख शीख बरसे नूर. बंसरी० २
लगी शब्दकी चोट कोट कुबुद्धिको पायों,
निकस गई तन मांहे मोह मेवासी मार्यों;
ए बंसी श्री कृष्णकी, फेर बसायो शहेर,
कहे मीठो आज मोज करो, नहीं प्रीत नहीं वेर. बंसरी० ३

पद १८१.

अब याके मानके नूर, सांहबमें सोय दिखावेती;
मन मानो निरधार, सूरतें भरा मनमेंती;
इ देखो श्री कृष्णार्पण, पैर धराई भार,
सुरत शब्दमें सखी धूनमें, तद सोहे निर्धार. संतरी बाजोरि० १.
जिन सूरत इशकदार, साहेब धर शब्द मुलाको वेर्डी,
सुन्न दसवामें वार देर, प्याले धमाये वेर्डी;
सतगुरु नूर परवरा गयो, मन पूरे गुलशन. संतने बाजोरि० २.
नै मारा निज नाम विवेक, मन पाये धमारे वेर्डी.
पीर मगन विलास, पंगारी दरवो अधारे वेर्डी,
रोम रोममें शब्द रम रहा, सतगुरु परगट नूर. संतरी बाजोरि० ३.
सबी शब्दको मोह, मोह कुकुरिकरी पायों;
निरधारी सारंगार, मोह भेदारी मार्यो,
सही है कीतीमें सोनकी अद, सही है कीतीमें देर;
मोटो सोई सांई तेर अडे अम, सभी पवनकर सोहेर. संतरी बा० ४

भीमरागर.

पद १८२.

लावणी, "मोहन मुरली बाजे कृष्ण तेरा" ए राह.

शब्दंका परकाश गुरुजी जहां, सुरंग चलते पपजुंका;
परमधाममें सुसे गुरु जहां, बरसे नूर निरंजनका. (टेक.)
सहस्र दलका कमल कमल बीच, निरंजनकी सुरती है;
उनके पदकी क्या कहुं शोभा, झलमल ज्योत झलकती है,
उसी ज्योतमें ब्रह्मा विष्णु, उसीमें शिव शक्ति है,
अनेक मुनी ज्यां ध्यान धरत है, अनहद बाजा होती है.
नूर शब्दका उहां निशाना, चोथे तालपर मूरती है;
आठ पहोर ज्यां नूर बरस रहा, घोर रचना होती है;
चंद्र सूरका मंडल ज्यां है, वहीं नूर सब पृथ्वीका परमधाम० १.
पद्मासन लगाईके बेठे, उनमुनी मुद्रा ध्यान धरे,
अगम अगोचर आप जपे, सांई सुनमंडलकी सेहेल करे,

वंकनालसें फिरके आये, नाभिकमलसें प्रीत करे;
सत्य नामकी पेढ़ि लगाये, सुरत पकडके पांउ घरे;
ओघड घाटके घासि यारो, उनके सामे युद्ध करे;
निर्भे होके मारे निशाना, क्षमा पकडके धीर घरे;
पांच पचीशां मिलके आये, आगे रस्ता सूगमका. परमधाम० २
गंगा जमना नाहो बेठे, बीच भाग सरस्वतिका;
तरवेणीके उपर नहाले, एही अमल सब देवुंका;
सब देवनका दर्शन करके, भूख्या था कोई दिनका;
गुरुकृपासे तरुपत हुवा, भोजन पाया अमृतका;
भूख प्यास सब दूर रही जब, पिया है प्याला अजरांका;
दिया पियाला हुवा मतवाला, कुलफ खुला कोइ आगमका;
खुल्या कुलफ जब सब कुछ देखा, दर्शन पाया सतगुरुका. पर० ३
रामनाम समशेर पकडके, कृष्णकटारी हाथ लिया;
गुरुगमका जो बान चलाया, जमका मोरा मार दिया;
कामदेवकुं रखा केदमें मन मोर्जाकुं जेर किया;
काम मेवासी जीत लिया, ओर मोह रिपुकु दंड किया;
दश दरवाजे चोकी वेठी, निर्गुण झुंडा खडा किया;
अलकनामकी फिरी दुवाई, त्रिवेणीपर आसन किया;
गुरुशब्दमें अवाज सुण ले, बाजे बाजा अनहदका. परमधाम० ४
गुरु साहेबका दर्शन करके, अमरपट्टा लिखवाया;
अनंत ब्रह्मांड रिध्ध सिद्ध सहित, भाइ मुख्त्री सब पाया;
छींके कोटे बीज नामुके, गेबी सरुपसें मिलवाया;
अपने सरिसे कोइक जाये पद्मपुरीमें पोंचाया,
मिसरोगरकुं गुरुकृपासे तुकनगीर मुर्शद पाया;
गरीब होइके ढुंढत कबियर, निज वस्तु घर साहेबका. परम० ५

मुकुंदानंद.

पद १८१. (होरी.)

सुरता तुं क्युं भई हे दिवानी, सुरता० (टेक.)
दृष्ट पदारथ माया जाल हे, तामें क्युं तुं लोभानी;

रंग पतंग दो चार दिननका, आखर ग्यान निशानी;
याहि बात सत करी मानी. सुरता० १
कूड कपट छल बोल करत है, प्रभुसे प्रीत न टानी;
हरिभजन बिन गति नाहि तेरी, तुं मन हो मस्तानी;
हियेमें समज सियानी. सुरता० २
त्रिवेणी मध्य खुल रही भमंती, यामे प्रीत लगानी;
काल जंजाल सबे छुट जायगो, निर्भय होय निर्वाणी;
मिटी जाय चारो खाणी. सुरता० ३
मिल गई पियासे मिट गई भ्रमना, अरसपरस दरसानी;
नंदमुकुंद ए समझे सुघड नर, जो होय गुरुज्ञानी;
कराये पिछान पुरानी. सुरता० ४

पद. १८४.

ज्ञान गगनोंमें रहो गुल्ताना, तो मोहि नाट मिलंदा; (टेक.)
त्रिवेणीके घाट उपरे, अनहद नूर झलकंदा. ज्ञान० १
जोगी जन तो ऐसे चाहिये, जेणे तोड्या जगतका फंदा;
गुरुगममें सब साध्य करीके, रहत अखंड आनंदा. ज्ञान० २
भली बुरीके संग न आवे, ना करे कोईकी निंदा;
शिष आसनपर दृढ बैठके, ररुंकार शब्द सुणंदा. ज्ञान० ३
दुख सुख दोनो चित्त नहि आणे, साधुसे हेत धरंदा;
दशा हो करी रहे मगनका, तो जैसे गगन पतंगा. ज्ञान० ४
आत्मदृष्टिसें रहे अलमस्ता, सो जीवन मुक्त सोहंदा;
ओही साधकी जाउं बलिहारी, भणत नंदमुकुंदा. ज्ञान० ५

पद १८५.

मूलंही बांधो पवनां उलटे, गणपति देव निवासा;
पंकमाळका रस्ता पकडी. धर्गाल्यो सुनकी आशा;
ज्ञानीजन समे सुरता सायी, देखो जोग तमासा. (टेक.)
षेदहि बांधो चारों आपे, मुख फटे प्रकाशप्रकाशा;
वृत्ति नहीं विश्वमें भटकत, न होय ज्ञान उजासा. ज्ञानी० १
जेमर्मसही मूरर्ती पूज, बांधो जगतकी आशा.
स्वयं ज्योति निर्भ्रा दिन सब वधु करमो कालकी हांसा.
ज्ञानी० २

[illegible] सांवरा, [illegible]
[illegible] ६
[illegible]
[illegible] ७
[illegible]
[illegible] ८
[illegible]
[illegible] ९
[illegible]
[illegible] १०

बेहाग.

[illegible]

[illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible] १
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
[illegible] ४

सोरठ.

—

[illegible]

[illegible] आंगणे [illegible],
[illegible] (टेक.)
[illegible] धर्म [illegible],
हरि हरि मुखथी उच्चरीए. [illegible] १

रघुवीर.

—:o:—

पद १९१.

सोई धन्य प्रेमी जो निशदिन, निज प्रीतमको चाहैं,
प्रीतम प्रेम रंग जो राते, तिनको सकल सराहैं. प्रेमी० १
जिस मनमें प्रेमाग्नि प्रकटी, सकल कल्पना दाहैं;
कहे रघुवीर दास प्रीतमको, प्रेम करत उत्साहैं. प्रेमी० २

पद १९२.

हरे राम कहो हरे राम कहो, राम राम कहो हरे हरे. (टेक.)
मीन वराह हरी ओर कच्छप, रामचंद्र अवतार धरे;
परशुराम नरसिंह कृष्ण बल, सनकादिक चारो विचरे. हरे० १
नर नारायण यज्ञपुरुष है, कपिलदेव हयग्रीव तरे;
दत्तात्रय ऋषभ मन्वंतर, पृथु मोहिनी अति सुधरे. हरे० २
नारद वामन हंस व्यास प्रभु, बौद्ध होयकर ज्ञान करे;
कल्की कलयुग अंत माहिं भये, यह चोवीसी रूप धरे. हरे० ३
रंगनाथजी जगन्नाथजी, पुरी द्वारिकानाथ धरे;
जगदीश्वर परमेश्वर स्वामी, सर्वेश्वर सब ठौर भरे. हरे० ४
कमलनयन कमलापति केशव, कंस केस कर काल करे;
मनमोहन मथुरा मनरंजन, मन्मथ मुरली मुकुट धरे. हरे० ५

रविदास*.

—:o:—

पद १९३.

खूब खबर दिल खोजो, काया गुरुगममें; (टेक.)
भ्रमर गुफामें ब्रह्मकी निशानी, पंकनाळसें जे धम आणी;
चंद सूरज दो उलट समाया, तो उजियारा हरदममें. खूब० १

---

* आ महाराज रविदास कवि, प्रसिद्ध श्री भाणदास कविना शिष्य हता. एमना केटलाक अनुयायीओ गूजरातमां वडोदरा तरफ तथा काठिया-वाडमां पण केटलेक स्थळे छे. एओ लुवाणा क्षत्रिय ज्ञाते, ओ जाम-खंभा-ळिया तरफ थहो थयं उपर दई गया कहेवाय छे.

पद १९५.

भीतर देखो रामकुं, बाहेर क्या धावे;
बाहेर खोजे ना मिले, भीतर हरि पावे. (टेक.)
प्रथम गुरु सेवा करो, शोधी शुद्ध आचरना;
वचन कहे सो कीजिये, सत बात ओचरना. भीतर० १
संगत कीजे संतकी, गोज मर्म लखावे;
देदार पडदा अविनाशका, सो खोल दिखावे. भीतर० २
देवलमां गुरु देवता, एकांते ते बेठा;
खोल कमाडी श्रोरडी, पाया हरिका भेडा. भीतर० ३
सेज बिछाई सूनमें, डोरी सुरत लगाई;
कोइयक संत सुंदरी, नीत झूलत आई. भीतर० ४
देखत दारो अंखियां, केसा रूप बतावो;
नेन बेनसें अगोचर, रसनां गुनां गावो. भीतर० ५
मीठा केरी पूतरी, पाणीमें गई पेठी;
बाहेर कीस विधी निकसे, जो निकसे तो जूठी. भीतर०६
एसा ब्रह्म विचार हे, सतगुरुजी लखावे।
रविदास साची कहत हे, बहोरी जनम न आवे. भीतर०७

पद १९६.

लगी चोट सबदकी, घायल क्युं जीवे;
प्रेम भलका मार्या, अनहद रस पीवे. (टेक.)
अंग उघाडे लाग्या, भलका उर मांही;
घाव कलेजे साल्या, बाहर दीसत नांही. लगी० १
भीतर चकामां चूर हे, मन मस्तक छेदा,
पांचो मारे ग्यानसें, अंतर आई भेदा. लगी० २
सतगुरु मेरा शूरमां, बाचो निज बाले.
सनमुख झीले गुरुमुखी, धायो नेन द्वारा चाले. लगी० ३
वेद बहो औषध नहीं, टेमा नहीं लागे,
प्रांत खंचाई रामकुं, धायो निशादिन जागे. लगी० ४
सब तन हुवा जोरा, घायो गड गड बोले;
दरदी दीवाना दरसका, बाहु बारा डोले. लगी० ५
अविनाशी सतगुरु मल्या, मारनहारा पाया;
भाग चरण रविदास कहे, सो हुं मांई समाया. लगी० ६

धन्याई ना घडे रे, अनुभवी आलिंगीरे, आवी समझीने कर्यो ममता;
भावे मे उपाये रे, ने वेमो कांट दे, तो रे नी पोलानी रे प्रकाश.

प्रातन दुरन्नी रे. ५

विधि निषेध है रे, स्वप्ने ना होमवे रे, एना ध्यान नहीं आशा निराशा;
साधदानी रे, विरल विरल्ली रे, संत कोई माण धरत परिहास;

प्राइन दुरन्नी रे. ६

पद ३९९.

जागीने जोतां, स्वपनुं सभी गयुं रे, प्रगट्यो परमानन्द प्रकाश;
सद्गुरु दृष्टि रे, हरिविना अन्य नथी रे, दीठे मिथ्या मायाभास.

जागीने जोतां, १

उलटल श्यामी रे, सुरती सेजमां रे, नहीं गया पायक आलसा चंद;
मोडु गगनाम्ल रे, सर्वे घट मां रह्या रे, परस्या अक्षरातीत आनंद.

जागीने जोतां० २

गेखो ना शके रे, बुद्धि त्यां बापडी रे, मन वाणीथी पर ओम पदम,
समर्थ परे परमात्मा निरगुण, नींमोटिये रंचल संत.

जागीने जोतां० ३

सुनातीतरे सुनमें, सोदामणा रे. झलके नेनकुंज भरपूर.
बाहेर भीतर रे, सघरस शाम रमे रे, रविदास निरे प्राणसिंधु नूर.

जागीने जोतां० ४

पद ४००.

तुंने शरिरे रमतां झाल्यो रे,
मरम छे हीरो रे हांणो होसी. (टेक.)
आगळ छांया तारी पाछळ छाया,
छाया छे रे तमारुं रूप।
एक छायामां छुपाइ करी बेठो,
सद्गुरु सांई छे थारो अनूप मरम छे० १
आपे चलावे पाछो आप चलावे,
हीरा मांहेलो हीरो रे;
मन हंसलीयो करी ले परीक्षा भाई,
तें तो नाद सुंदरने प्यारो. मरम छे० २

अविनाशी छे अनेकज रूपे,
बालक थइ चालो रे;
परे बालक ज्यारे डोलिये पोढ्या भाई,
सेजे तालां खोल्यां रे. मरम छे० ३
संसारसागर महा जळे भरियो,
खेलतां रस आव्यो घणो सारो रे;
कहे रविदास संतो भाणप्रतापे भाई,
त्रण भुवनथी वेहा वारोरे. मरम छे० ४

पद ४०१.

सद्गुरुके प्रतापसें, खोजो पंड ब्रह्मांड;
परम सुनमें परम तत्त्व है, सो दरसें गढे मिसान. १
आग्या गुरुकी पायके, गाथा ग्यानकी गाउं;
संगत साधकी कीजे के प्याला प्रेमका पीजे. २
सतगुरु संत सरजनहार, वामें ओर नहीं विचार;
जडचेतन्य सर्वे एक, ऐसी राम मनमें टेक. ३
वासां गुरुकी आवे, सो पारस पलकमें पावे;
चिंतामणी कही साची सूरती पीउ रंग राची. ४
केवे गेहे सांभळे जेह, होवे वस्तुरूप विदेह;
वागी सद्दर लहेर वंस, प्रगटे भाण तोड न फंस. ५
वाका बालका रविदास, अनुभव कथ्या देव विश्वास.
रविदासके अक्षर चार, अक्षरें अक्षर ब्रह्मविचार ६
रे उ पाने हकार, विरला वस्तु ले विचार;
दोनुं दरिया नजरे नूर, सोई सकल है भरपूर. ७
मयत थइ रहा प्रमाण, विना वरण है अनुमान;
आणो शुद्ध पांचम दिन, चिंतामणी पूरण कीन. ८
डोरकी गम गुप्त ध्यान, मनशाळ पकवे ज्ञान;
एकल सारा मेरा किनारा, कहे रविदास तत्त्व विचारा. ९
चिंतामणि चितवे नर कोई, ताकुं आवागमन न होई;
चिंतामणीमें आनमल्हस, कहीं रविदास रही निरास. १०
दल नाभिमें उठत है, सत्या शोभा प्रकाश;
रविदास रंग लागिया, निरखी अखंड ज्योति अपार. ११

हीन कोऊ देखी मछिया, परम उदासी अभिन्न;
रविदास बिछुरे नहीं, ज्युं जल पानी मीन. १२

पद ४०१.

आत्मा निरभयो रे निर्वाण; आत्मा निरभ्यो० (टेक.)
सतगुरुके परताप, ज्ञान अनुभव उर आग्या;
मिथ्या भ्रम बिहंग, खोज कर भ्रम भय भाग्या;
अगुन सगुण सद्गुरु कहे, जाकी कला अनंत;
बेदबुद्धि बुध ना लहे, कोई समजत बिरला संत. आत्मा० १
नाभिकमलका मूल, मन अष्टकमल दल मांहीं,
त्रिकुटी बांका स्थान, दोई मिल सदा समाई,
शब्द शून्यमें उठत है, पुनिहि शून्य समाय;
नाद लीन भयो बिंदुमें, बिंदु निरंतर रहाय. आत्मा० २
पंचतत्वको विषय, मिली कर जीव कहायो;
देह इंद्रिय मन प्राण, प्राण सोई मांह बंधायो;
सोऽहं ब्रह्म अगाध है, लीपे छीपे नहीं सोय;
घटघट परगट रम रह्या, चीने बिरला कोय. आत्मा० ३
जीवकी शक्ति अज्ञान, शिवकी शक्ति माया,
इन दोनोंसे भिन्न, अखंड उद्योत उजाया;
जीव शिव कहेवाय नहीं, अब तुम नहीं कोउ दास.
विवेक पद परमात्मा, निजानंद निज धाम. आत्मा० ४
ए सद्गुरुको देश, निगम नेति कर गावे;
ब्रह्मा विष्णु महेश, खोज कोउ पार न पावे,
निजानंदको अनुभवो, नामरूपको नाश;
ब्रह्म मग्न होइ खेलिया, अन छता रविदास. आत्मा० ५

रविराम.

—:0:—

पद ४०२. (पावा-पीर-१०)

जोगिया सांई जो गगन करे वासा,
सेज सुन्नमें करे प्रकासा, (टेक.)
आसन अधर झुलतसे बेठी,
पांच रंगकी जले अंगीठी; जोगिया० १

तत पीवे अरु तपत बुझावे,
मीले नहावे सीतल पावे; जोगिया० २
आवे न जावे सोवे न जागे,
तीन लोक जोगी भिक्षा मागे; जोगिया० ३
नील अनील भेला नहि न्यारा,
जोगीकी गति अपरंपारा; जोगिया० ४
आप अकर्त्ता करावनहारा,
रविराम जोगी सचराचर न्यारा. जोगिया० ५

पद ४०४.

जोगी सोही निरंतर बोले;
नवरा न रहे थाके न डोले. (टेक.)
जेसा जागृत तेसा स्वपना;
आपे आप देख्या जग अपना. जोगी० १
पांच पचीश एकही नहि धावे;
उठत शब्द सोउ उलट समावे. जोगी० २
मेर मेखला सांतही टोपी;
सेली शिंगी रही अंग ओपी. जोगी० ३
हृष कमंडल प्रेम भर्या पाणी;
रहे मतवाला पिये रस छाणी. जोगी० ४
अद्वैत दंड अनुपम राचे;
विना पुस्तक सोही अक्षर वांचे. जोगी० ५
विना ध्यान लगावे ताळी;
विनही नेम देखे उजियाळी. जोगी० ६
रविराम भाण निरालंब जोगी;
रमे निरंतर सब घट भोगी. जोगी० ७

पद ४०५.

जोगी सोही जंगलमें रहेवे;
बके न मुखसें मौन न ग्रेहे. (टेक.)
धूणी मसाण तापे मतवारा;
आसन सिद्ध पवन करे आहारा. जोगी० १
पीवत कलप अलप नहि निद्रा;
चलतही उलट रहत ब्रह्मरंद्रा. जोगी० २

अनहद दिशी अखंड बजावे,
भरत अमरत कमल विकसावे. जोगी० ३
धुमधुम चोटी उलटा मह आया,
रविराम रविनांहि समाया. जोगी० ४

पद ४०६.

हम योगी सो रहे अकेला;
सतगुरु आप ज्ञानीका चेला. (टेक.)
सतगुरुसुं आगे कर लीना;
सतगुरु बिना मन रहे बहु दीना. हम योगी० १
हरदे ध्यान गुरु भगवाना;
हमही मिटे हम रहे निदाना. हम योगी० २
हम नहि थावर जंगम करमा,
हम नहि जात वरण आसरमा. हम योगी० ३
हम नहि पृथ्वि पवन नीर तत्वा;
हम नहीं कर्ता सृष्टि न सत्वा. हम योगी० ४
हम नहि अवस्था न वेद न वाणी;
चार देहें नहि परमाणी. हम योगी० ५
हम नहि ज्ञान ध्यान तप करणी;
शब्द रूप नाके नहीं वरणी. हम योगी० ६
हम नहि मध्यम उम सरूपा;
रविराम नहि छाया के धूपा. हम योगी० ७

पद ४०७.

हांरे ज्ञानी ले रे गगनमां गोती रे,
तविरयामां झळहळ दरसे ज्योति. (टेक.)
नाभिकमळसें नाद चलत है, तहां तपाथी बेठो एक तंती. त० १
इंगला पिंगला सुखमन सेज पर, अखंड आरती होती. तवि० २
अनहद बात कोई बिरला जाणे, तेने सन्मुख थाय अजोती. त०३
कहे रविराम संतो गुरुप्रतापे, अमने मळिया मेरामण साचुं मोती.४

पद ४०८.

अजरां रे मारगडो है शूरांको,
तहां तो काम नहीं कुडियांको. अजरां० १

गुंग माकर गळी रे गळामां, समझ समझ मुसकाई;
रविराम रत्न कहे कुणसुं, परन्तु घण झिल्याई;
घटोघट बोले रे, स्वांग तो अनेक धरी. प्याली० ४

पद ४११.

देखो हाल फकीरी बेरागी, कैसा खेल बनाया हे. (टेक.)
मूल पवनकुं दृढ करी, बांध्यो गगन पवन पर छाया हे;
नाभिकमल बीच किया निवासा, सोहं तार चित्त लाया हे.
देखो० १
स्वासा सार्धा अजपा होगी, बिन बादल बरसाया;
बीज चमूके मोतियन झड लागी, ताने दिल दरवेश दरशाया.
देखो० २
इंगला पींगला सुखमन साधी, गंग जमुन बिच छाया हे;
त्रिकुटी संगमें तार मिलाया, तो निर्मल रुप निहाला हे.
देखो० ३
झळमळ ज्योति अखंडित झळके, अनहद नाद बजाया हे;
ब्रह्मांड फोडके आया मेदाने, तकिया एक तकाया हे.
देखो० ४
नरज हे त्यां नूरज देखा, ने फेर खंड नहीं आया रे;
कहे रविराम जेणे शब्द सांभल्या, तेणे सुनमां बास लगाया हे.
देखो० ५

पद ४१२.

मन बडाप जेणे लीधी फकीरी, तेने नहीं दुख्धा नहीं दीलगिरी.
(टेक.)
जाका मिट गया मान गुमाना, ताकुं कहिये फकीरी रे. मन० १
सत्य वचनकु जीने पिछाना, ताका मीट गया डमडोला;
हाल फकीरीसें हुवा मस्ताना, खेंची कमान कपाट खोला. मन०२
जडिया जंजिर सतसंग सेवी, तल्प तलप तस्वी लीनी;
अमर पियाला जे नर पीये, गंगा जमनाएं घेरी. मन० ३
दादा आदमका हुवा दिदारा, वरणावरण विस्तारा;
सब घट मांहि जेणे साहेब देखा, ताका मिट गया फेरा. मन० ४

पद २१५.

जी रे संतो भेद आगमका बुझो. जी रे० (टेक.)
केने सदगुरु समरिये, क्युं कर लीजे नाम;
कहां नमीने निरखिये, नमे कहां छो आतमा राम. जी रे० १
श्वासोश्वासे समरिये, अहनिश लीजे नाम,
सुरत निरतमें निरखिये, तो घटघट आतम राम. जी रे० २
कहांसें बिजुरी करे चमुका, कहांसे ज्योति जागे;
कहां सदगुरुकी नोबत बाजे, कहो क्यां आप बिराजे. जी रे० ३
आप भेजमें करे चमुका, त्रीकुटी ज्योति जागे;
गगनमंडळमां नोबत बाजे, सगनें आप बिराजे. जी रे० ४
कहांसे आया कहां जायगा, कहां तमारं धाम;
आ काया पलमां पडी जाशे, पछे बताबो ठाम. जी रे० ५
हम आया हैं अलख नूरसें, अमरापूर है धाम;
सुरत चढी असमाने ठेरानी, यहा हमारो ठाम. जी रे० ६
कोन शब्दसें धून लगाई, कोन नाम निरधारा;
भीमदास रविदासकुं बुझे, मांहे खेलो के यारा. जी रे० ७
सत्य शब्दमें धून लगायो ओम नाम निरधारा,
रविराम भाणप्रतापे, सोहं सोहं छे अपारा. जी रे० ८

पद २१६.

दल दरियामां अखंड दीवो, देख्या बिना मारं मन डोले,
श्रांतिका भूला भवोभव भूला, सतगुरु विना ताळा कोन खोले. (टेक.)
गगन गुफामां गुरु ने बेठो, घार बावन ऊपर बोले,
नूर तखतपर नाम निरंजन गुरुमी ने गुरुनां कोई संत खेले. दल० १
आ कायामां रतन अमुलख परखे परखे झवेर मांहे घण तोले;
सोहं शब्दका कळिंद गुजारा संगाम सतगुरु मांहे बोले. दल० २
प्रेम जेनां हरे पुरव जनमनी भुधा धरम अनाथ मेले,
दोरी लगाला चलो मेरा भाई फळ भारबो जेम बृक्ष बेले. दल० ३
अंत लगाड्यां धर्यो हलुरनां अब मोरे जीव हवे केम डोले
कहे रविराम गुरु भाणप्रतापे, भजन प्याला कोई संत पीवे. दल० ४

पद २१७.

दल दरियामां हंसा न्हाता, कादव कपडा कथुं धोता;
पतिव्रता घर मार पतमलो, गुलतामे मन कयु रहेता (टेक.)

पद ३१५.

जी रे संतो भेद आगमका बुझो. जी रे० (टेक.)
बेनें सद्गुरु समरिये, क्युं कर लीजे नाम,
कहां तमोने निरखिये, तमे कहां छो आतमा राम. जी रे० १
श्वासोश्वासे समरिये, अहनिश लीजे नाम,
सुरत निरतमें निरखिये, तो घटघट आतमा राम. जी रे० २
कहांसें बिजुरी करे चमुका, कहांसे ज्योति जागे;
कहां सद्गुरुकी नोबत बाजे, कहो क्यां आप बिराजे. जी रे० ३
आप तेजसें करे झबूका, त्रीकुटी ज्योति जागे;
गगनमंडळमां नोबत बाजे, मगनें आप बिराजे. जी रे० ४
कहांसे आया कहां जायगा, कहां तमारो धाम;
आ काया पलमां पडी जाशे, पछे बनावो ठाम. जी रे० ५
हम आया हैं अलख नूरसें, अमरापूर हैं धाम;
सुरत चडी अस्माने ठेरानी, सत्य हमारो ठाम. जी रे० ६
कोन शब्दसें धून लगाई, कोन नाम निरधारा;
भीमदास रविदासकुं पुछे, मांहे खेलो के बारा. जी रे० ७
सत्य शब्दसें धून लगायो, ओम नाम निरधारा;
रविराम सत्य भाणप्रतापे, मांहे कोई छे बारा. जी रे० ८

पद ३१६.

हल दरियामां अगंड दीठां, देख्या बिना मारुं मन डोले,
ओतिका मूला सबी सब भूला, सद्गुरु बिना ताला कोन खोले. (टेक.)
गगन गुफामां गुण ने रेखो, बार बावन ऊपर बोले,
नूर तखतपर नाम निरंजन, तुरीया ने सुरता कोई संत खेले. हल० १
आ कायामां रतन अमुलख वस्तु, वस्तु भेरल मांहे घण तोले;
कोई शब्दथा करिले शुझाण, मेराम सतगुरु मांहे बोले हल० २
संत जेनी हवे पुन्य अनमनी, भुवा धरम अगाध मेले,
डोरी संधाना धनो मेरा भाई, फळ आप्यो जेम वृक्ष पेले. हल० ३
जेने लगाडयां धणी हसुनां, सब कोई जीव हवे केम पीवे.
कहे रविराम गुरु भाणप्रतापे, अजर प्याला कोई संत पीवे. हल० ४

पद ३१७

हल दरियामां हमेश न्हावा, कादव कपडा क्युं धोवा,
पतिव्रता घर नार पदमणी, गुणकामें मन क्युं खोवा. (टेक.)

धरे बकते थया मानवी थई गया,
तेदि लाल न राख्यो मुझपर भेद रे;
कहे रविराम संतो भाणप्रतापे,
ते दि भगवत रहेशे मारा भेद रे. पत्रा० ५

पद ४१९.

रामना भजन विना रे पार न पडीए:प्रभुना समरणविना.
आ काया धुतारानां शहेर छे. (टेक.)
आव्यो तो त्यारे तुं तो शी बोली बोलतो रे,
बोली बोलीमां घणो फेर छे, रे भाई फेर छे;
सुख रे संपतमां तुं तो तुं रे लोभाणो रे,
रामना भजनतुं तारे वेर छे. रामना० १
साधु थया त्यारे तुं रे थयुं रे,
प्याला प्यालामां घणो फेर छे रे, भाई फेर छे;
छीपमां उपजे पयां साचां मोतीडां,
मोतीडे मोतीडे घणो फेर छे. रामना० २
मोटप तारी तें तो घडीए न छोडी रे,
तारी मोटप तुंने घेडशे रे भाई घेडशे;
कुडीयुं कमायुं तारे चोपडे चडशे रे,
लेखां लेवा हारे तेडशे. रामना० ३
कहे रविराम तारा भजन विनानां रे,
दीधा विनानां क्यांथी पामशो. भाई पामशो;
साचे दले मारा प्रभुने समरो,
ये धणीनी घणी म्हेर छे. रामना० ४

पद ४२०.

जागोने मन चेतो आतम राय, देखीने नजर पाछळ फेरी.
घडी घडीनां घडियाळां वागे, कायानो गढ तारो लेशे घेरी.
मात ने तात तारां कुटुंब कबिला, वेनी बंधव सुननी कचारी:
तेमांयी तारे संग नहि आवे, न आवे जो घरनी नारी. जागो० १
दश दरवाजा तारा बंध कर्गी लेशे, घमसाण चडशे सवारी:
आरे कायामां धुंधुकार लागि रहेशे, जेम आवे अशाडी घनभारी
जागोने मन चेतो० २

हुं नहीं जाग्रत रे स्वप्न सुषुप्ति रे जी,
मारे पद छे अचळ निरवाण. हुं नहीं जीव० १
हुं नहि शब्दादि रे पंच मेंद्रमां रे जी,
हुं नहीं मन बुद्धि चित्त अहंकार;
मारे न देह रे मारे लिंगे रे जी,
हुं नहीं सुखिया आदे चार. हुं नहीं रे जीव० २
वेणी नहीं रे करणी वेणी कर्म रे जी,
सकळ प्रकाशित केवळ नाम:
स्वर्ग मृत्यु रे, पाताळ त्रिलोकमां रे जी,
नहो कांई मुज विना ठालुं ठाम. हुं नहीं जीव० ३
ध्याता ध्येयथी विवेक धाम छे रे जी,
निरानंद अने तुर्यातीत।
कहे रविराम रे मुने कृष्ण धोधरे जी,
जाण मुने पद कोई नथी रीत. हुं नहीं जीव० ४

रणछोडजी.

—:०:—

पद ४३४. (भैरव-ताल धमार.)

गंगाधर चन्द्रधर गौरी अर्धंगधर,
नागधर शूलधर निर्विकारी:
ज्ञान पर जोग पर त्रिगुणथी पर सदा,
कृपाधर भक्त आनंदकारी. गंगाधर० १
भंग कर नील कर नाग कर केश रे,
कटि कटिभ कर भुजा दंड भारी।
दास आमोदमां गुण दीनथी समरमां,
विजय दे रिद्धि दे श्री पुरारी. गंगाधर० २

पद ४३५.

भक्त शिव-शक्तिके जोग युक्ति बिना.
भुक्ति मुक्ति सदा अचल पावे,
अर्कके पूत धर्मराजे वैरके,
देवताई अमर धाम आवे भक्त शिव शक्तिके० १

ज्ञान उपदेश श्वेताश्वतर करत हैं,
तोउ पापिष्टको चित्त कारो;
विप्रसों छिप्र आचार्य पदवी लही,
दुष्ट तम शुद्र मद पान वारो; भक्त शिव शान्तिके० २
काल भय नाश सुरपाल तिय वालधर,
माल जंजालसौं दुःखकारी;
ध्यान धरिहैं सदा भक्तको कामरिपु,
भक्तवात्सल्य रनछोर प्यारी. भक्त शिव शान्तिके० ३

पद ४१६.

प्रात थयुं ध्यान धर जगतना ईशनुं,
जेथकी पापना पुंज दाझे;
पंचमुख सुख दातारने हृदयमां,
आण ते क्लेश काया न थाशे. प्रात थयुं० १
शूलधर शूळ संसारनां वाळशे,
भांजशे दुःख ने ताप झाझे.
नाम लेतां नमे पामशो मोक्षने,
धूडशो कामना क्रोधलाझे. प्रात थयुं० २
शुद्ध स्फाटिक जेवी देह उज्वल भली,
टाळशो श्याम तो भाग पांजे;
दोष जे रातना प्रात काळे प्रभु,
प्राननो ध्या ते रणछोड सांझे. प्रात थयुं० ३

पद ४२०.

चन्द्र अवतंस सुरनाथ उमयारवन,
गंगधारी जटी शूलपानी.
अंधकारी महादेव ईशान शिव,
त्रिपुर सूदन महेशान ज्ञानी. चंद्र अवतंस० १
त्रिपुर पुर दहन मन्मथ मथन पिनाकी,
सच्चिदानंद कैलासवासी;
काशिकाधीश जगदीश त्र्यंबक प्रभु,
ब्रह्म चैतन्यमय ज्ञानराशी. चंद्र अवतंस० २
स्वर्ग अपवर्ग दाता निराकार हर,
भर्ग भगवान भग नेत्रहारी;

दर्प कंदर्पभंजन गजाधीश रिपु,
भक्तरिपुकंदन आनंदकारी. चंद्र अघभंग० ३
पंचमुख षण्मुखमुख सुख पिनाकान प्रभु.
घनविघन हरन सुर असुरस्वामी;
प्रात उठि गाय रणछोड यह नामको,
आश्रितो जपे चित गरुडगामी. चंद्र अघभंग० ४

पद ११८.

भर्ग भवनाथ भूतेश भवभीतिहर,
भोगि आभरन प्रचंडभर्गा।
कालहर कामहर पापहर कृपाकर,
शूलिधारन कनु कर्म कर्गा. भर्ग भवनाथ० १
ईश हिमगारवन दुलारी नेमहर,
हाटकेश्वर हरि दर्पहर्गा।
धन्य रणछोडजी धन्य जेने धणी.
धरणिधर हारधर धर्मधर्गा. भर्ग भवनाथ० २

पद ११९.

अंबिकारमण अघहरण अंधककदन,
अमर अमरेश आनंदकारी.
परम परमेश परमातमा परम गुरु.
पुण्यमूर्ति प्रभु धी सुरारि. अंबिकारमण० १
मदनमर्दन महादेव मंगलनिधि
मौलि मंदाकिनी विमल वारि.
दीनबंधु दयासिंधु रणछोडने,
अचळ पद आपजु गंगधारी. अंबिकारमण० २

पद १२०.

अंतमें छोर नव काम दियनाम जप
करो जिमयँ तरो दुःखसिंधु.
भाल शशि बाल भालभाल मोह गरे
भक्त आधीन प्रभु दीनबंधु. अंतमें छोर० १
आश्रितो रंक रणछोड औ रजवर्षीन.
धेक मगराज कण्डा विराजे

जाहिसों चक्र हरि शक्र अमरावती,
पाय पुनि ताहिकी सेप साजे. भोरमें छोर० २
भक्त सुखकरन दुःखहरन अशरनशरन,
तरन तारन पिनाकी उदारी;
अमर अव्यक्त अर्धंग उमया सती,
नाग अरि नाग आभर्न धारी. भोरमें छोर० ३
अचल अचलेंद्रजाकांत करुनायतन,
योग फलरूप योगी सयोगी;
दास रनछोड नित प्रात यह नाम ले,
स्वर्ग अपवर्गको भयो भोगी. भोरमें छोर० ४

पद ४११.

रेन जागे मदन रंगरागे भयो,
भोर तोऊ तज्यो क्यों न गंगा;
नारिमें रसवस्यो प्रेमफंदा फस्यो,
एक तुमसो लिख्यो रसिक संगा. रेन जागे० १
मित्रके करपरस आजहु जाने नहि,
विकसवो पद्मनिसो सुगारो,
ताहिके वश भये मधुपसें शंकरा,
हे कछु कामकी रीत न्यारी रेन जागे० २
काकली सहचरी करत हे चिरोसो,
प्रात रागसे गुनीजन पुकारे,
तोऊ जागे नहि दंपती कान दे,
अगुरी पोढवो चित्त धारे. रेन जागे० ३
द्वार ठाडे सकल देव रनछोडसे,
तिहारे चरनको दरस मागे
आपके जागवेसे हमारे प्रभू,
परम आनंदके भाग्य जागे रेन जागे० ४

पद ४१२ (भैरव-ताल दादरो.)

शंकर सदाशिव भो किंकरको टारो;
दीन हीन बुद्धि जानि मोकों निस्तारो. (टेक.)
काया निकेतमें मोहको अंधारो;
श्रीमुख सुखराशि ध्यान दीपको उजारो. शंकर० १

पंच पंच इंद्रियके तासमें उगारो;
काम-क्रोध-लोभ जाल काटि काटि डारो. शंकर० २
आज महाराज लाजको नुं रखवारो;
रणछोडजी धरी पुनी आपदो सुधारो. शंकर० ३

रणसिंह.

—:०:—

पद ४११.

अणघड देखा है गुरु मूल शिखर गढमांही,
गुरुरूप देखा है; मंदा भर गुफाके मांही. (टेक.)
हाथज मांही पांकुं पायज नांही, गुरुनिश पुन न वेला;
उलटा सुलटा पीव रमता जोगी, अमरगुफाके मांही. अणघड० १
फूल नांही फूलवाडी नांही, नांही सुगंधा थांही,
प्रेम मगमीं रटन रटसणां, धाय त्रिवेणीके मांही. अणघड० २
बिना बादुगी बीज चमूके, गुरु अखंड दरसे यांही;
तेल बाती बिन दीप जलवत है, हीरा झलकत है मांही. अणघड० ३
ओधाधूंध नगारो वागे, गुरु मरघट गोलां मांही,
सुन्नमम मांही सेज बिछाये, त्यां पोढे अकलेश्वराई. अणघड० ४
पांच भात सब थाग मेरा, भेलरोकनें मनायो;
रायत चरणे रणसी बोल्या, गुरु मेरा गगन मांही. अणघड० ५

रणछोड.

—:०:—

पद ४१२.

ओळखी ल्यो अनुभवी आत्मा धर्मीमत कल्पवां शुं धाम.
मोहप मंत्रोमें धारशो. हरिने रानोमें देखा मय ओळखो० १
बारंबार मनमा देह नहि मळे जाणीने ए निर्धार
दिनपर्दिन आयुष्य निधीमें जेने जाणो न लागे वार ओळखो० २
मगन थोने गगनमां शुं भरमन, पारब्रह्म नथी धाम,
तन मन धन मूर्ये अर्पणुं, मळे गुरुजनमां सन्मान. ओळखो० ३

खेलाओ खेलो राम बोलिया, नुगरा मत रेणा कोई।
नुगरा मत रेणा कोई, गुधरदी फूल गुलाबनी. गुरुप० ४

रामरूपदास.

—:o:—

पद ४१७. (आसावरी.)

निराकार निर्गुण अविनाशी,सब घटमें हरि छाया है.(टेक.)
कुरान वेद पुरान अष्ट दश, शास्त्र किताब फरमाया है;
पढि पढि मर विचारत केते,लेकिन मर्म न पाया है.निराकार० १
कोटि तीर्थ व्रत जप तप पूजा, यह सब भर्म बताया है;
माथे धार चिहमत फदहूं, जूठे घंट बजाया है. निराकार० २
ज्यों ईश्वर मूरति मह बैठे, तब क्यों बाहर खोजता है;
जो बाहार भीतर फरकदई. पादोहि जन्म गंवाया है.निराकार०३
मन अस्थीर थीर करि बैठो, ध्यान गरिबी हदाया है;
रामरूपदास विचारि कहत यह, पावत जेहि उर दाया है.निरा०४

रामदास.

—:o:—

पद ४१८. (बरवा-पीलु.)

हरिके भजन विना कैसे तरोगे. (टेक.)
आशा बडो जीवनां जग थोडा, तृष्णाके रोगमे जन्मो मरोगे ह.१
भक्ति विना भटकत भवसागर, कोट पतंग ब्रह्मांड फिरोगे. ह. २
लख चोरासीके दुःख बहु भारी, अनंतवार अवतार धरोगे.ह. ३
सखी रामदास आश रघुवरकी, सद्गुरु शरण गये उगरोगे.ह. ४

पद ४१९. (काफी.)

जीवनां है दिन चार, बंदे राम समरले. (टेक.)
दोलत देखी फिरत दिवाना, भटकत मुंढ गमार. बंदे० १
धन जोवन बादलकी छाया, जातां न लागे वार. बंदे० २
काल कराल फिरत शिर उपर, पकडेगो सांझ सवार. बंदे० ३
करि सत्संग भजो रघुनंदन, उतरोगे भवजल पार. बंदे० ४
सखी रामदास भजो सिया पियकुं, स्वास उस्वास संभार. बंदे० ५

ऋषिराज.

—:०:—

पद ४४०.

जम दे नित्य सपाटा रे, कोई चेतणहारा चेतो. (टेक.)
टीटी टीटी दांत काढे शुं, पळमां वगडे पीटी;
धीठी दीठी घणानी वगडी, चडप आवी गै चीटी. जम दे० १
मात पिता जाणे सुत मारो, थाये दिन दिन मोटो,
मोत नजीक आवे छे एक दिन, खेल थशे भाइ खोटो. जम दे० २
बंधु जाणे बंधव मारो, जीवे जुग जुग जोडी;
काळ अचानक आवी पकडशे, तरत नाखशे तोडी. जम दे० ३
सोळ अंग शणगार सजीने, रोयडशा शुं रीझो;
एक दो लाल बेशाणा वनमुं, वेप वदलवो पीजो. जम दे० ४
दर्पण लइ शुं मुखडुं देखो, समजो जमनी शेहमां;
एक दो करशो काग कुलाहल, चडप सुवारे चेहमां. जम दे० ५
दारा पुत्र परिवार तजीने, जाशुं मिलकत मेली;
ऋषिराज रघुनाथ विना नथी, कोई बरावर बेली. जम दे० ६

पद ४४१.

जवरो काळ सपाटो रे माथे मरण वीकछे मोटो, (टेक.)
जंतर जाणो मंतर जाणो, जाणो तंतर टाळा;
काळ महा बळवान मद ज्यां, भुजो पडे धाराळा. जवरो० १
वैद बोलावो वैद वोलावो, करो उकाळा कुटी;
खूटी ते तो जरूर खूटी, टुटीनी नहीं बुटी. जवरो० २
ओषद खोदो सिखो शरोदो, तत्व विचारो ताजां;
नाडी भेद दहाडी रमो पण बळशे ऊंधा वाजां. जवरो० ३
जोष जुओ निर्दोष भणीने, कोश मुकनना काढो;
जम किंकरनो अजब झपाटो, गजब करी दे गाढो. जवरो० ४
वेश उतारो वेश उतारो, देश उतारो दूजे;
पकडे आवी मोत पलकमां, जीवडलो शुं सुझे. जवरो० ५
रांटी बदलो ओटी बदलो, लोटी बदलो लाखो;
दरद मर्दने गरद करी दे, मोत मर्द छे आखो. जवरो० ६

धर्म धरो अधर्मने मेलो, खांतेथी ल्यो खेली;
ऋषिराज रघुनाथ विना नथी, कोइ बराबर बेली. जबरो० ७

पद ४४३.

निश्चे रहेवुं नथी रे, माथे मोत झपाटा मारे. (टेक.)
फाल्या फूल्या शुं रे फरोछो, जुओ विचारी जगमां;
बणसंतां कांइ वार न लागे, रोग भर्यो रगरगमां. निश्चे० १
हाट भरो धन माट भरो, घाट करो भले मोटा;
पाट ठाठ सहु वार आठ पळ, पाणी तणा परपोटा. निश्चे० २
झगझग मेवाडी मोडीआ, झगमग दीसे डगला;
लाकडलांनी चेहो लागी, थयां धूळना ढगला. निश्चे० ३
आपथ डाहा कोमळ काया, उडया पलकमां पतो;
केडा मोरे वार नथी कांइ, चॉप करीने चेतो. निश्चे० ४
काशीवासी अति उदासी, जंगलवासी जोगी;
काळ झपटमां चपट थया, कंइ मान मालना भोगी. निश्चे० ५
मीठी वाणी पुरा पुराणी, जाणी वातो झाझी;
काळ कोळिया करी गयो, कोण किताबी काझी. निश्चे० ६
सगां संबंधी सउ स्वारथे, धनिना सउ घेलो;
ऋषिराज रघुनाथ विना नथी, कोइ बराबर बेलो. निश्चे० ७

पद ४४४.

पकडे काळ पलकमां रे, कांइ अजब झपाटो आतो. पकडे०(टेक.)
जीव विचारे अभेदान थइ, मेदान करीने महालुं;
काळ विचारे खेदान करवा, जोग मळे तो झालुं. पकडे० १
गड गड गड गड नोबत वाजे, अवरुं लश्कर झाझुं;
गड घड खड घड काळ हसेछे, कोइ भाळुं मारुं मारुं. पकडे० २
घोडो नाचे बरघोडामां, झग झग झळके झूलो;
जोडे जोने जमडा नाचे, लाडकडा शुं फूल्यो. पकडे० ३
नारी सारी घर सुत पुत्र जोइ, जीवडो सारुं जाणे;
काळ विचारे फरघळ करवा, आस पडावुं टाणे. पकडे० ४
जमादार सरदार तैयार त्यां, छडीदार नित्य बोले;
अमलदार बळदार काळ तो, गणे तणखलां तोले.; पकडे० ५

सुमरन दान ध्यान दया दासी, और सांनही न्हाई ;
धेन काम भूरा मन धन तरथा, तो अटल सांनहो देताई. मं० ३०३
कुबुद्धिसे मुक्त पेतो बढ़ निकसे, अरस सम्द सब सारी ;
सुरपति देव सकल सब वादे, पांच सखुर मिटाई. मं०ो० ४
सांची पांच निकिसी केताई, मुक्ता सकवान्नन बारी ;
कुबुद्धि चरनकी पंद बतांई, सुक्तम दास दिखाई. मं०ो० ५
सांसी सेती हेत कर निरखी, सद गैलो स्व मांई ;
सतके सब सत्ताके तीजी, सो मानसरे पाई. मं०ो० ६

पद ४४१.

केते दीठ मारग नेना टेर, चांद्रो, भटके मना धोड़ च्याव सहे (टेक)
अरपनोंथी फूंट परे मैं, सपरन सास धरे,
सरक टोपेंसे न्यारी गो थि, संतोंने सोत धरे, धाईनो० १
धारनां मर परजी न दुवे, सोय धर्न टरे;
शब्द विसेंसी खाहाना, छूटेंगे पास परे धाईनो० २
त्रिगुन पुतली ध्यान मूसनी, हो कर घाट घडे;
सारे संसारको सेन सुताजी देतो सजन बने धाईनो० ३
फापाधारीको अज्ञान, सठेके घोट धरे;
सुरतीता चन्द चला हैं चारे सो गदर पड़े. धाईनो० ४
परनानन्दजी हेतन देपटे अंगनां धीर धरे,
सतनामो स्वामीसे लौ, रे सदगुरु सर्वोत्तिना ढेर टरे धाई०५

पद ४४२.

सांची अकल कला सब जाना, मेरे दादा,
अकल कला न ओलखाणी० सं० (टेक.)
परथम तो पैदा कनिहो पवन तठ ने पानी हो जी,
बहुलासों लाल निर्गुण निराले, अगम गमतो आसा सं० १
घस थोडी रोजो बायडा, एक देख दुजो रापी हाजी;
घडने रे साथे चतर निराले, दुजो ओरे घर पाणी सं० २
पाउमी गयाकु रोजो, जगा सरघ नव आपी जे होजी;
घटी पलमां लेखां परजाणो. केहेना न रायी दाहापी सं०३
सुरना सामीसे, एक शब्द सुनाउं, भेद मुनाउं चापीरे होजी ;
दोय कर जोडी लक्ष्मन बोलयो, अनुभवे रमतो आणी.०४

आतमतत्वमें प्रकाशित भेलो, भळी ज्ञान परिब्रह्ममां रे हो जी।
कहे माळी रतनो हुं पामी, परिब्रह्म कृष्णा देव गगनमां. वरतो.४

पद ४५१.

हरदम दम मैं ह्वार कर, सारी ईर्द। पदचे प्याला जोई ले।
अजब अजवास सादेख संत मेरे, सोई भ्रम मिटमें होई ले. (टेक.)
तिमिर मिटाय लायक सारो, लगन मगन पीव होई ले;
भेल पेम पिव पुरन विचारो, सारी सुरते नाम पर जोई ले.हर०१
सतगुरु जाने सकळ जग ठगो, ए कांई डगे न डोले;
हृदे घट सुर्ती मेले माभिका, जीके सुगमन पाहीं जोई ले. हर.२
जब नहि जाने तब नहि मन माने, रटी प्रयने बोले;
ने गुरुज्ञान प्राप्त पद गुरुजी, सुरतो शब्द पाई जोई ले.हरदम०३
जे जलकुं तुम ढुंढन निकसा, सो तुंही आपोआप;
कहे रतनो माळी सो पद भागे,भरम गया अब दिलमें माप.हर०४

लालदास.

—:०:—

पद ४५२. (भैर.)

याको धेरे है रपटोला, याने हरिगुणगल कया होला. (टेक.)
उत्तम मांगे पैठन मांगे, मांगे रुपके मौला;
भूख लगे जब भोजन मांगे, दो रोटी औ दौला. याको० १
ग्यासा औ मखमूरी मांगे, मांगे नरम बिछाना;
आंख खुले जब निंदिया मांगे, पोग कहांसे होला.याको० २
छलबल करत फिरत जगमांही, मन पैठे कया मौला;
आइ परे जब यमके पाले, पा कछु और न गेला.याको० ३
यत्र मत्र सबही फल सांके, एक न सोभे टोला;
लालदास यह मतिका होला, मांगे चांदी सोना. याको० ४

हीलमबाई.

—:०:—

पद ४५३.

आवो मारा नायदुंना सोदागर, धिरा मारा.
पईआपण होरी देणी, पणमुं करो ले रे. हांजी. (टेक.)
काया कर कोटडीले वांरो वणमारो, वारदुरो गुण बोलीरे. आ०१

जहां देखुं त्यां वीरो वणझारो, दाता जहांरे देखुं त्यां बोलणहारो;
नमती धारण कीजे. आवो मारा शामळुंना० २
तन कर त्राजवां रे, मन कर तोलां, सुंदर काया तोलीजे. आ०३
एक मेरा वेलीडाने आदर दईजी, दाता (२)
पग धोई पावल लईजी. आवो मारा शामळुंना० ४
उजळाने उजळा फूल फरकीया, दाता (२) वाको संग न कीजे;
आप डुबेने ओरकुं डुबावे, दोनुं मिळीने डुबीजे. आवो० ५
एक मारो वेलीडो ने साहेब सरीखा, वाको संग करीजे;
आप तरे ने ओरनकुं तरावे, दोनुं मिळीने तरीजे. आवो० ६
माहम रातना हुवा गुरु मेला, समरथ ये साध मळीजे;
करजोडी लीलमबाई बोल्यां, मन माने भाव भरीजे. आवो० ७

प्रहाल्दास.

—o—

पद ४५४.

नाम शब्द जपो गुरु माळा, मिटे जनम मरण जंजाळा. (टेक.)
कर मन कुंची शमकी, चंदा खोल घटका ताळा;
ये ताळा तमे दूर करो तो, घटमां होई उजियाळा. नाम० १
काया भीतर भीग नगुंगर जेमां छे नव नेजाळा;
आरे कायामां एक रतन अमुल्य, जेने खोज खोजणहारा. नाम०२
घटमांहे गंगा घटमांहे जमुना, शुं तीर्थ करो रे अपारा;
ए संगममां तमे नाहो नाहो मन नाहो नदि नाळा. नाम० ३
करो स्नान तेमां पाप टळे, चित न करो बिजा चाळा;
प्रहाल्दास सद्गुरुने चरणे, निर्गुनका पंथ न्यारा. नाम० ४

वेणीदास.

—o—

पद ४५५. (प्रभात.)

जोवनमां भजो रे जो काया, तें केम रामने विसार्या रे. (टेक.)
रामनाम ने हरिये न रटयुं, गुण गोविंदना न गाया रे;
भूल्यो भूल्यो भागो आ भवमांहे, मनुष्यदेह गमाया रे. जोवन० १

सच्चिदानंदनु रूप पामीने, हरि हरिपदकमलनु माग्यों रे;
ब्रह्मदंतो शब्दें मंत्र पूरी. सब अज्ञान उगार्यो रे. जोबन० २
सांसारिक व्हाले पत्थर मार्यो. बाहर बैल उतार्यु रे;
अहंकारनो अंबर लीधो, सहजे मौला लाग्या रे. जोबन० ३
धीरजदास कहे चित्तनसागने, भव में दर्शन पाया रे,
मोह शुरनगा नाथ सच्चिदाना, धन्य घडीदाना आया रे. जोबन० ४

सच्चिदानंद ब्रह्म.*

—:o:—

पद ४५१. (होरी.)

हो देखो देखो रे, प्रभु चार्यो देन बजावे. (टेक.)
प्यारे प्यारे घटमें प्यारे प्यारी बोले,
जहां मोको नाम सुनावे रे. प्रभु० १
जहां अहंकार मगन अभिमानी,
जहां मन जुठडी गावे रे;
ज्यों मन बुद्धि रहत सो मधैया,
मोहि नहि जुद चलावे रे. प्रभु० २
सब स्वरूप भू आदिसें गावत,
सब लोकनमें सुहावे रे,
सच्चिदानंद ब्रह्म पर स्वरूप,
गावत नितमें सुनावे रे. प्रभु० ३

पद ४५२. (होरी.)

देखो देखो रे कामधेनु घडी ब्रह्म वाली. (टेक.)
तीन लोक आदि श्री स्तन गाजत, चिद्घन सुख देनारीये काम० १
"अ-उ-म" परनके स्तनसें दोहीवत, ब्रह्मलोक पय दानिये. काम० २
मृद पद इन्ससें दोहीवत पावत, भू आदिकमें सुखस्वानीवे. काम० ३
चोथे स्तनसें ज्यों पय पीयई. सोई पवन ब्रह्मवाली घे. काम० ४
सच्चिदानंद ब्रह्ममय उनकी, यासों की होंये जिदगानी घे. काम० ५

---

* पूर्वावस्थामां वडनगरा नागर ब्राह्मण, मनोहरदास नामे वसावदना निवासी संवत १८०१ नी सालमां थई गया; एमणे वेदांत तथा पुराणसंबंधी गुजराती तेमज हिंदी भाषामां केटलाक पुस्तको रच्यां छे.

पद ४५८. (सुमाच-तिताला.)

निपट निरंजन नाथन जाने, मन कल्पित बहु घाटहीं ठाने;
सब मिलि मानत बोत सयाने.निपट० (टेक.)
ठेत तान मिलि तननननननन,
लोक रिझावन नचत दिवाने. निपट० १
त्यागी बनके पखाज बजावत,
किडाकिडझां किडाकिडझांमें मस्ताने. निपट० २
खानपान रस भोगमें गाने,
धिकतां धिकतां तोहि मृदंग बखाने. निपट० ३
आप बजावत आप न जानत,
जेहि सच्चिदानंद ब्रह्म नेराने निपट० ४

पद ४५९. (राग उधानो.)

भल कलियुगमें भांड भवैया, परमहंस बने बैठन भैया.
कुत्सित नरकु कहत कनैया भल० (टेक.)
ब्रह्म विद्याकी बात न जानत
झुम झननन ठुम ठनन बजैया. भल० १
तोते जीमि पढी कागकी नाईं,
कौवो कौवो कौवो कौवो कौवो, कौ करैया. भल० २
दूना कंठी गलेमहु डारिके,
पामर नरके धनहीं हरैया. भल० ३
मृग जिमो राग रसिक जन आगें,
नारददानी तुम दरदानी तुम् दरदर गवैया. भल० ४
सच्चिदानंद ब्रह्मसें उलटीके,
थनगन थनगन नाच नचैया भल० ५

पद ४६० (मल्हार.)

तिहारे शरन अब आयो, हरि हे मैं तो तिहारे. (टेक.)
बोहोत पुकार किये बोहोननकुं, भवजल कोई न तरायो, हरि० १
मेंव महीं पितु मातु चतुरधा, अग्निमें मोये जरायो;
तन छूटत पुनि जारि अनलमें, धूमकी राह पठायो. हरि० २
सब देवन मिलि स्वारथ लीने, यों बहु मोये भटकायो;

ऐसी मूरत [illegible] मूरतमें, [illegible]
[illegible] दीन [illegible] [illegible] ४
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] ५

पद, ४६१, ([illegible])

आनन्द [illegible] ([illegible])

[illegible] आनन्द १
[illegible] ;
[illegible] आनन्द० २
[illegible]
[illegible] आनन्द० ३
[illegible]
[illegible] आनन्द० ४
[illegible]
[illegible] आनन्द० ५

पद ४६२. ([illegible])

कालिंदीके [illegible] ([illegible])

[illegible]
[illegible] कालिंदी० १
[illegible]
[illegible] कृष्ण अवतार, कालिंदी० २
[illegible]
[illegible] कालिंदी० ३
[illegible]
[illegible] कालिंदी० ४
[illegible]
[illegible] कालिंदी० ५
[illegible]
[illegible] कालिंदी० ६
[illegible]
[illegible] कालिंदी० ७

सच्चिदानंद ब्रह्ममय वृत्ति, सदन बिन आधार;
कहे गुरुके शरन गयेसें, उतरत है भवपार. कहींभी०

पद ४११. (काफी-होरी.)

ऐसा नाथ मिलाई रे, अहंकार न पावे. (टेक.)
हाजर नाजर शाहद सबका, प्रेरक गति अति न्यारी रे;
पुनि नजर न आवे ऐसा नाथ० १
बाहर भीतर [illegible] कोउकी करन न सारी रे;
पुन [illegible] ऐसा नाथ० २
देशकाळ नहि या बिन कोई, [illegible] सबको सारी रे;
अपुनी न चलावे—ऐसा नाथ० ३
नाना अद्भुत रंग बनावत [illegible] अविकारी रे;
[illegible] ऐसा नाथ० ४
सच्चिदानन्द [illegible] अपना सारी रे;
[illegible] नाथ० ५

[illegible]

देखो [illegible] बुद्धि अंधेरा [illegible] कहींसे घेरो. (टेक.)
[illegible] निरंतर [illegible] फेरी फेरी.
[illegible] न देखत हेरी. रहे०
[illegible]
[illegible] रहे०
[illegible]
[illegible] रहे०
[illegible]
सुगत न ध्यान [illegible] न फेरि. रहे०
[illegible] नहि [illegible]
सच्चिदानन्द ब्रह्म [illegible] रहे०

[illegible]

ब्रह्म रहे बिन ज्ञान गमावो. गमावो०
[illegible] न पावो. ब्रह्म रहे० (टेक.)
उत्तम [illegible] गुरुदर्शी [illegible] भूर [illegible];
ऐसो [illegible] ब्रह्म रहे० [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
[illegible]
[illegible] ४

पद १०६. ([illegible])

हरिके [illegible] (टेक.)
[illegible]
[illegible] हरिके० १
[illegible]
[illegible] हरिके० २
[illegible]
[illegible] हरिके० ३
[illegible]
[illegible] हरिके० ४
[illegible]
[illegible] हरिके० ५

पद १०७ ([illegible])

धेर धेर कृपा [illegible] (टेक.)
[illegible] प्रभाव रे,
[illegible] रे धेर धेर० १
[illegible] रे
[illegible] रे धेर धेर० २
[illegible] प्रभाव रे,
[illegible], तेरो या स्वभाव रे धेर धेर० ३
[illegible] आवे ना, [illegible] पाय रे,
[illegible] उछाव रे धेर धेर० ४

अब जगव्यापक सबसें न्यारा, खोज देखे दिल काबीमें;
स्वस्वरूप इन मित किन ढुंढत, क्यों पाये बुतसाजीमें. तुं० ३
पंच कोसतें पार पूछके, लिन्ह ज्ञान गंगाजीमें;
समझु सच्चिदानंद ब्रह्ममें, मत रहे माया पाजीमें. तुं० ४

पद ४७१. (राग एज.)

देहभावमें कछु न बडाई, ज्यों चिद आनन्द सोई बडा; (टेक.)
हाड चामका देह सकलकी, क्या ब्राह्मण क्या बैल बडा. देह० १
रैन दिनांभर धोवत पोंछन, ज्यों पानीमें भरत घडा;
स्वस्वरूपकी बात न जानत, स्वान भुसाखा येद पडा. देह० २
विरत कामवश करत शुभाशुभ, ईश्वरनेचे जाय अडा;
आग आग नेहनें फारे जानहु, हंस न होवत पहाड बडा. देह० ३
काम क्रोधवश इत उत धावत, तबलों जीवन मरन पडा;
सच्चिद् आनंद मस्त रहे चित, छाम चामका सब झगडा. देह० ४

पद ४७२. (राग एज.)

माया मगन लेखा काहे गुमावन, चंद जिंदगी दुनियामें; (टेक.)
जल थलचर जैसे पशु पंखी, गुरु उपदेश नांहि तामें. माया० १
चार लाखकी गंदी सूरत, हीरा मनुज जनममामें;
भटकत भटकत पाया केसें, गाफल फिरत गमायामें. माया० २
जीवन खान पान मस्तीमें, खोवत माल कमायामें;
बुरा बुढापा रोग शोकमें, गुजरी की पस्तायामें. माया० ३
समझु चेत खोजहु दिल अपनी, मत भूलहु निज सायामें;
सच्चिद् आनंद ब्रह्म रूप तुं हि, और सकल जड मायामें. माया० ४

पद ४७३. (विहाग.)

अलख निरंजन सांई हमारा. (टेक.)
ज्यों नभदेश सकलमें व्यापक, सबका साक्षी सबमसे न्यारा.
अलख निरंजन सांई० १
त्रिगुण रूप धरी सृष्टि निपावन, पालन हरन करतार विचारा,
स्थापन धर्म साधु रक्षनकुं, मायर मनुज धरत अवतारा.
अलख निरंजन सांई० २
श्रुति उपाधि अनेक भेदसें, रूप दिखावत अगणित न्यारा,
आपे एक दोय कछु नांहि, अमित ज्ञानिक रहे कोई पारा.
अलख निरंजन सांई० ३

ब्रह्मादिक सब सकल चराचर, ऐसा गेबी हुकम पसारा;
द्वैत भावमें लहि न शकत कोई, गीजत चौदलोक ओ सारा.
अलख निरंजन सांई० ४
पंच कोशापर ईहक महल निज, रहत निरंतर बिन आधारा;
सचित् आनंद ब्रह्म लहत सोई, जिनकुं लागत प्रेम कटारा.
अलख निरंजन सांई० ५

पद ४७४. (सोरठ.)

दुशमन पूर्शांको करदी काम. (टेक.)
पांचों ईंद्रि अकल दिल सबमें, है नित्य उनको मुकाम. दुशमन० १
कुंडिल होत सोई जब देखत, क्रोध उनहींको नाम. दुशमन० २
गरमागरम करत अर ऐसें, धूम मनलको धाम. दुशमन० ३
ज्यों आदरशायरन होन मल, तैसोंही उनको काम. दुशमन० ४
ज्ञानचरन रूप होय रानन, निज वश जीव तमाम. दुशमन० ५
मूढ मति लहीं प्रेरित उनके, दोडत थित आराम. दुशमन० ६
अहित महल सोंहि निज स्वरूप लहि, मेटत उनको नाम. दु० ७
तनसें पर ज्ञानेंद्रिय तातें, है परमनको मुकाम. दुशमन० ८
मन पर बुद्धि बुद्धि पर जानहुं, निज स्वरूप सुखधाम. दुशमन० ९
ऐसें आपहि आप बूझके, हनहु काम पर गाम. दुशमन० १०
ज्ञान सच्चिदानंद ब्रह्मको, प्रेरत कृष्ण गुदाम. दुशमन० ११

पद ४७५. (सुनागधी.)

ईशहि भजत सोई सब फल पावे. ईश० (टेक.)
यापि कूप बने बोहोतेरे, घनबिन पूरण न सुख उपजावे. ईशही० १
दीपप्रकाश काहांतक पोहोंचत,
रवि प्रगटत सब तमही मिटावे. ईशहि० २
त्यों व्यापक प्रभु सबही बनाके,
कृत सम फल शुभाशुभहि दिखावे. ईशहि० ३
उनके वश है सब एक देशी,
परवश जगतकुं क्यां कर निभावे. ईशहि० ४
सच्चिदानंद ब्रह्म निज जनकुं,
ज्यो चाहत सोई तुरत मिलावे. ईशहि० ५

पद ४७६. (राग पूज.)

चिद्घन पति कैसे परघेर आवे. (टेक.)

देखत प्यारो रूप रस जैसे फिरी कसू,
झालरके मारन नींदु कर्हां न लागी. बिरहमन० १
आसके बतन नव औलिक बताउन,
डोरिदू मदन मनारिक पोराधावे. बिरहमन० २
नाहि दादुरादि वसन हिस्यू अति भयानक,
मनादि प्रकाशक गौ अतन बताते. बिरहमन० ३
कर्हांई खलान नहि नेनन भरत,
मालक अटक चाहै हौरोंहि पठावे. बिरहमन० ४
सच्चिदानंद प्रभु सोहि पावन,
भक्तगुन हारन ज्यों भगती भगावे. बिरहमन० ५

पद ५७७. (जोनपुरी.)

हरिके समाज सोहि हरिजन साजहीके. (टेक.)
जाके जिन शाम बाँध, मगन भये पुष्प आदिम,
मनुजकी भक्ति योग, पाँनि मन सामहीपी. हरिके० १
छोटिके समाण जिन, निद्रु लोच त्याग वाने,
सब मल दर खिरे, छोडे मद बाजडीके. हरिके० २
दयानिधि दिया पुनि, गहुपा मिलन लागे,
हाम दम मेरा पातै, ध्यान लीन लालहीके हरिके० ३
चिन्मय पृथि ढाने, एकहि अनंद आगे,
एकहि सुनावे बाते, सकल समाजहीके हरिके० ४
सच्चिदानंद प्रभुरूप, सोहि गुरु है अनूप,
ध्यान होते भेद भूप, मेरा जीमी गाजहीके हरिके० ५

पद ५५८. (कान्हडो.)

मलय पुरंदर मेरा मन भटकावे (टेक.)
जगताहि जाकुं भववन मदन पुनि,
वासनिका बहु जुगो जुगसे भटकावे मलय० १
ज्यों है अपरोक्ष नहि देखत आंखयन,
मति मति कहुं जाकुं, वेद पुनि हटकावे मलय० २
सूक्ष्म अरूपी सोई, आसन है विश्वरूप
जैसे घट घट में मने, चित्त तन मन भटकावे मलय० ३
कोई जटाधारी धमत्यागी कोई और कहे,
मैं तो भ्रम पद कहीं, भेद याद पटकावे. मलय० ४

पवन जिवावत प्रान होय, अग्नि पचावत अन;
पान करावत जल, अवनी देत विविध भोजन. एक० ३
उपार्जी अविद्या शक्तिमें, देव मनुज पशु जाति;
आवागमन करत सबे, विलसत हे बहु भांति. एक० ४
देखत बोलत सुनत सब, समुझी करत बहु काम;
पावत सब शुभ अशुभ फल, भटकत हे बहु धाम.एक० ५
आप सदा निर्लेप हे, सबको साक्षीरूप;
सचराचर व्यापक अजर, अमर अनंत अनूप. एक० ६
सो स्वरूप सो समुझहीं, भेदरहित अविनाश;
मनोहर खेलत मग्न होय, छूटत मायापास. एक० ७

पद ४८१.

जमका अजब तमाशावे, तनकी केदी आशावे. (टेक.)
सूर्य चंद्र दिन रेन फिरावे, पल पल काटत जावे;
जीवन चंद्र रोजमें सूटन, पलभर कोइ न बचावे. जमका० १
हरिपावनको देह गमावत, पशुतनमें दुख भारी;
चेत चेत जनी मूलहु प्यारे, बोलत वेद पुकारी. जमका० २
वेगी शरन ग्रही सद्गुरुकी, चिद्घन पति उर धारी;
भजन निरंतर शुद्ध करहु मन, कामादिककुं मारी. जमका० ३
ध्यान मगन उर लग्न लगाई, रहहु प्रेमरस पागी;
सोनो फिरनां डरनां केस, साथ रहो नित जागी. जमका० ४
भजत सच्चिदानंद ग्रहहीं, ममरस बहु सुहागी;
जन्म मरन भय मरहि निरंतर, सब कहेंगे बडभागी. जमका० ५

सूरदास.

—:o:—

पद ४८२. (बिझोटी.)

काया हरिके काम न आई. (टेक.)
भाव भक्ति जहं हरिजस सुनियत, तहां जात अलसाई;
लोभ मोहवस काम मनोरथ, तहां सुनत उठि धाई. काया० १
जबलगि श्याम अंग नहि परसत, अंधे ज्यों भुरमाई;
सूरदास भगवंत भजन बिन, विषय परम विष खाई. काया० २

पद ४८७.

जन्म सिरानो अटके अटके. (टेक.)
सुत संपति गृह राज मानको, फिर अनातहि भटके, जन्म० १
कठिन दयानिको स्यों मोहकी, तोरी तो न जाय चटके; जन्म० २
ना हरि भजन न तृप्ति विषय करि, रहो धीचेहि लटके; जन्म० ३
सब जंजाल सु इंद्रजाल सम, ज्यों बाजीगर नटके; जन्म० ४
सूरदास शोभा न शोभित, पिय बहुत धन भटके। जन्म० ५

पद ४८८. (बिहाग.)

सब दिन गये विषयके हेत; सब० (टेक.)
गंगाजल छांड कूपजल पीवत, हरि तज पूजत प्रेत. सब० १
आँखि धूलि अपनो तन खोयो, केश भये सब श्वेत;
श्रवन न सुनत नैन न देखत, थके चरणके चेत. सब० २
रूंधे द्वार मन कृष्ण न आवत, चंद्र ग्रहे जस केत;
सूरदास कछु दाम न लागत, श्रीकृष्ण नामको लेत. सब० ३

पद ४८९.

करुणानिधि तेरी गति लखि न परे. (टेक.)
धर्म अधर्म निषेध अविद्या, कर्म अकर्म कियो:
जय अरु विजय अधर्म करे यह, ब्रह्म सराप दियो. करुणानिधि० १
असुर योनि दीन्हि ता ऊपर, धर्म अछेद भयो;
पिता वचन खंडे सो पापी, सो प्रह्लाद कियो. करुणानिधि० २
निकसे खंभ बीच ते नरहरि, तब प्रह्लाद उबार्यो;
हरणाकुशको त्रास दियो प्रभु, नखसें उदर विदार्यो. करुणानि० ३
दानधर्म बहु कीन भानुसुत, सो तुम विमुख कहायो;
वेद विरुद्ध सकल पांडवसुत, सो तुम्हरे मन भायो. करुणानि० ४
मुकुल पतित अजामिल विषयी, गनिका हाथ बिकायो:
सुतहित नाम लियो नारायण, सो बैकुंठ पठायो. करुणानिधि० ५
पतिव्रता जालंधर युवती, सो पतिव्रतने टारी;
दुष्ट पुंश्चली अधम सो वेश्या, सुवा पढावत तारी. करुणानि० ६
मुक्तहेतु जोगी श्रम करहि, असुर विरोधी पावे;
अविगति गति करुणा मैं तेरी, सूर कहा कहि गावे. करुणानि० ७

पद ४९३.

प्रल्हाद उगार्यो, धाये जाई प्रल्हाद बचायो,
आपनो आप्तीने धारि सांई० (टेक.)
थरहर लई कर हाथो हरिनाळ,
खलमर्द सम्हले मारो दानवसंहारी. धारी० १
थंभ फोडीने रूप धर्यु नरसिंह,
मार तो पछाडि हरणाकंसने मार्यो. धारी० २
सूरश्याम प्रभु तिहारे मिलनकुं,
लोचन खोली थामे दर्शन पायो. धारी० ३

पद ४९४. (होरी.)

जीआ तोकुं समझ न आई, सुरण ते उमर गमाई. (टेक.)
मातपिता सुत कुटुंब कबिलो, धन जोबन ठकुराई;
कोय नहि तेरो तुं न किसीको, संग रहो लटकाई,
उमरमें तें धूळ उडाई,—जीआ तोकुं० १
काग देहा तुं फिरसें करत है, पक ध्यान रहो छाई;
जैसे स्वान रहे काच भुवनमें, भुंक भुंक मर जाई,
खबर अपनी नहि पाई,—जीआ तोकुं० २
लोभ लालच पांच तुं लटकत, भटक रहो भरमाई;
तृषा न जायगो मृगजल पीवत, अपनो भरम गमाई,
श्यामकों जालले भाई,—जीआ तोकुं० ३
अगम अगोचर अकल अरूपी, घटघट रहत समाई;
सूरश्याम प्रभु तिहारे भजनाबिनु, कबहु न रूप दिखाई,
श्यामकुं खोळलो सदाई,—जीआ तोकुं० ४

पद ४९५. (भैरवी.)

हरि दरशनकी प्यासी, मेरी अंखियां हरि० (टेक.)
रे कारण कुंवर कनैया, करवत लउंगी काशी; मेरी० १
सरको तिलक मोतनकी माला, वृंदावनके वासी; मेरी० २
लीबडालपर कोयल बोले, बोलत बचन उदासी; मेरी० ३
सूरश्याम प्रभु तिहारे मिलनकों, आशा सदा अविनासी. मेरी० ४

गगन गूंजो विगत लायो, भेद लायो उस भ्रमरका ;
हर नार मिल विस्तार कीनो, शीश लिया सब घरमका. समर० २
चार वेद तो रच्या ब्रह्मा, भेद जाणी झुगवरा ;
सबन ऊपर अरध अक्षर, निरंजन नाम है तरवरा. समर थाळा० ३
जहाँ धरणी पवन पाणी, तेज नाहिं उहां भागका ;
सबऊपर शिखर आरंग, चार मारग मुलका. समर थाळा० ४
ओंकारसें निराकार प्रगटे, जो रंग पावे पवनरा ;
पवनसें एक भई रचना, त्रिपुटी बांधा जंमरा. समर थाळा० ५
ब्रह्मसें पंच भई रचना, पवन बांधा गेबरा ;
दास सेवा समर देवा, ध्यान धर एक प्रेमरा. समर थाळा० ६

संतदास.

—:०:—

पद ४९८.

अब मोहे आनंद अद्भुत आया, किया कराया कछुयी नांहि. (टेक.)
देश न छोड्या वेश न छोड्या, नहि छोड्या संसारा ;
सूता नर निद्रासें जाग्या, मिट गया स्वप्ना सारा. अब० १
तृष्णा विषा अंतरसें छूटी, गोला ज्ञान चलाया ;
अंतर आत्म समदर्शी स्वामी, दूर अज्ञान उडाया. अब० २
संता कहे कोई बुराई करे, आप मति अनुसारा ;
गाढा मीठा पारस परसे, सोन भया सोनारा. अब० ३

पद ४९९. (मंगल)

आज महा मंगल त्रिभुवनमें, थंभ फोरि हरि प्रगट भये. (टेक.)
देवन मुदित निशान बजाये, सुख उपजे दुख दूर भये ;
असुर मारि प्रह्लाद उबारे, संतनकुं आनंद भये. आज० १
श्रवन सुन्यो नयन नहि देख्यो, अद्भुतरूप अनूप भये ;
नरहरि रूप धर्यो अविनाशी, भक्तहेतु अवतार लिये. आज० २
ब्रह्मादिक जाके निकट न आवे, लक्ष्मीजी पण चकित भये ;
संतदास नरसिंह रूपकुं, वार वार बलिहार गये. आज० ३

पद ५००. (प्रभात.)

दीनको दयाल सांइ, कदन शरण जाई ; (टेक.)
एक नाम निराकार, सोइ ध्यान पाई. दीनको० १



पद ५०३. (राग एव.)

साधो साधन तनको कीजे,

मन पवनां पंची पदा राखी, शून्य सुधारस पीजे.(टेक.)

चंद सूर दोउ उलटी अपूठा, सुखमनके घर लीजे;
नादबिंदु अब गांठ पैर लय, कायाने कुल छीजे. साधो० १
राजस तामस दोउ छांडे, सात्विक धरतै लीजे;
चोथा पदमां आइ समावे, कायाने कुल छीजे. साधो० २

पद ५०४. (केदारो.)

कोइ पीवे रामरस प्यासा रे,

गगनमंडलमें अमृत सरवे,उनमुनीके घरवासा रे.(टेक.)

दोदा उतारि धरे धरती पर, करे न तनकी आशा रे;
ऐसा महींगा अमी विकावे, खटऋतु बारह मासा रे.कोइ० १
मोल करे सो छके दूरतें, तोलत छूटे वासा रे;
जो पीवे सो जुग जुग जीवे,कबहु न होइ विनाशा रे.कोइ० २
चहु रसकाज भये नृप योगी, छांडे भोग विलासा रे;
सेज सिंहासन बेठे रहते, भसम लगाई उदासा रे. कोइ० ३
गोरखनाथ भरथरी रसियो, सोइ कबीर अभ्यासा रे;
गुरु दादु परसाद कछु इनके, पायो सुंदरदासा रे. कोइ० ४

श्रवण.

—:o:—

पद ५०५.

सोई मेरो हस लीला करे, निर्मल मोतीनो आहार ; (टेक.)

कला सत रमी जहां सुंगे, पीवे अमरत सार. सोई० १
मूल अगोचर गोती हे, मुनीजन धसमी घाट;
सट चक्र भेदी जे चढे, चढसुं उलटे घाट. सोई० २
पंख विना पंखी जहां भमे, मुख विना टउके मोर,
गगनमंडलमें रचना रची, जळहळ प्रगटी ज्योत.सोई० ३



गुणना दोषो गुणमां समया, रमता दीठा रे राम;
जोतां बीजुं दीठो नहि, पाम्यो निजपद धाम. कहे० ६
सुखना साहेळा निरख्या हवे, दुखनो नहिं रे लवलेश;
लख चोराशीनी लूंटमां, पाम्यो पोतानो देश. कहे० ७
स्तुति ने निंदा सहेजे समयां, ओळख्युं पोतानुं आप;
पद मीळया विण आपणुं, भोगववुं पुन्य पाप. कहे० ८
भूल्यो हतो बहु भेदमां, जोतां वेद विचार;
अक्षर शोधी में ओळखी, जोयुं सारनुं सार. कहे० ९
घोखे धरतो तो धारणा, ध्यातो तो बहु भूप;
ते तो मकरज में ओळख्युं, रमता रामनुं रूप. कहे० १०
संशय भाग्यो संसारनो, लाग्यो निश्चल रंग;
आदि अंत ने मध्यमां, नहि कांई वस्तुमां भंग. कहे० ११
देह धरीने जाण्या विना, भरमे भूल्यो तो सूरि;
हस्तामलकवत् हाथमां, जोवा जातो तो दूरि. कहे० १२
बांध्यो त्रिगुणने तांतणे, भमतो चारे रे खाण;
ते तो वारी रे वही गयो, उग्यो आतम भाण. कहे० १३
पुस्तक वांच्या में करमना, मुढ न जाणे रे मर्म;
हृदमां पेसीने दरवड्यो, वेदद मांग्यो रे मर्म. कहे० १४
आसन वाळ्युं नहि शून्यमां, न कर्युं मौन अमूल्य;
न धर्यां ध्यान ने धारणा, धारी अनहद धून. कहे० १५
त्रिपुटीमां जे बेठो नहि, न कर्यो प्राणनो रोध;
होंडुं सहज समाधिमां, पामी वस्तुनो बोध. कहे० १६
दास-दत कहेजी दासने कई, त्यागी जोगनी टाम;
ज्यांना त्यां जई विरामीया, धारी निज पदधाम. कहे० १७
जे पद दुर्लभ छे देवने, भटके भूल्या सौ वार,
ते पद पल पण छोडुं नहि, जोयुं करीने विचार. कहे० १८
वेदे वाईने वस्तुमां, करतो विधि ने निषेध,
वेद भेद मांग्यो नहि, कांधो संशय उच्छेद कहे० १९
जाण्या विना रे ऊंधरी, कल्प्यो तो पे मैं ताप.
ज्यारे जोयुं ज्ञानने करी, त्यारे भांग्यो संताप कहे० २०
वादवदमने घोळी वळ्यो, छतपद करतां रे खेद.
वादविवादे वही मुवा, न टळ्यो मननो संदेह कहे० २१

नागर नरसैंदे ज्यारे रामने हो होजी,
        ढेड थेसाड्या हारोहार. पोकार करुं० ३
पच्छम देशने सयरा मंडप हो होजी,
        गाम वसे छे जूनागढ;
गुपतताये भाठी हरजी बोल्या हो होजी,
        संतनी महेलीं करजो व्हार. पोकार करुं० ४

हरसुजी.

—:०:—

पद ५०९.

धीरा तारी जलडीये आळ पयां कर भाई;
पयो मांहेलाये मेळ पयो करीं डार. (टेक.)
पांच पळभिया रानो कपे भणीप, पनरां फरो घदा भाई;
सुषमण थीजे खेतर थायो, काढोने भोम सवाई. धीरा० १
करीयांना करतल, करणीना हीणा धरे जुता ये धोळा;
पले मारो साहियो पणी विधे मारे, जेम कांसुं घडे
                                        कणभारा. धीरा० २
साधारण रीते सगपण राग्यो, न गणो पिता-पिताई;
आपणा धणीनो पंथ मर्णाआळो, तेमां शुं करदो
                                        मित्र ने भाई. धीरा० ३
सा घर नाव केघटीओ काचो, ता घर पाव न दीजे;
उन कपटोमें पडली थाने, केणी परे पार लगाई. धीरा० ४
निजा पंथमां निर्मळ चालो, तारी पणी विधे होदो भलाई;
दोय करजोडी हरसुजी बोल्या, वैकुंठ थारो वधाई. धीरा० ५

हरदास.

—:०:—

पद ५१०.

क्या खुदाकुं ढूंढता है, खुदा तो तेरे पास है; (टेक.)
पास नहि पाता नहि, ज्युं फुलनमें वास है. बंदा क्या० १
फिरे भूला एक मृगला, कस्तुरी वाकी पास है;
पास नहि पाता नहि, फिर फीर सुंघे घास रे. बंदा क्या० २

दूध मा दो मिलट गया गे, उनकी ही मारा रे;
मही मना मागन गया भे, मई दनकी छाता रे. पंदा क्या०३
गुरुमें हुए एक पोल्ला, है उनकी पैदाश रे;
कोई दरदास इदमा भीतर, तुं रंग तदारा रे. पंदा क्या०४
पद ५११.
पंदा गंदा शिरमिदा तुं, देन मारी क्युं रोता रे;
आग गफलत दूर कर तुं, गुफत बगत क्युं खोता रे. पंदा०१
जेने आपका नेन न पेख्या, उसमें मोल न होता रे;
मारे अंतर्के देख मिलतुं, घरो घर क्युं रोता रे. पंदा० २
आपे सैयद आपे हो तुं, आपे आप खिलाता रे;
ओाहरिमें वना वनाया, तुं दोलका दाग न धोता रे. पंदा०३
अंध कहाये पायगा तुं, पांउ पायलके धोता है;
इस नगरीमें एक फेर आया, फिर आना नहि होता है. पंदा०४

हजूरदास.

—ः०ः—

पद ५१२. (धाराना पदनी गह.)

माया तो मस्तानी रे, मोहचा जन मोटा मोटा;
लुटायो एक पलमां रे वेरागी जोगीओना जोटा. (टेक.)
जटाधारी न थया रे जोगी, राख चोळीने फरे रान;
मगवां वस्त्र ने वाळे लंगोटा पछी आरोगे सुरापान,
गांजो भांग पीने रे, काढे धुमियोना गोटा. माया० १
नाही धोईने वायो शरिरने निरखे, फरे मगन मस्तान;
आरति वेळाए ज्यारे माणस आवे, तेना पहेलां थाय गुल्तान,
तान तो लावीने रे, प्रोते वगाडे घणा टायोटा. माया० २
तिलक बनावां मांहि मरियां रे ताणे, आडबंध बांधे वेश;
दांतो विकासीने जुए दर्पणमां, ए केवा वेरागिना वेश,
घरोघर भटके रे, लाजहीणा लंगोटा. माया० ३
खावो तो एक ने वे त्रण वेरां, वे चार पांचक थाळ;
धामा रे खाय खावो धुणी धिकावे, पछी फुटी मागे रे कपाळ,
पराया माल खाईने रे, सधारे डवरांना पोटा. माया० ४

थाटो पेचोले पाघो प्याजे रे आवे, घनावे भेडीने मठ;
शान पुकीने गाळो रे भांडे, रंडी कांटीने उडायत कठ,
दुग्धाना पेटाणा रे, दुनियामां फाटे डोटा. माया० ५
जडसट तीरथ करीने रे आव्या, तोय न गयो मननो मेल;
मंदिर बांधीने मायाने चाल्यो, पेरं छोकरां छोयें ने वळि घेल,
खेतीवाडी करतां रे, दुकाळ पना थया खोटा. माया० ६
जोग लीधो पण जुक्ति न जाणी, कर्यां अधर्मनां काम;
समजण विना अंते थयो साधू, एने हाथी मळे सीता राम,
हजूरदास कहे छे रे, त्यागी नरना पड्या तोटा. माया० ७

हक्कानी-देवीसिंह[1].

—:०:—

पद ५११. (लावणी.)

सुखमनमेँ तो तब होवे जब, प्राणायाम परायन हो;
ऊर्ध्वमूलको उलटे अलख होय, नरसे फिर नारायण हो. (टेक.)
षट चक्रके ऊपर उत्तम, सत्तम चक्र सुदर्शन है,
निराकार अव्यय अविनाशी, ज्योति रूपका दर्शन है;
द्वैत नहि उसमेँ किञ्चित्, अद्वैत पद दर्शन परसन है,
और काम है सहज कठिन यक, योहितो आकरसन है.
अनहद बाजे बजे वहांपर, दीपक रागका गायन हो, ऊर्ध्व० १
नाभिकमलमेँ ब्रह्मा और हिरदेमेँ विष्णु भोग करै,
मस्तकमेँ शिव तपे तपस्या और पूरन योग करै;
जो प्राणी तीनों गुनसेही रहित और सदा वियोग करै,
परम हंसके दर्शन तो ईस, उसमेँ थोडी लोग करै.
चाहे स्त्री पुरुष होय, या योगी यती गोसायन हो, ऊर्ध्व० २
जहां अग्नि नहि पवन न पानी, और नहि नदि नाला है,
चले न चंदा सूर्य वहां पर, आपो आप उजाला है;
सत्त चित्त आनंदरूप वह गोरा नहि न काला है,
हर रंगमेँ हर झलक रहा, पर सबसे रहे निराला है.
जब प्राणी यह जन्म लेय तो, पेटा उलटे पांयन हो. ऊर्ध्व० ३

१ आ कावना प्रयोजक " हक्कानी कृत " एम लखवुं छे अने कविनामा नाम देवीसिंह छे

दीदामें सीता सती विराजे, सावित्री शोकदा रानी,
मस्तकमें रहे आप श्री महा विद्या और महा रानी;
भृकुटीमें करे वास भैरवी, भय माने सब अभिमानी,
ब्रह्ममें अपने विराजे, विन्ध्याचल और ब्रह्मानी;
बसे नासिकामें नव दुर्गे, नगरकोट लाटों वाली, नयना० १
मुखमें बसे मंगळादेवी, सब कारज कर दे मंगल,
होंठमें हेमावती रहे, क्षणमें काट देवे कलमल;
जिव्हामें जान्हवी और यमुना, सरस्वती सबसे निर्मल,
गलेमें बसे गवरी और गायत्रीका जप नाम अटल;
कंठमें बसे कालिकादेवी, कंकाली और महाकाली, नयना० २
करपमें कमला और कात्यानी, छपारूप अद्भुत माया,
दोनों भुजामें भवानी बसे, बड़ा सुख दिखलाया;
उसमें बसे उमा उत्तरायणी, उग्र तेज उनका छाया,
कहां लग वर्णु लखी नहिं जाती है अपनी काया;
बुद्धिमें बसे विधाता माता, बड़ी बुद्धि देनेवाली, नयना० ३
रोम रोममें रमी रमा और, नाभिकमलमें निर्वानी,
कहे देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी;
स्वास स्वासमें शक्ति बोले ध्यान धरे पूरे ध्यानी,
बनारसी सुमे भगवतीकी भक्ति मनमानी;
मेवा और मिष्ठान हार फूलोंकी नित्य चढती डाली, नयना० ४

पद ५१६. (राह एज.)

यह काया कलका कलकत्ता, इसीमें है कृष्णाकाली;
तीनों गुणके तीन है नैत्र बड़ी शोभावाली. (टेक.)
मन मंदिरमें आप विराजे, मुंडी खड्ग खप्पर धारे,
ससासिंह पर आन कर बैठी पद्मासन मारे;
मंत्र मधुर मधुपान करे त्रिलोकमें हो रहे जयकारे.
झपट झपटके काम और क्रोध दैत्य सब संहारे,
समताका शृंगार सजे तनुपर, मनमें रहे खुशियाली, तीनों० १
चमत्कारकी चार भुजा और रचना छंदोंकी माला,
तेज और तपका बड़ा त्रिशूल जगतसे निरियाला;
चितका चक्र यह घूमे चारो तरफ मेरी जय जय ज्वाला,
दुर्बुद्धिको मारकर टुकड़े टुकड़े कर डाला;
दृढताका डमरू बाजे और सत ताल बजती ताली, तीनों० २

खुले आंख जब भीतरकी तब, दिव्य दृष्टि हो जाय उसे,
महाकाल यह आप बने और, काल नहि फिर खाय उसे;
देवीसिंह यह कहे देखतो, ब्रह्मको ध्यान लगाय उसे,
बनारसी तू योंही तो है सद्गुरुने दिया लखाय उसे.
लख चौराशी छुट जावें भूत प्रेत नहि डायन हो, उर्ध्व० ४

पद ५१४. (राग एज्र.)

नहि मिले हर धन त्यागे नहि, मिले रामजी जान तजे;
नारायण तो मिलें उसीको, जो देह अभिमान तजे. (टेक.)
सुत दारा या कुटुंब त्यागे, या अपना घरबार तजे,
नहि मिले प्रभु कदापि, जगका सब व्यवहार तजे;
कंदमूल फल खाय रहे, और अन्नकाभी आहार तजे,
वस्त्रको त्यागे नग्न हो रहे और पराई नार तजे;
तौभी हर नहि मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे, नारा०१
तजे पलंग फूलोंका और हीरे मोती लाल तजे,
जातको अपनी तजे और कुलकी सारी चाल तजे;
बनमें निशिदिन विचरे और, इस दुनियाका जंजाल तजे,
देहको अपनी जलावे, शरीरकी भी खाल तजे;
ब्रह्मज्ञान नहि हो तोभी, चाहे वो अपनी सान तजे, नारा० २
रहे मौन बोले नहि मुखसे, अपनी सारी बात तजे,
बालपनेसे योग ले अपने तात तजे या मात तजे;
शिखा सूत्र त्याग ज कर दे और उत्तम अपनी जात तजे,
कभी जीवको न मारे पान तजे अपवान तजे.
इतना तजे तो क्या होवे जो देहका नहि गुमान तजे, नारा० ३
रहे रात दिन खडा न सोवे, पृथ्वीकी भी शैन तजे,
कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजे;
मीठा हो कर बोले सबसे, कटुये अपने बयन तजे,
इतना त्यागे औ देह अभिमान नहि दिन रयन तजे;
बनारसी उसे मिलें नहि हर चाहे सकल जहान तजे, नारा० ४

पद ५१५. (राग एज्र.)

हिरदेमें है हिंगलाज, करे काज लाज रखनेवाली,
नयना देवी नयनमें बसें हंसे दे दे ताली. (टेक.)

हाथोंमें वीणा मानी विराजे, महादेवी भगवती मानी.
मस्तकमें रहे आप औ मह विद्या और महा ज्ञानी;
भृकुटीमें करे वास भैरवी, भय भागे सब अभिमानी,
नासमें श्वासे विराजे, त्रिपुरसुन्दरी और ब्रह्माणी;
कर्ण मांदिरमें मत झूमे, मातङ्गी छोटी वाली, जयमा० १
मुखमें वसे मंगलादेवी, सब कारज कर दे मंगल,
होठोंसे हेमावती रहे, दन्तमें दन्त देवे बलमल,
जिव्हामें जाह्नवी और यमुना, सरस्वती वचने निर्मल,
गलेमें धरे गायत्री और गायत्रीका जप नाम अटल;
कंठमें बसे कालिकादेवी, कंकाली और महाकाली, जयमा० २
स्कन्धमें कमला और कात्यायनी, कृष्णरूप अष्टभुजा माया,
दोनों भुजामें भवानी बसे, सदा सुख दिखलाया;
उदरमें बसे उमा अन्नपूर्णा, सब जग जिनका छाया,
कहां लग वर्णु गमी नहिं आती है अपनी काया;
बुद्धिमें बसे विधाता माता, सदा बुद्धि देनेवाली, जयमा० ३
रोम रोममें रमी रमा और, नाभिकमलमें निर्वानी,
कहे देवीसिंह इन कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी,
स्वास स्वासमें शक्ति बोले ध्यान धरे पूरे ध्यानी,
बनारसी सुमे भगवतीकी भक्ति मनमानी.
मेवा और मिष्टान्न हार फूलोंकी नित्य चढती डाली, जयमा० ४

पद २११. (राग धुन.)

यह काया कलकत्ता कलकत्ता, इसीमें है कृष्णाकाली;
तीनों गुणके तीन हैं नेत्र बड़ी तेजवाली. (टेक.)
मन मंदिरमें आप विराजे, त्रिशूल खड्ग खप्पर धारे,
सत्तसिंह पर आन कर बैठी पद्मासन मारे;
मंत्र मधुर मधुपान करे त्रिलोकमें हो रहे जयकारे.
झपट झपटके काम और क्रोध दैत्य सब संहारे.
समताका शृंगार सजे तनुपर, मनमें रहे खुशियाली, तीनों० १
चमत्कारकी चार भुजा और रसना रुंडोंकी माला,
तेज और तपका खड्ग त्रिशूल जगतसे निरियाला,
विवेकका चक्र यह घूमे चारों तरफ भरी जय जय ज्वाला,
दुर्बुद्धिको मारकर टुकड़े टुकड़े कर डाला;
दृढताका डमरु बाजे और सब ताल बजती ताली, तीनों० २

छुटे पाँच अरु भीतरकी तन, त्रिकुटि चढि हो जाय उसे,
महाकाल वह आप बने फिर, काल नहि फिर खाय उसे।
देवीसिंह यह कहे देशको, ब्रह्मको ध्यान लगाय उसे,
बनारसी तू बीती नां है साधुसंगने दिया लखाय उसे,
लख चौरासी दूर जावें भूल फेर नहि आवन हो, उसे० ४

पद ५१४. (राग लम)

नहि मिले हर धन त्यागे नहि, मिले रामसी आस तजे;
नारायण तो मिलि उसीको, जो देह अभिमान तजे. (टेक.)
सुत दारा घर कुटुंब त्यागे, या अपना घरबार तजे,
नहि मिले प्रभु कदापि, जगका सब व्यवहार तजे;
कंदमूल फल खाय रहे, और अन्नकाभी आहार तजे,
धनका त्यागी नग्न हो रहे और कपडे भार तजे;
तोभी हर नहि मिले यह त्यागे, चाहे अपने प्राण तजे, नारा० १
तजे पलंग फूलोंका और हीरे मोती लाल तजे,
जनको अपनी तजे और कुलकी सारी चाल तजे;
बनमें निशिदिन विचरे और, इन दुनियाका जंजाल तजे,
देहको अपनी जलावे, शरीरकी भी खाल तजे;
अभिमान नहि हो मोती, चाहे वो अपनी मान तजे, नारा० २
रहे मौन बोले नहि मुखसे, अपनी सारी बात तजे,
बालपनेसे योग ले अपने तात तजे या मात तजे,
जिव्हा स्वाद त्याग जो कर दे और उत्तम अपनी जात तजे,
कभी जीवको न मारे घात तजे अपघात तजे
इतना तजे तो क्या होवे जो देहका नहि गुमान तजे नारा० ३
रहे रात दिन खडा न सोवे, पृथ्वीकी भी सेज तजे,
कष्ट उठावे रहे बेचैन औ सारी चैन तजे।
मीठा हो कर बोले सबसे, कटु अपने वचन तजे,
इतना त्यागे औ देह अभिमान नाहि दिन रैन तजे,
बनारसी उसे मिले नहि हर चाहे सकल जहान तजे, नारा० ४

पद ५१५. (राग धज)

हिरदेमें है हिंगलाज, करे काज लाज रखनेवाली,
नयना देखो नयनमें बसी हंस दे दे ताली. (टेक.)

और आसरे हरिभजनमें केवल मायामें भरमाया,
और आसरे हैं शक्ति और मीर. आसरे उपजी माया;
और आसरे हैं आदि ब्रह्म ये वेदांतिदमें छेद गाया,
और आसरे हैं दलाल्ली. जिसने घटमें दर्शन पाया;
और आसरे तो स्थिरजोत स्थिरपद मगन लगी हरिसे. निर०४

हरियोमाई.

—:o:—

पद ५१८.

हंसा कपटीकुं दाणा नहि मळे, घुंगले घुंगले हीरा मोती. घुंग०
माणक मोती लाल रे हंसा, कपटीकुं दाणा नहि मळेजी, (टेक.)
हंसा चालोरे दश देशमांजी, एनी सुनी रे दिंढोळामांट; हं०१
मन मारो हंसा पांकरीजी, हंसो थोडे थोडेरो धाय; हंसा०२
सरवरा अंतरीसामां दई परसोजी, औन्दो पाणी उडाडि काग. हं०३
गुरु परतापे हरियोमाई बोलियाजी, संतोने अमरापुर धाम; हं०४

होथी.

—:o:—

पद ५१९.

तेणे मारो मे भागी रे. संतो मे भागी.
सुरती मारो मन चरणमां लागी. (टेक.)
सदगुरुए मने भेद बताव्यो रे, अणफारे उपन्यो रागी रे;
त्रिवेंड त्रिवेणी रंग महेलमां रे, मने मोहन मोरली वागीरे.
तेणे मारो० १
दया करी मने शोलतो मळ्यो रे, तृष्णा मेली त्यागी रे;
पुरुष मळ्या पोते पुरुषोत्तम, त्यारे सुरती सुनमां लागी रे.
तेणे मारो० २
सतगुरु संते कृपा कीधी रे, अंतर प्रेम प्रकाशी रे;
दास होथीने गुरु मोरार मळ्या, तोडी जमनी फांसी रे.
तेणे मारो० ३

ज्ञानदेव.

—:०:—

पद. ५२२

मायध रोउनी धाई धाम्मा, पाहि अपुल्या डोळा गे;
तन्मय गुरुचे त्याशी पहु, त्याही घन सांपळागे. (टेक.)
त्रिकूट गिरिचे शिखरीं, चिदा कल्पितो माना पाँरगे;
दसलें विज घन थाटे अलक्ष नांदे सर्वांतरांगे, मायध० १
जागृति स्वप्न सुषुप्ति तुर्या, योगिनी उन्मनी आरींगे;
चालक चिन्मय आत्मानंदे, इंद्रियांचे द्वारींगे.
दोउनिया अनुभवी विश्वीं, पकें विश्वाकारींगे;
अनुहत नाद नसांद थाटे, गगनासें भितरींगे. मायध० २
प्रत्यक्ष अनुभव धरीं जैसा, अमलक हस्ता वरीगे,
ऐसा दारुण आले गुज दायिनी, आपुल्या करींगे.
कुंकुम मंदिर शुभ्र स्फटिका, मही गिरि वरींगे;
श्याम सुनिल वर्तुल इंद्र, निळाचे कुसरींगे. मायध० ३
झळ झळ झळके स्वरूप पाहे, अंतर्गाचे अंतरींगे;
गुणविण ओळखा निगुण प्राणी, शब्द ऐसाचे गोचरींगे.
दिसे निजुक नामें ऐसा, म्हणति ब्रम्हिष्ट गोष्टिंगे,
त्याच्या फळला नाहिं जप तप, तीर्थे साधन कोटींगे.
ज्ञानदेव म्हणे न सूटे तया, संसाराच्या गांठींगे. मायध० ४

पद. ५२३ (बिहाग.)

कमळनयन घनश्याम तनु हो. (टेक.)
चंद्रानन रघुराज विराजे, हस्तकी कांचन बाण धनु हो; कमळ० १
सुंदर नासिक थाँव सुधाकर, सुंदर दन अति रम्य हनु हो; कमळ० २
सज्जन रंजन कपिकुल मंडन, उन्मुनि भूप विभूप मनु हो; कमळ० ३

पद ५२४.

बंसी गगन मध सुनी (टेक.)
मूळ चक्र चिनो पहिले बंद दे धरनी;
अर्ध उर्ध्वमें धुंद गरजे, फिरदे जोग डनी. बंसी० १
सब चीनो पार उतरे, छांड मान मनी,
गंगा जमुना मिले सरस्वती, झरत अमृत कनी. बंसी० २

पीवेगा कोई जोग जुगता, सकल वीख हरनी;
अष्टदलपर कमल फूला, जानत ज्ञान गुनी. वंसी० ३
मान सरोवर मुक्ता मोती, चुंगत हंस मुनी;
द्वादशसो उलटा पवना, गुंफा अधर करनी. वंसी० ४
झगमग जोत अति निरमल, तहां दृष्टि धनी;
थके ईंद्र महेश ब्रह्मा, निगम शेश फनी. वंसी० ५

पद ५२५.

रामको नाम सुमर मन मेरा, जीवनका येहि नाताहै. (टेक.)
घडि घडि पलपल कुचकी बाजी, अंत नहि कोइ तेरा है;
सिर तेरे घडियाला बाजे, पाव पलकमें गिरता है. राम० १
कायानगरमें अधरम राजा, पांच पचिश लेके रहेता है;
सुरजका घोडा ग्यानि चित्त चौगाना, माया ममतामें फिरताहै.२
तन पिंजरको तोता तेरा, काल पडे उड जाता है;
अलतरंग तेरा यिसतारा, लगी पवन उड जाता है. राम० ३
नम्रे होय कर रहिये पडवा, दबदे सोई जूठा है;
राजाके घर अजर अमर हैं, विरला कोइ नर पवच्या है. रा०४
जबलग सक्कर कमलफूलमें, तबलग भमरा रहेता है;
सक्कर सुक कमल मुरजाना, जद भवरा उड जाता है राम०५
सहस्र घडियारे याकुं लागी, उलटा फावा फिरता है;
येक भरी येक रीति आवे, भरीकुं रीति करेला है. राम० ६
हैं कोई अैसा पेट नगरमें, राम आदल चलता है;
बाहेर भीतर चोरन लागे, चेरो सो नगरी बचाता है. राम०७
या घरका कोइ नाम बतावे, ज्या घरसें हंस आता है;
उड जावे तब कोन घर जावे, कहां आय समाता है राम० ८
आप जल दास अट्टल अविनाशी, सत सुकृतसें रहेता है;
सद्गुरुके प्रतापी चरना, हरदम हरघ गुन गाता है. राम० ९.

पूरवणी.

कहान*

—:o:—

पद ५२६. (धन्याश्री.)

कर झटपट सत्संग, मन तुं, कर झटपट सत्संग. (टेक.)
काया माया काम न आवे, पंच विषय दुखभंग, मन तुं० १
शास्त्र अने सद्‌गुरुनी मददे, जीत कुसंग प्रसंग, मन तुं० २
काम क्रोध मद मोहादिक छे, षड् शत्रुनो अंग, मन तुं० ३
गंग समान अतिशय निर्मळ, हरि-रस रंग तरंग, मन तुं० ४
था पावन धन आके नय जा, भर उर पूर उमंग, मन तुं० ५
जप तप साधन सिद्ध सकळ छे, उत्तम नरतन नंग, मन तुं० ६
घर घर तुं भटके मरकटवत्, भ्रमणाथी छे भंग, मन तुं० ७
कान मान मूकी दे मिथ्या, ओ उन्मत मातंग, मन तुं० ८

पद ५२७. (राह एज.)

छोड विषयनो छंद, मन तुं, छोड विषयनो छंद. (टेक.)
पंच विषयना प्रपंच सघळा, दे दारुण दुःख फंद, मन तुं० १
था सावध पथलुं आणी हठ, मटे विकट भवफंद, मन तुं० २
आतम-तत्त्व अभेद ओळखे, था सद्-चिद्-आनंद, मन तुं० ३
शब्द स्पर्श रस रूप गंध छे, मायाजाळ अनंत, मन तुं० ४
सतसंगत सद्‌गुरुनी सेवा, छे अनहद सुखकंद, मन तुं० ५
विष विषय रस रगथी छोडी, भज भावे भगवंत, मन तुं० ५
कान ज्ञान हरिथी थाले, साचा संत महंत, मन तुं छो० ७

खीम.

—·o—

पद ५२८.

जीन मुखमें सिया राम न समर्यो, तिन मुखमें तो धूळ परीरे. (टेक.)
धिक तेरो जन्म जीवन तेरो धिक, धिक मनुष्यकी देह धरीरे;
जीयत तात मुवे नाहि तेरा, क्युं जन्म्यो तुं पाप करीरे जिन० १

---

* "कहानकाव्य"मां आवां नुतन नव राग-रागनां पुस्तक पडी छे.

राम नामबिन रसना कैसी, करो उनकी टुकडा टुकडीरे;
जिन नेनसेँ प्रभु नहि निरखे, उन नेनमे लूण भरीरे. जिन० २
रतन पदारथ जनम मानखो, आवत नहिसो फेर फरीरे;
अब तेरो दाव बन्यो हे मूरख,करना हो सो लेने करीरे. जिन० ३
हाथ पसार कियो नहीं सुकृत, तीरथ डग न भरीरे;
धीम कहे तुं भूलो आयो, तेरी खाली खेप परीरे. जिन० ४

गोवर्धन*.

—:०:—

पद ५२९.

श्रीकृष्ण भजन जेणे न कर्युं, जनमारो तेनो व्यर्थ गयो. (टेक.)
बहु पाप-पुण्यनी पोठ भरी, भवबाट विषे वणजारो थयो;
नहि मिथ्या तृष्णा तुटेल खरो, खर्ची खरे खाइ खराब कर्यो. श्री० १
अहि लाभ्यो हतो सहसाधन जे, सहसा धन ते खर्चीने रह्यो;
कहे गोवर्धन कवियने हतु, हरि हीरो हैयेथी जाय हर्यो. श्री० २

पद ५३०. (कल्याण.)

कृष्ण कथामृत पी पी पी, प्राणी हो, कृष्ण० (टेक.)
कृष्ण कथामृत पान करीश तो,
जम करशे नहि जी जी जी. प्राणी हो० १
धन वनितादिक मिथ्या माने तु
काळ हरे मने भी भी भी प्राणी हो० २
हरिसेवनमां राखी मन तुं,
पाप कर्मथी बी बी बी प्राणी हो० ३
गोवर्धन प्रभु भक्ति रहित ते,
इतर कथा ले दी दी दी. प्राणी हो० ४

* आ कविनी कविताई पुस्तक "सुभाषित-लहरी" प्रसिद्ध छे.

देवकृष्ण*.

—:0:—

पद ५११. (ठुमरी.)

देखो संतो व्यापक एक हरी. देखो० (टेक.)
अरव उरध मध जलथल मांहीं, सबमें रह्यो है भरी. देखो० १
दुष्ट विदारण सज्जन कारण, जिन इह देह धरी. देखो० २
अकल अखंड अनूपम जानो, अनुभव अपनो करी. देखो० ३
द्वैताद्वैत रहित पद जो है, तहां मन वृत्ति ठरी. देखो० ४
देवकृष्ण सोहं प्रद लीनो, सद्गुरु सान खरी. देखो० ५

पद ५१२. (ठुमरी-केरवाली.)

अवकें मान कह्यो मन मेरो. अवकें० (टेक.)
ज्ञानविना भवसागर मांहीं, बहुत फिर्यो है फेरो. अव० १
ब्रह्म सदोदित जो श्रुति गावत, सो पद जान तुं नेरो. अव० २
अस्ति भाति प्रिय सबमें व्यापक, सोई स्वरूप है तेरो. अव० ३
देवकृष्ण गुरुदेव कृपातें, पायो चितको ठेरो. अवकें मान० ४

पद ५१३. (राह एज.)

नरतन जन्म धरी कहा कीना, नरतन० (टेक.)
सर्वाधार सबहीमें व्यापक, वे पदकुं नहि चीना. नरतन० १
राम कृष्ण शिव गुरु इनको दिल, मुखतें नाम न लीना. नरतन० २
शील संतोष दया दिल धरकें, दीनकुं दान न दीना. नरतन० ३
विषयनकुं चित चाहि वृथा सठ, तन मन कीना मलीना. नर० ४
देवकृष्ण अब तो गुरुपदमें, तन मन अर्पण कीना. नरतन० ५

पद ५१४. (काफी-त्रिधी.)

भाग्य उदय मेरो, भयो सखी भाग्य उदय मेरो.
ब्रह्मविद संत चरन रज कर, मम शुध भयो देरो. भयो० (टेक.)
जिंहि मुख वचन सुनत गयो मुज मन, त्रिविध ताप केरो. भयो० १
जिन कर चरन शरनहीं मिटावन, भवसागर फेरो. भयो० २
संत समान आन नहि जगमें, सम चित जिन केरो. भयो० ३
शुक सनकादिक नारद जिन कर, गावत गुन घेरो भयो० ४
देवकृष्ण मन वचन में होयहु, संतचरन चेरो. भयो० ५

---

* आ महात्मा पुरुष कच्छ-मोरवीमां थोडाज वरस थइ गया छे.

पद ५३९. (एकताल.)

अपनो मनपा मेरा, घर आतमको ध्यान ध्यान. (टेक.)
तरण सुक्षम स्थूल देह त्रय, इंद्रिय मन अरु प्रान;
ए मायाकृत नाम रूप जग, दुःख सवत जड जान जान.अप० १
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया, पर उन्मनी अस्थान;
परापार परमातम केवल, 'सो हुं' पद निरवाण वाण.अपनो० २
जा करि तेज प्रकाश प्रकाशत. उडगन ईंदू भान;
'सो मैं' इम निश्चय करके तज, अनात्मको अभिमान मान.अ० ३
'सो हे' शब्द जहाँ लय पावत, सो निजरूप न आन;
देवकृष्ण संशय मतकर, मन ए सतगुरुकी ग्यान सान. अप० ४

पद. ५३९ (ताल दादरा.)

भज मन गोविंदा गोविंदा. छोड जगतका फंदा. (टेक.)
निरगुण निरलेपक निरंजन, सत चित आनंदा;
जाकुं ब्रह्मादिक मुनि ध्यावे. पावे सुखकंदा. भज मन० १
रामकृष्ण परिब्रह्म सनातन. गावत मुनिवृंदा,
ताकुं जे अवतार कहत हैं, ते अति मति मंदा.भज मन० २
सदगुरु करुणा करीहि मिटायो. सब भव दुःखफंदा;
देवकृष्ण पूरन अब पायो, ए परमानंदा. भज मन० ३

पद. ५४०. (सिंधी)

सो नर सच्चा वि सच्चा, अपनो सोई गुरुका बच्चा. (टेक.)
विषय पदारथ विषयत मानी, दूर करी सब आसी;
महावाक्य गुरु मुखसें जिनने, लीना खूब तपासी. सो नर० १
पारसमनको गुन हे जिनमें. मूल कछु नहि लेवे;
संशय दूर करी संगीको, कंचनसो कर देवे. सो नर० २
इतबादको पक्ष न धरहीं, मुखसें द्वैत न बोले;
अधिकारी जन आय मिले तो, अनुभव अपनो खोले. सो नर० ३
शील संतोष सदा मन जाके, नहि मोह अरु ममता;
आठ पहोर बालकवत रहेवे, चिदानंदमें रमता. सो नर० ४
आतमतत्व विना जिनहिको, अवर नजर नहि आवे;
जीवन मुक्ता मुक्ता जगमें, "अहं ब्रह्म" मुख गावे सो नर० ५
सेले सबमें सबसे न्यारा, रहे सकल रसरोगी;
देवकृष्ण एसे संतनकुं, नमन करत करजोरी. सो नर० ६

पद. ५४१. (होरी-काफी.)

सद्‍गुरु सत ज्ञान बतायो, तातें हम आनंद पायो. (टेक.)
पंचकोश परब्रह्म सदोदित, त्रिगुणातीत रहायो;
निगम अगम निज रूप सदा जो, प्रकृति पार कहायो,
सहज सोहि अनुभव आयो. सद्‍गुरु० १
"मैं सो ब्रह्म ब्रह्म सो मैं हों," या विध द्वैत विलायो;
ईश जीव उपाधि छांडकें, "तत्वमसी" श्रुति गायो,
सोहीमें एही दृढायो. सद्‍गुरु० २
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया, ता परमेंही बसायो;
वैखरी मध्य पश्यंति पराको, साक्षीमें सुभर भरायो,
"सोहं ब्रह्म" घट घट छायो. सद्‍गुरु० ३
धन गुरुदेव शास्त्र सोई धन हे, जिन अज्ञान नसायो;
हार गुरु संत सुखद दुख नाशक, पदपंकज रज पायो,
देवकृष्ण ध्यान लगायो, सद्‍गुरु० ४

पद. ५४२. (वसंत.)

खेलो खेलो रे जन ऐसो वसंत, जातें भवसागरको आवे अंत.(टेक.)
मातपिता सुत कुटुंब नार, तामें स्नेह लगाय क्युं होत ख्वार रे;
अंतमें कोई नावे काम, तातें भज मन सद्‍गुरु आठ जाम. खेलो०१
संत समाज मों सरस बाग, जामें कुबुद्धि कबरी नाहीं;
निगम वचन बहु फूले फूल, यामें "तत्वमसि" गंध अति अमूल.२
जांहां ब्रह्म निरूपण नित्य होइ, ताकुं बाध न लागत अन्य कोई;
रे तामध बेठ तुं करले चेन, मन दूर करी सब विषय फेन.खेलो०३
शुद्ध सत्व गुण वस्त्र धार, तम रज रुत मल दूर डार;
ज्ञान गुलाल चडाव अंग, जाको कबहु न उतरे रंग. खेलो० ४
मैं ब्रह्म ए दृढ रोप थाम, मन जानि जुठ सब रूप नाम;
अस्ति भाति प्रिय सकल धार, मन देवकृष्ण एहि समज सार. खे०५

नंनु.

—:o:—

पद ५४३.

वालमजी तमसें मारं ध्यान लागुं रे. मोहनजी तमसे०
तमसे मारी प्रीत बंधाणी, मेली दीधां घरबारजी. (टेक.)

अनर्थी अलगा रे तमे दिदने भनो छो, दीठा अमे दरबार रे;
त्रण भुवनना तमे नाथ कहेवाया छो, दुःखभंजन दातार रे. था०१
वेडलो अमारो थाल शुरुयाने लाग्यो, म्हेली फरो तेनी धार रे;
सांयाजी रे तमे गुण गाशो नहिं, कम उतरशो भवपार रे. था० २
सांयाजी तने मारी सेजे पधारो, फर्द हैया फेरो हार रे;
मारे रे मनकुं तम साथे बंधाणुं, शोक करे बहु मार रे. था० ३
पाजी ननु रे तारा चरणमां आव्यो, मयळ लेजो मारी सार रे;
सघुं कुटुंब मेनो सरवे तजियुं, तारो लीधो रे आधार रे. था० ४

नानक.

—:०:—

पद. ५४४. (धन्याश्री.)

जीवितको व्यवहार, जगतमें जीवितको० (टेक.)
मातपिता भाई सुत बांधव, अरु निज घरकी नार, जगतमें० १
तनसें प्राण होत जब न्यारे, टेरत प्रेत पुकार, जगतमें० २
अरध घडी कोई नहि राखे, घरतें देत निकार, जगतमें० ३
मृगतृष्णा ज्युं यह जगरचना देखो हृदय विचार, जगतमें० ४
जन नानक प्रभु संतनको, दाख्यो तोह पुकार, जगतमें० ५

पद. ५४५ (राग गज.)

जूठी देखी प्रीत जगतमें जूठी देखी प्रीत (टेक.)
मेरो मेरो सबहि करत हय हेतसें बांधत चीत. जगतमें० १
अपने सुखको सब जग सेवे क्या दारा क्या मीत जगतमें० २
अंतकाळ कोई संग न चाले ए अचरज हय रीत जगतमें० ३
मन मूरख जी अजहु न समजत सुख दहारे नीत जगतमें० ४
नानक भव जल पार पडे जब, गाओ हरिके गीत. जगतमें० ५

पद. ५४६ (प्रभाती आशावरी)

खबर नाहि प जुगमें पलकी खबर नाहि०
सुकरित करले राम समर ले का जाने कलकी. (टेक.)
तारा मंडल रवि चंद्रमा और आकाशकी
चार दिशाके समस्तामें फिरती वादळकी फिरती खबर०१

कोरी कोरी मागा ओढी, कर वालो छागली;
गागरी गोद धरी शिर उपर, होवन नहीं हलवी. हां० भगवडर
मार्दंगम और मुदंग कधीने, मोहोवन [illegible];
कागा मागा जुडी वाजी, हुए तेरी कयकी. हुए० भगवाः ३
अचलग हुगा हुरे कायाले, मन लगा मोगरडी.
छोड चले शैशव देहीकु, मारी अंतरकी मारी. भगवन० ४
कृपा परमगुरु साहेब समर्थ, घट के सामवटी;
राग द्वेष अभिमान न राखो, जिनकी आनन्दकी जिनकी. भगवन० ५

ब्रजानंद.

पद ४७४. (सुर[illegible])

शीश मुकट तिलक भाल, कानन कुंडल विशाल,
कंठमे वैजंती माल शोभित अति भारी. शीश मुकट० १
[illegible] नन पीत वसन, मदन मंद मंद हसन,
तीन हाथ [illegible] मधुर मुरलीधारी. शीश मुकट० २
[illegible]
[illegible] मन [illegible] नेन, [illegible] शीश मुकट० ३
कुंडल [illegible] वारी मूरत [illegible];
ब्रजानंद [illegible] शीश मुकट० ४

[illegible])

जय [illegible]
[illegible] जय मोहन० १
[illegible]
[illegible] जय मोहन० २
[illegible]
[illegible] जय मोहन० ३
[illegible]
[illegible] जय मोहन० ४

[illegible])

[illegible]
[illegible] [illegible]० १

विषयोंकी ओर आशा, बंधनकी सोइ पाशा,
करत जीवको विनाश, भयसिंधु डारके. तेरोहि० २
मात तात आदि जेते, स्वारथके बंधु तेते,
आवत औ जात केते, नाहि कोइ कामके. तेरोहि० ३
गुरुकी शरण आवे, आपनो स्वरूप पावे,
ब्रह्मानंदमें समावे, मोहजाल फारके. तेरोहि० ४

पद ७००. (गमाचत्रिताल.)

भजरे नर सारंगपाणि, मानुषतन पुन पुन नहि आवे;
दिनदिन घडिघडि पलपल छयछय थवत जात जैसे
अंजलिको पानी. भजरे नर० (टेक.)
नर मूढ पापमें डरे, हरिपादकमल चित धरे;
सज्जनगण संगति करे, तज धनयौवनका मद मनसें,
शरण गहो सतगुरु ज्ञानी. भजरे नर० १
विषयारस विषम भुलाना, निजसुखस्वरूप नहि जाना;
शठ मरकट सम पछताना, भटकत पुनपुन लख चौरासी,
सुख न लहत छण अभिमानी. भजरे नर० २
सुत दारादिक परिवारा, क्षणभंगुर देख विचारा;
जिम बिजलीका चमकारा, करिकरि पाप करत धनसंचय,
नरक परत पामर प्राणी. भजरे नर० ३
जो नाम हरीका गावे, भवसागरको तर जावे,
फिर गर्भवास नहि आवे, ब्रह्मानंद परम पद पावत,
धावत नहि मृगतृष्णा पानी. भजरे नर० ४

पद ७०१. (राग धम.)

सुन हे हरिके गुण प्यारे, भवसागर जलतरण कठिन है.
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद, निशदिन मिलकर
मगमें मारे. सुन हे हरिके० (टेक.)
चंचल मन थिर कर माने, शिरका हलका नहि जाने,
नानाविध कार्य ठाने, फिरत विषयरसमें नित तत्पर,
दुर्लभ जन्म सुफल किम हारे. सुन हे० १
सुत मात पिता अरु नारी, यह सुर्दा आठ पचारी,
जो दिनकी हमकी यारी, अपने अपने स्वारथके सब,
नहि कोइ आवत संग तुमारे सुन हे० २

परमेश्वर है इस तनमें, क्या खोजन जावे बनमें;
कर ले विचार निज मनमें, जिम सूंघत मृग पुनपुन तृणको,
नहि फिर कर निज नाभिको निहारे. सुन ले०३
यह जग स्वपनेकी माया, क्या मूरख देख लुभाया;
अपणो सुखरूप भुलाया, ब्रह्मानंद चरण हरिके भज,
जो चाहे भवजलनिधि पारे. सुन ले० ४

पद ५५२. (जंगलो-त्रिताल.)

नारायण मैं शरण तुमारी, दया करो महाराज हमारे. (टेक.)
मात तात सुत दार सहोदर, कोई न आवत काज हमारे. नारा०१
भवसागरजल दुस्तर भारी, तुमरे चरण जहाज हमारे. नारा०२
पाप अनेक किये जगमांहि, तुमको है अब लाज हमारे. नारा०३
ब्रह्मानंद दया तुमरीसें, सब दुख जावत भाज हमारे. नारा०४

पद ५५३. (राग एम.)

नारायण जिनके परिपालक, तिनको कौन दुखाय सके. (टेक.
प्रल्हाद भक्तको डारा अगनमें, रोम न एक जलाय सके. नारा०१
गजको पकड ग्राहने खेंचा नाहि जलबीच डुबाय सके. नारा०२
द्रुपदसुताकी खींच सभाके, रंच न लाज उठाय सके. नारा०३
ब्रह्मानंद जो हरिगुण गावे, सो निर्भय पद पाय सके. नारा०४

पद ५५४. (राग एम.)

कहत मंदोदरि सुनो पिया रावण, मानो वचन हमारारे. (टेक.)
जो कृपालु जगपालक ईश्वर, सो रघुकुल अवतारा रे,
तिनसंग वैर किये किम सुख हो, मनमें देख विचारा रे. क०१
मधुकैटभसे दैत्य पछाडे हरणाकस नख फारा रे,
बलिराजा पाताल पठाये, तिनको जीतनहारा रे. कहत० २
एक कपि जिनको चल आयो, तिन सब लंक प्रजारा रे;
आवे सेन सबी जब तिनकी, तब क्या होय सुमारारे. कह०३
जो योगिजन ध्यावत मनमें, ब्रह्मानंद अपारा रे;
सो यह राम प्रकट भूतलमें, लेमिल जनक दुलारा रे. कहत०४

पद ५५५. (राग एम.)

यह जग स्वप्ना है रजनीका, क्या कहे मेरा मेरा रे. यह० (टेक.)
मात तात सुत दार मनोहर, मात बंधु सब चेरा रे,
मारो अपने स्वारथके सब, कोई नहि है तेरा रे. यह जग० १

जिनके हेत कारन धनजोबन, घर घर माग घनेरा है;
जब यमराज पकड़ ले जावें, कोइ न संग सवेरा है. यह जग० २
ऊंचे ऊंचे महल बनावें, देख दिगोवर घेरा है,
सब ही ठाट पड़ा रह जावत, हंस जंगलमें डेरा है. यह जग० ३
अमर पुरुषसे प्रीत जिन करनी, अंत अमरकी डेरा है,
ब्रह्मानंद कब दिन जावे, फिरत चौरासी फेरा है. यह जग० ४

पद ७७८. ([illegible])

आज सखी श्यामसुंदर बंसिया बजावे. आज० (टेक.)
मोर मुकट सिर धराय, पगमें नूपुर सुहाय,
बंसी मुखसे लगाय, मधुर मधुर गावे. आज सखी० १
यमुनाको श्याम धार, विटपनको मुकुल डार,
धेनुमुख धरत हार, ध्वनिमें मन लावे. आज सखी० २
ब्रह्मा सुरराज दोय, शंकर गौरी गणेश,
धार धार मनुज वेष वृंदावन आवे आज सखी० ३
वंशीधुन सुन अपार, ब्रजकी सब थकित नार,
काज सकलके बिसार ब्रह्मानंद पावे. आज सखी० ४

पद ७७९ ([illegible])

भजरे नर रामचरण, निशदिन सुखदाई. भजरे०(टेक)
नरतन यह बारबार जगमें नहि मिलनहार,
कोई दिनकी बहार पीछे पछताई भजरे नर०१
नारी सुत मात तात, यार दिवसकी जमात
कोई नहि संग जात नरकमें सहाई भजरे नर०२
जनका क्या करत मान पंकज दल लघु समान,
[illegible] कुलधरमसे दान [illegible] नहीं जाई भजरे नर०३
बारबार रामनाम जपले तज सकल काम,
ब्रह्मानंद परम धाम अंतकाल पाई भजरे नर०४

पद ७८० ([illegible])

मेरी आली री श्यामसुंदर मन चोरा. (टेक.)
जबसे बिछुड फिर नहि आयो, ऐसे निपट कठोरा मन चोरा०१
ढूंढ फिरी मैं कुंजगलिनमें री जाय छिपे किस ओरा. मन चोरा २

मनसे तज विषयनकी आशा, सबमें ईश्वर बैठ निवासा,
काम क्रोध परिहरिये, भज हरिचरणन० २
तू किसका है कौन तुम्हारा, यह सब मायाजाल पसारा.
शरण प्रभुकी पड़िये, भज हरिचरणन० ३
ब्रह्मानंद कपट छल माया, तज कर भजो निरंजनराया.
भवसागरजल तरिये, भज हरिचरणन० ४

पद ७११. (कालीगडा दादरो.)

दीनानाथ रमापति, यह दुःख हमरा हरो रे, दीना० (टेक.)
करमें चक्र सुदर्शन पकड़ो, शीश किरीट धरो रे. दीना० १
गलबिचमें माल डालकर, पीत वसन पहरो रे. दीना० २
श्याम अंगमें ले कमलाको, गरुड सवारी करो रे. दीना० ३
ब्रह्मानंद विलंब न कीजे, भवभय दूर करो रे. दीना० ४

पद ७१२. (राग ...)

मैं तो शरण तुम्हारी, तुम हो पालक मेरे. मैं तो० (टेक.)
ब्रह्मा इंद्र गणेश सदाशिव, ध्यान धरत सब तेरे रे मैं तो० १
ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसे तार दिये बहुतेरे रे. मैं तो० २
मेरे अवगुण चित्त न दीजे अपनी लज्जाको हेरे रे मैं तो० ३
ब्रह्मानंद चरणमें तुमरे काल न आवत नेरे रे मैं तो० ४

पद ७१३. (...)

मोहनबिन जीयरा जावत है आली जावत है
नहिं भावत है मोहन बिन० (टेक.)
वृन्दावनकी कुंजगलिनमें सांवरिया अटकावत है. मोह० १
लोकलाज कुलकी नहिं माने सुन बंसीधुन धावत है. मोह० २
खान पान तनकी सुधि नाहीं श्यामसुंदर मन भावत है मोह० ३
ब्रह्मानंद प्रेमवश मोहन मिलकर रास रचावत है मोह० ४

पद ७१४. (...)

चंचल मन निशदिन भटकत है, कहीं भटकत है,
भटकावत है चंचल मन० (टेक.)
जिम मर्कट तरुऊपर चढ़कर डारडार पर लटकत है चंच० १
इकतक यतनसे क्षण विषयनते, पुन तिनहिमें अटकत है चंच० २
काचके हेत छोड़कर मूरख चिंतामणिको पटकत है चंच० ३
ब्रह्मानंद सर्मांग छोड़कर तुच्छ विषयरस गटकत है चंच० ४

उनके रासविलास सुमरकर, नैनन नीर भरे. कैसे सखीरी० ३
ब्रह्मानंद बहुर नहि आवे, हमरी सुध विसरे. कैसे सखीरी० ४

पद ५७१. (राग इम.)

मेरो मन रे भज ले राम हरे. (टेक.)
यह नरजन्म बहुर नहि आवे, कोटिन यतन करे. मेरो मन० १
शिरपर काल खड़ा निसवासर, नेक न मूढ डरे. मेरो मन० २
दीपक ले कर करके मांही, काहे कूप परे. मेरो मन० ३
ब्रह्मानंद विना हरिसुमरण, भवदुख कवी न टरे. मेरो मन० ४

पद ५७२. (हिंडोटी-सोरठ-गजल.)

तेरी शरणमें आयके, फिर आशा किसकी कीजिये० (टेक.)
नहि देख पड़ता है मुझे. दुनियामें तेरी शानका,
गंगाकिनारे बैठकर, किम कूपका जल पीजिये. तेरी० १
हरगिज नहि लायक हुं मैं, गरचे तेरे दरबारका;
मेरी खताको माफ कर, दीदार अपणा दीजिये. तेरी० २
पतितपावन नाम सुन कर, मैं शरण तेरी पड़ा;
अब सफल कर इस नामको; अपणा मुझे कर लीजिये. ते० ३
मिलता है ब्रह्मानंद, जिसके नाम लेनेसे सही;
ऐसे प्रभुको छोड़कर, फिर कौनमें हित कीजिये. तेरी० ४

पद ५७३ (राग गज.)

जो भजे हरिको सदा, सोई परमपद पायगा० (टेक.)
बाहिरके माला तिलक. अरु छाप नहि किस कामके;
प्रेमभक्तिके विना नहि, नाथके मन आयगा. जो भजे० १
दिलके दर्पणको सफा कर दूर कर अभिमानका,
खाक हो गुरुके कदमकी, तो प्रभु मिल जायगा. जो भजे० २
छोड दुनियांके मजे सब बैठ कर एकांतमें,
ध्यान धर हरिके चरणका, फिर जनम नहि आयगा. जो भजे० ३
दृढ भरोसा करके मनमें जो जपे हरिनामको.
कहते है ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद बीच समायगा जो भजे० ४

पद ५७४. (इलोरा भैरवी-ताल दादरा)

सोह सोह सदा बोल रे तोता*,
नहि तो भवसिंधुमें तुं खायगा गोता सोह सोह० (टेक.)

* मन

जगत् बगीचे बीच फल चूसता फिरें,
  आतमस्वरूपकी तरफ नजर नहि धरें;
  मायका जब गुलेल लगी फिरेगा रोता. सोहं० १
लालचको देख मूढ पींजरेमें फस गया,
  मदादि मान पाय मान हैरान भया;
  तु छोड़कर इसे पलक जुदा नहि होता. सोहं० २
किसी दिनमें पींजराभी मेरा टूट जायगा,
  स्वजन मुरा न माल सभी छूट जायगा;
  जिनके तु वास्ते मुफत उमर फिरे खोता. सोहं० ३
कहते हैं ब्रह्मानंद सुनों सूवा रे चपल,
  इस पींजरेको छोड़ सदा हो रहो अचल;
  तु जाग मोहनींदसें फिरे कहां सोता. सोहं० ४

पद ५१५. (राग पूर्व.)

सोहं सोहं सोहं सदा बोलरी मैना,
  होता है वह शहर यहि वेदका कहना. (टेक.)
तु बैठ अंबडार शब्द बोलती रहे,
  अपनें मुकाममें कभी विश्राम ना लहे;
  लोगी बाजकी झपट लूटेंगे सब सैना. सोहं० १
जिसे तु ढूंढने जंगलमें जाती है सदा,
  वही है तेरे पास नहि होता कभी जुदा;
  बतायते हैं संत यही समझ ले मैना. सोहं० २
इस पांजरेमें बैठ मूढ आपको गई,
  खानपीनें लालचमें सदा कैद हो रही.
  तु छोड विषय संगत बी पावेगी चैना. सोहं० ३
यह पींजरा पुराना तेरा होंश जात है,
  दिन चार पांच का यहि का पलभरि वास है,
  कहते हैं ब्रह्मानंद यह सदा नहि रहना. सोहं० ४

पद ५१६. (झिंझोटी राग दादरो.)

बिना हरिके भजन मुफत जन्म गमायो,
  दुनियांकी मौजमें फिरे सदा हि मुलाना. (टेक.)

यह बार बार देह मनुजका न मिलेगा,
  डालीसे टूटा गुल्म गुलिस्तांमें मिलेगा;
  दिन चार पांचके लिये क्या ढंग जमाया. बिना० १

जिनको तु मानता है मेरे हैं यह पियारे,
  यह छोडकर तुझे जंगलमें घरको सिधारें;
  परलोकमें न तेरे कोइ होंय सहाया. बिना० २

मोहकी मदिराको पीके मस्त भूलया,
  झूल झूल विषय रसके हिंडोल फूलया;
  अबतक न बूंदको किसीने मुखमें उठाया. बिना० ३

कहते हैं ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद लीजिये,
  सदा हरिका भजन दिलोजांसे कीजिये;
  करनेसे जिसके फिर न कोइ लौटके आया. बिना० ४

पद ५७७. (राग-ताल उपरवत्.)

मान मान मान कहा मान ले मेरा,
ज्ञान ज्ञान ज्ञान रूप ज्ञान है तेरा. (टेक.)

ज्ञाने बिना स्वरूपके मिटे न गम कभी,
कहते हैं वेद बार बार बात यह सभी;
हुशियार हो निहार बार बार मैं मेरा. मान० १

जाता है देखने जिसे काशी दुवारका,
मुकाम है बदनमें तेरे उसहि यारका;
लेकिन बिना विचारके किसुने न हेरा. मान० २

जो नैनका भी नैन बैनका भी बैन है,
जिसके बिना शरीरमें न पलक चैन है;
पिछान ले वस्तु सो स्वरूप है तेरा. मान० ३

कहते हैं ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तुं सही,
बात यह पुराण वेद ग्रंथमें कही;
विचार देख मिटे जन्ममरणका फेरा. मान० ४

पद ५७८. (राग-ताल उपरवत्.)

गाफिल तुं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है,
किस वासने पडा जन्म मरणके कूप है० (टेक.)

तब समय श्रीकृष्ण देखके, होरी खेलन मन आई,
गऊके होरी सबै नहिं कबहूं. याते करके चतुराई:
नहिं समुजे चतुराई. हे कृष्ण खेलो० १
पांच भूतकी धातु मिलायक, भेद पचमारी बनाई,
वांदु गुमन रेन श्रीसर अस्वर, नाना रूप धराई:
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई. हे कृष्ण खेलो० २
तीन त्रिगुणकी गुलाल बनाकर, तीन प्रमोद उडाई,
जिन जिन नेन गुलाल पडी पद, सुध बुध सब बिसराई:
नाहि मारग सूजाई. हे कृष्ण खेलो० ३
भेद अंग श्रीगमकी मिलायत, जिनने नेनमें पाई,
ब्रह्मानंद निरखो भ्रम भाग्यो, सुख पडी अपणाई,
होरी कछु बनी न बनाई. हे कृष्ण खेलो० ४
पद. ५८१. (राग-ताल-कवाली.)
श्याम खेलो खेलन होरी होरी, अनहद नूर बनो री,
कोई जब भेद लहो री. श्याम खेलो० (टेक.)
तन रंगभूमि बनी अति सुंदर, चालन चाफल गोरी,
भाडी अनेक गली जहां शोभित, खेले जहां सांवरो[1] री,
संग वृषभानकिशोरी[2]. श्याम खेलो० १
पांच[3] सखी मिल पांच रंग[4] भर, देन चढोर चढोरी,
राधिका लेकर डारे श्याम पर, सब मन दीन भिगोरी:
श्याम मन मोद भयोरी. श्याम खेलो० २
होरीमें मोद मानकर श्यामने राधिका पेन धरोरी,
मिल परिजन संग फाग मचायो, खेलन मगन भयोरी.
आप सुध भूल गयोरी. श्याम खेलो० ३
खेलत खेलत जानन पायो, दीर्घ काल गयोरी,
धन[5] धन किरन मिले जब सतगुरु, सखियन संग बिछोरी:
श्याम ब्रह्मानंद मिलोरी. श्याम खेलो० ४
पद. ५८२ (राग ताल-दुपरवत.)
आयो वसंत[1] सखोरी, मिल खेलिये होरी. (टेक.)
परके भूल गई गृहकाजन, मनमें ताप रहोरी,
जिन जिन खेली होरी श्यामसें, तिन बडभाग भयोरी, मिल० १

1 आत्मा. 2 बुद्धि 3 पांच इंद्रियां. 4 पंचविषय. 5 धन्य पुरुषोत्तम.
6 मनुष्यदेह.

पुनरपि मरणं पुनरपि जननं, पुनरपि जननी जठराता,
बिना हरीके भजन कुजन, नरका नल जलबिन जल जाता;
गेर रतन बहु काम तमाम, निकाम काचपर ललचाता,
गया हाथ नहि आय पुनर नर, मरकर मूरख पछताता.
करो हरिका० ३

गर्भवासका बाल संभाल हवाल बाल क्युं बिसराता,
भोग चोगकी आशपाश, मायाके मूरख फस जाता;
ब्रह्मानंदके बाक मनाक[1] चलाक जरी दिलमें लाता,
पाश मायाकी तोर मरोर, सजोर गगनतल चलजाता.
करो हरिका० ४

पद ५८५ (लावणी ख्याल.)

नाम हरिका दिलसें प्यारे, कभी भुलाना ना चहिये,
पत्थर नरका बदन रतनको, खाक मिलाना ना चहिये.
(टेक.)

सुंदर नारी देख पियारी, मनको लुभाना ना चहिये,
जलति अगनमें जाय पतंग, समान समाना ना चहिये;
बिनजाने परिणाम कामको, हाथ लगाना ना चहिये,
कोई दिनको ख्याल कपटका, जाल बिछाना ना चहिये. नाम०
यह माया बिजलीका चमका, मनको जमाना ना चहिये,
बिछडेगा संयोग भोगका, रोग लगाना ना चहिये;
लगे हमेशां रंग संग, दुर्जनके जाना ना चहिये,
नदी नावकी रीत किसीसें, प्रीत लगाना ना चहिये. नाम०
बांधव जनके हेत पापका, खेत जमाना ना चहिये,
अपणे पादपर अपणे कर कर, चोट लगाना ना चहिये;
अपणा करणा भरणा दोष, किसीपर लाना ना चहिये,
अपणी आंख है मंद चंदको, दो बतलाना ना चहिये. नाम०
करणा जो शुभ काज आज, कर देर लगाना ना चहिये,
कल जाने क्या हाल कालको, दूर बिछाना ना चहिये;
दुर्लभ तनको पाय आय, विषयोंमें गमाना ना चहिये,
भवसागरमें नाव पाय, चक्करमें डुबाना ना चहिये. नाम०

[1] लेशमात्र.

मुरार.

—:०:—

पद. ५८८. (आसा.)

तुं मेरो रुप स्वरूपकुं जानो, मानो संत तब सुघड सियाना. (टेक.)
तुं नहि तिनों गुनके तादय, तुं नहि जीव शिव नहि जाना. तुं० १
तुं नहि पांच पचीसा पसारा, तुं नहि नव पंदर निहाना. तुं० २
तुं नहि प्रकृति प्राणके पुरुषा, तुं नहि महानन्द मंडाणा. तुं० ३
तुं सबमांहि सबहिको साक्षी, रत मुरार तेरो पद राणा. तुं० ४

पद ५८९.

भजनमें राम रहो रे, साधु लगी रामसें प्रेम. (टेक.)
उलटा झाड एक है, नीचे पात उपर मूल;
अवल तो उसे फल आवत है, पीछुं निपजत फूल. भज० १
उलटा सुलटा कछु नहीं, सीधा सीधा एक;
गुरुज्ञानमें पूर्ण भयो तो, थांकी नजरे देख. भजनमें० २
पंगु है सो जान फिरे, मुका थांबे पुरान;
हर हर घटमें एक रहा, अंधा देखे कुरान. भजनमें० ३
एक देखने हम गये तो, हमची भये अनेक;
बेरा बेरा सुनते, ज्यां देखे तब एकै एक. भजनमें० ४
नामकुं तो नाम नहीं, ज्यां देखे वहां नामें नाम;
नाम देखने हम गये तो, हमची भये अनाम. भजनमें० ५
पंचभूतकी कोटडी, पंचमें भये पचीसा;
इसके ऊपर एक मिलाये, एसे भये छत्तीसा. भजनमें० ६
पानी है सो जल रहा, उसे बुझावत आग;
मेंढकुं जब गुस्सा आया, तब पावन लागी भाग. भज० ७
छनी सभी चीज है, पुरण ज्ञान वो जान;
गुरुकृपासें प्रभु नारायण, भूल गया वो मान. भजनमें० ८
घोडी जनी जब हाथी भया, उसने मार्या दाह;
उलटी बानी गावसी, प्रभु नारायण पाह. भजनमें० ९

पद ५९०. (गझल-धोता.)

पियाला प्रेमका पीया, उनुंने मायना लीया. (टेक.)
जगी है जोगकी धूनी, बरसत बुंदसें धूनी;
पिला लकरे सु नां सूझे, नयनसें ज्योत ना सूझे.
निकटसें ताप ना लागे, संन्यासी दूरसें भागे. पियाला० १

पद ५११.

…गुरुनी संग आवो, तहसां अलख लावो;
…द् सहजे पायो रे, आनंदरूपी अनुभवी. (टेक.) १

…र सूझुं त्यागी, तत्पदमें जोडं आगी;
…सों अर्थापदे लागो रे, आनंदरूपी अनुभवी. २

…न करे पांई, तामने तपाभ्रुं नांई;
…तीन गुण गाई रे, आनंदरूपी अनुभवी. ३

… नहीं सउपर जाय, त्रिविध यदापुं लाय;
…पनी समायुं धाम रे, आनंदरूपी अनुभवी. ४

…र येद शब्द वाणी, नामरूपनी भ्रांति नाणी;
…ला वस्तु पामे जाणी रे, आनंदरूपी अनुभवी. ५

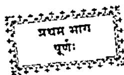
…स्तु केवल नाणीगाणो, जिप ईश्वर भ्रम जाणो;
…ा महापद सहजे माणो रे, आनंदरूपी अनुभवी. ६

५१२ (झिंझोटी-दुमरी.)

…ामरत्न धन पायो, मैया मैं तो० (टेक.)

…सत्संगत सद्गुरुप्रतापसें, भाग यदो यनि आयो;
…खरचे न खूटे याकुं चोर न लूटत, दिन दिन होत सवायो.
मैया मैं तो० १

…नीर न डूबे याकुं अग्नि न जालत, धरणी धर्यो न समायो;
…नामको नाव भजनकी बनियां, भवसागरसें तायो.
मैया मैं तो० २



અત્યુત્તમ નવનવીન ગ્રન્થો.

[illegible]—આ કાવ્યગ્રન્થમાં સગુણ નિર્ગુણ પ્રભુપ્રાર્થના, મનને ઉપદેશ, સંસારસુધારો, દેશની ચડતી-પડતી, સ્ત્રીસુબોધમાળા, બાળસુબોધ, ગોરક્ષાની આવશ્યકતા, નીતિ-સદાચાર, મુબઈમાં થયેલું ભયંકર હુલ્લડ,-ઇત્યાદિ અનેક ઉપયુક્ત અને મનોરંજક વિષયોપર નવિન કવિતાઓ રચી દાખલ કરી છે. આ ગ્રન્થ વિષે સુપ્રસિદ્ધ માસિકમંડળે ઘણા સરસ અભિપ્રાય આપ્યા છે. પૃષ્ઠ ૨૩૨ મૂલ્ય રૂપિયો ૧। પોસ્ટેજ ૨ આના.

[illegible]—આ ગ્રન્થમાં ઘણા પ્રાચીન અર્વાચીન મહાપુરૂષો [illegible] સાધુઓએ, અને વિદ્વાનોએ ઇશ્વર ભક્તિ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય અને વેદાન્ત વિષયપર રચેલાં સર્વોત્કૃષ્ટ પદ-કીર્તનોને [illegible] પૃષ્ઠ [illegible] મૂલ્ય રૂપિયો ૧। પોસ્ટેજ ૨ આના.

[illegible] [illegible] કવિઓ [illegible], અકબર બાદશાહની [illegible] તેમજ કવિ ગદાધર, [illegible], [illegible], તાનસેન, વીક્રમ, તુલસી, પદ્માકર, [illegible] [illegible], [illegible], બ્રહ્માનંદ, [illegible], [illegible] દેવીદાસ, વગેરે ઘણા અને [illegible] [illegible] કવિતાઓ ઇત્યાદિ છે. [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] કરાવેલ છે. [illegible] ગુજરાતી [illegible] [illegible] કર્યું છે. મૂલ્ય [illegible]

[illegible] [illegible] અનિદ્રિય [illegible] [illegible]

रामगीताभाषांतर—શ્રીકાશીક્ષેત્રમાં વરણાપાર શ્રી ગંગા-
ના તીરપર નિવાસ કરનારાં પરમ કૃપાળુ, પૂજ્યપાદ, મહા-
સાવી, આર્યાભૂષણ, શ્રીમતી શ્રી માઈ મહાશયાએ મૂળ
રૂમુખી ભાષામાંથી આ ગ્રન્થની ટીકા, હિંદી ભાષામાં લખી
. શ્રીશરીર હોઈ, કેવી નિર્મળ તથા ઉંચા દરજ્જાની વિદ્યા
રાવે છે તથા પરોપકારના કામમાં કેવી ઉદાર બુદ્ધિ છે,
નું નિદર્શન આજકાલની ઉચ્છૃંખલ વિદુષી બાઈઓને કરાવી.
થા તેનો દાખલો આપવા માટે આ ગ્રન્થની ટીકા પ્રસિદ્ધિમાં
કી છે. એટલુંજ નહિ, પણ વિશેષ શિક્ષા આપવામાટે આ
હાશયાનું ચિત્રસાથે સંક્ષિપ્ત જીવનચરિત્ર પણ આપવામાં
ાવ્યું છે. કિં. રૂ. ।।। પોસ્ટેજ ૧ આનો.

संतोषशतक અથવા સંતોષતરુ—એમાં સંતોષ સદ્ગુણના
.હિમાવિષે મૂળ હિંદી ૧૧૫ દોહા ભાષાંતર સાથે આપવામાં
ાવ્યા છે; તેમજ તેના આદિ ભાગમાં સ્વાશ્રયી અને સંતોષી
ાદ્ગૃહસ્થ મુન્ન ઇશ્વરલાલ અમૃતલાલ દવેનું સચિત્ર વૃત્તાંત પણ
ાખલ કર્યું છે. મૂલ્ય માત્ર રૂ. ০। પોસ્ટેજ અરધો આનો.

छोटमकाव्य—વડોદરાનિવાસી વૈષ્ણવ કવિશ્રી છોટમ મુન-
ીએ રચેલાં ધોળ, પદ, કીર્તન, ભજન, ગરબા, કે જે દેવ-મં
દિરમાં ગવાય છે અને સુરત, વડોદરા વગેરેની પ્રસિદ્ધ ગા-
ારીઓ નવરાત્રી વગેરે પ્રસંગે મ્હોટા ઉલ્લાસથી ગાય છે,
ોનો સંગ્રહ. મૂલ્ય માત્ર રૂ. ।। પોસ્ટેજ એક આનો.

परमपदवोधिनी—યોગ, સાંખ્ય, ભક્તિ અને વેદાંતની
મજ આપનાર આ અતિ ઉત્તમ પુસ્તક છે. હઠયોગ અને
ાજયોગની પુષ્કળ પ્રક્રિયાઓ એમા સ્ફુટ કરી વર્ણવી છે
તથા મહાત્મા શ્રી નથુરામ શર્માની ભદ્રામુદ્રાયુક્ત સુંદર છબિ
પણ આપી છે. કિં. રૂ. ૧। પોસ્ટેજ એક આનો.

सुभाषितलहरी—વેદાંતભટ્ટાચાર્ય, ભારતમાર્તંડ, અનેકાવ
ાની શિઘ્ર કવિરાજ શ્રી ગટ્ટુલાલજીકૃત વિવિધ વિષયપર

કવિતાઓ, સમશ્લોકી ભગવદ્‌ગીતા તથા કર્ત્તાનાં ચિત્ર-ચરિત્ર ઇત્યાદિ સાથે. મૂલ્ય રૂ. ૧ પોસ્ટેજ ૧ આનો.

चोराशी आसन—હઠયોગની પ્રક્રિયાઓ સાથે. ચોરાસી સુંદર ચિત્રો. મૂલ્ય રૂ. ૧ પોસ્ટેજ એક આનો.

श्रीसदाशिवविवाह—જુનાગઢના પ્રતિષ્ઠિત દીવાન શ્રી રણછોડજી અમરજી કૃત હિંદી કવિતામાં. જુદા જુદા પ્રસંગનાં ચમત્કારિક ચિત્રો સાથે. કિ રૂ. ।।। પોસ્ટેજ એક આનો.

आर्याचरित्रावली—આ એક પ્રાચીન સ્ત્રીઓનાં અપ્રસિદ્ધ અને અનુકરણીય વૃત્તાંતોનો અપૂર્વ સંગ્રહ છે. કિં. રૂ. ॥

वासवदत्ता—સુબંધુ કવિકૃત સંસ્કૃત આખ્યાયિકાનું ભાષાન્તર. આ એક પ્રેમસંબંધી ચમત્કારિક વાર્તા છે. કિં.માત્ર૩ આના.

मारुढोलानाटक—એક પ્રસિદ્ધ વાર્તા નાટકરૂપે. મૂલ્ય ।≈

ઇત્યાદિ ગ્રન્થો મુંબઇમાં નીચે લખેલે સ્થળે મ્હારી પાસેથી, કાળકાદેવીને રસ્તે પંડિત જ્યેષ્ઠારામ મુકુંદજીના પુસ્તકાલયમાંથી તેમજ એન. એમ. કુંપનીમાંથી મળશે.

કાશી—અંટા ગુડગુડ, પશુપતેશ્વર મહોલા, પંડિતશ્રી વિઠ્ઠલશર્મા પાસેથી.

કહાનજી ધર્મસિંહ.
ગાયવાડી, (ગ્રૅવેલ) ડોસા લાલજીના માળામાં મુંબઈ.

ધી સરસ્વતી પ્રિંટિંગ પ્રેસ, કરન્યાક રોડ મુંબઈ